बालाबख्श राजपूत चारणपुस्तकमाला—४

बाँकीदास-ग्रंथावली

दूसरा भाग

संकलनकर्ता और संपादक

रामनारायण दूगड़

कविया मुरारिदान अयाचक (जयपुरवाले)

महताबचंद्र खारैड विशारद (जयपुरवाले)

नागरी-प्रचारिणी सभा की ओर से

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९३१ मूल्य

ग्रंथ-सूची

निवेदन

जयपुर राज्य के अंतर्गत हणोतिया ग्राम के रहनेवाले बारहट-नृसिंहदासजी के पुत्र बारहट बालाबख्शजी की बहुत दिनों से इच्छा थी कि राजपूतों और चारणों की रची हुई ऐतिहासिक और (डिंगल तथा पिंगल) कविता की पुस्तकें प्रकाशित की जायँ जिसमें हिंदी साहित्य के भांडार की पूर्ति हो और ये ग्रंथ सदा के लिये रक्षित हो जायँ। इस इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने नवंबर सन् १९२२ में ५०००) रु० काशी नागरीप्रचारिणी सभा को दिए और सन् १९२३ में २०००) रु० और दिए। इन ७०००) रु० से ३॥) वार्षिक सूद के १२०००) के अंकित मूल्य के गवर्मेंट प्रामिसरी नोट खरीद लिए गए हैं। इनकी वार्षिक आय ४२०) रु० होगी। बारहट बालाबख्शजी ने यह निश्चय किया है कि इस आय से तथा साधारण व्यय के अनंतर पुस्तकों की बिक्री से जो आय हो अथवा जो कुछ सहायतार्थ और कहीं से मिले उससे "बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला" नाम की एक ग्रंथावली प्रकाशित की जाय जिसमें पहले राजपूतों और चारणों के रचित प्राचीन ऐतिहासिक तथा काव्य-ग्रंथ प्रकाशित किए जायँ और उनके छप जाने अथवा अभाव में किसी जातीय संप्रदाय के किसी व्यक्ति के

लिखे ऐसे प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ, ख्यात आदि छापे जायँ जिनका संबंध राजपूतों अथवा चारणों से हो। बारहट बालाबख्शजी का दानपत्र काशी नागरीप्रचारिणी सभा के तीसवें वार्षिक विवरण में अविकल प्रकाशित कर दिया गया है। उसकी धाराओं के अनुकूल काशी नागरीप्रचारिणी सभा इस पुस्तकमाला को प्रकाशित करती है।

भूमिका

'डिंगल' भाषा के महाकवि कविराजा श्रीबाँकीदासजी के ग्रंथों में से सात ग्रंथ, कठिन शब्दार्थ और अलंकार-नाम-निरूपण सहित, पंडित रामकरणजी आसोपा, विद्यारत्न द्वारा संपादित होकर, इससे पूर्व प्रथम भाग में प्रकाशित हो चुके हैं। उनके नाम ये हैं—१ सूरछतीसी, २ सिंहछतीसी, ३ वीरविनोद, ४ धवलपचीसी, ५ दातारबावनी, ६ नीतिमंजरी, ७ सुपहछत्तीसी। जैसा कि पंडित रामकरणजी ने प्रगट किया है, उपरोक्त सातों ग्रंथ कवि के पौत्र, प्रसिद्ध आलंकारिक पंडित, 'जसवंतजसोभूषण' आदि ग्रंथों के रचयिता मुरारिदानजी की टीका सहित जोधपुर के "मार्तंड" मासिक पत्र में छप चुके थे, सो ही हैं। हमने "मार्तंड" के उस विभाग को बारहट बालाबख्शजी की पुस्तक में देखा था, तभी से मालूम है और कश्मीर के कविराजा मुरारिदानजी से भी यही बात ज्ञात हुई थी। जोधपुरीय कविराजा मुरारिदानजी ने अपने दादा के ग्रंथों पर टीका की है सो ही

मार्तंड में छपी है*। उन्होंने उक्त टीका हमें दिखलाई भी थी। इन सातों के अतिरिक्त एक 'वचन-विवेक-पच्चोसी' नाम का ग्रंथ उक्त टीका सहित हमने मार्तंड पत्र में मुद्रित और भी देखा जो यथासमय तीसरे भाग में प्रकाशित हो सकेगा। इस समय १० ग्रंथ, पंडित रामनारायणजी दूगड़ की टीका सहित, प्रधान मंत्रीजी "नागरीप्रचारिणी सभा" काशी से हमारे पास संशोधन के लिये आए। सौभाग्य से बारहट श्रीबालाबख्शजी (इस ग्रंथमाला के संस्थापक) कविया मुरारिदानजी अयाचक की हवेली पर (साँडियों के टीबे) आए हुए थे। हमने यह उचित समझा कि यह ग्रंथ उक्त दोनों डिंगल के विद्वानों से संशोधित हो जाय। ऐसा ही हुआ। दोनों ने कृपा करके आवश्यक संशोधन कर दिया। संशोधन के यह नोट पृथक् लिखे हुए थे, अतः उक्त प्रधान मंत्रीजी की अनुमति लेकर हमने बाबू महताबचंद्रजी खारैड, विशारद को इस कार्य में भाग लेने के लिये कहा। उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। श्रीयुत खारैडजी डिंगल भाषा में अध्यवसाय करते हैं और इसके प्रेमी हैं। हमने भी उनके साथ प्रयास किया और टीका में उक्त दोनों चारण कवियों के नोट

---

* पंडित रामकरणजी ता० २-२-२६ को जयपुर पधारे तब उनसे ज्ञात हुआ कि यह टीका उन्हीं ने कविराजा मुरारिदानजी की सलाह से की थी। परंतु अलंकारों को उन्होंने (अर्थात् कविराजाजी ने) लगाया था।

आदि से संस्कार तथा खारैडजी के निजी अनुभव के अनुसार भी सुधार हो गया। इससे पूर्व उक्त कविया मुरारिदानजी ने निम्नलिखित १३ ग्रंथों पर टीका कर ली थी—१ जहेल जस जडाव, २ भुरजाल भूषण, ३ मोहमर्दन, ४ गंगालहरी, ५ मावडिया मिजाज, ६ वैसक वार्ता, ७ चुगल मुख चपेटिका, ८ कुकवि बत्तोसी, ९ कृपण दर्पण, १० कायर बावनी, ११ वैस-वार्ता, १२ विदुर बत्तोसी, १३ झमाल नख सिख। परंतु उक्त नोटों के करने के समय मुरारिदानजी के पास अपनी यह टीका नहीं थी इससे वे उन नोटों में अपनी टीका से काम नहीं ले सके, क्योंकि वह टीका हमारे बस्ते में बँधी रह गई और उन्होंने माँगी नहीं। अतः उपरोक्त नोट पूर्वकृत टीका से एक प्रकार स्वतंत्र समझे जाने चाहिएँ और ये प्रधानतः बारहट बालाबख्शजी की सम्मति के अनुसार ही हुए हैं। परंतु अब हमने उनके याद करने पर मुरारिदानजीवाली पूर्व कृत टीका को उनके सिपुर्द कर दिया तो उन्होंने चतुराई के साथ उन नोटों और इस टीका से काम लिया। जहाँ तक हमको मालूम है और हमने पंडित रामनारायणजी दूगड़ की टीका को देखा है, यह ज्ञात हुआ कि उक्त पंडितजी ने बहुत परिश्रम किया है। इस टीका से उनकी डिंगल भाषा की जानकारी अच्छी तरह झलक रही है। यदि उन्होंने इतना परिश्रम न किया होता तो बाँकी-दासजी के इन ग्रंथों के अनेक स्थल स्पष्ट न हुए होते। तथापि यह कहना पड़ता है कि उक्त उभय चारण विद्वानों के नोटों

श्रौर मुरारिदानजी की पूर्व की टीका से खारैडजी ने ग्रंथकार के अभिप्रायों पर विचार किया तो दूगड़जी की टीका में कई स्थल चिंत्य मिले जिनका यथास्थान संशोधन वा घटाव, बढ़ाव करना पड़ा।

इतना हो जाने पर भी हम कह सकते हैं कि बाँकीदासजी के कई दोहों में कई जगह उनका असली अभिप्राय ग्रहण करने में नहीं आ सका है। सच तो यह है कि ऐसे मार्मिक काम के लिये उनके पौत्र स्व० कविराजा मुरारिदानजी जैसा विद्वान् चाहिए था। उक्त आलंकारिक कविराजाजी की टीका (प्रथम भाग की) प्रायः निर्दोष है क्योंकि वे अपने दादा की कविता के चोज को अधिक समझते थे, जिसको कि उन्होंने बचपन से ही सीखा था, श्रौर जो उनके घर की विद्या थी। परंतु यह प्रस्तुत टीकाकार, चाहे इनमें चारण भी हैं, उक्त स्व० क० रा० मुरारिदानजी की मर्मज्ञता के सत्व या कक्षा को पहुँचने का दावा नहीं रखते हैं, तब भी इन चारों की सम्मिलित टीका किसी भावी उत्तम टीका की पथदर्शिका होने का दावा रख सकती है। कविया मुरारिदानजी अयाचक ने अपनी टीका में, दो एक अर्थों में, भावार्थ लिखे हैं, उनको देखने से तथा डिंगल के अर्थ के स्पष्टीकरण की आवश्यकता पर दृष्टि देने से हमको यह बात भली मालूम हुई कि यदि स्व० क० रा० मुरारिदानजी श्रौर प्रस्तुत टीकाकार-चतुष्टय भी भावार्थ को सर्वत्र साथ लगाते तो पाठकों का हित होता, कठिन शब्दों

के अर्थ के बाद भावार्थ और विशेषार्थ होने से अर्थ-ज्ञान में सुगमता अधिक रहती, परंतु यह थोड़े काल में संभव नहीं था, जैसा कि हमने खारैडजी से जाना कि इस काम के लिये कम से कम चार महीने चाहिए।

यहाँ तक कुछ टीका की भी बात हुई। बाँकीदासजी के २४ ग्रंथों में से १७ ग्रंथ इन दोनों भागों में आए। अब तीसरे भाग के लिये नीचे लिखे ७ ग्रंथ रहते हैं। अर्थात्—१ वचन-विवेक-पच्चीसी, २ सिधरावछतीसी, ३ संतोषबावनी, ४ सुजसछतीसी, ५ जेहल जसजड़ाव, ६ कायरबावनी, ७ झमाल (नखसिख)। इन सात के अतिरिक्त दो ग्रंथों के नाम और जाने गए हैं—१ चमत्कारचंद्रिका, २ श्री दरबार रा कवित्त; परंतु ये ग्रंथ हमारे देखने में नहीं आए। यदि तीसरे भाग के छपने के पहले मिल गए तो उस भाग में वे सम्मिलित हो जायँगे। पंडित रामकरणजी आसोपा का कहना है कि बाँकीदासजी के २७ ग्रंथ सुने जाते हैं। परंतु उनको उन तीन ग्रंथों के नाम ज्ञात नहीं हैं, न वे उनके देखने में आए हैं। संभव है कि कभी कहीं वे अवशिष्ट तीन ग्रंथ मिल भी जाँय। तभी २७ का होना सही होगा।

अब ग्रंथ-प्राप्ति की सूचना लिखते हैं—

संख्या	ग्रंथ नाम	ग्रंथ-प्राप्ति का पता		विशेष
१	सूरछत्तीसी	मार्तंड,क०रा० मेहरदानजी		प्रथम के आठों ग्रंथ टीका सहित
२	सीहछत्तीसी	,,	मु. दा.जी कश्मीरवाले	"भारतमार्तंड" में छपे हुए मिले तथा
३	वीरविनोद	,,	,,	इनकी और प्रतियाँ रा० ब० ओझाजी
४	धवलपचीसी	,,	,,	आदि से भी प्राप्त हुईं। छपा हुआ
५	दातारबावनी	,,	,,	मार्तंड, जिसमें ८ ग्रंथ थे वह, क० रा०
६	नीतिमंजरी	,,	ओझाजी	मुरारिदानजी कश्मीरवालों और बार-
७	सुपहछत्तीसी	,,	मु. दा. जी कश्मीरवाले	हट बालाबख्शजी हुणूँतियावालों के
८	वचन-विवेक-पचीसी	,,	,,	पास देखे गए जो उनके पास मौजूद
९	मोहमर्दन	ओझाजी, मुरारिदानजी		हैं। सं० ६, और सं० ९ से १५ तक, १७
			कश्मीरवाले	से १९ तक, २१ से २३ तक की प्राप्ति
१०	गंगालहरी	,, (अधूरी)	,, (पूर्ण)	म. म. रा० ब० ओझा गौरीशंकरजी से
११	मावड़िया-मिजाज	,,	,,	हुई। पं० रामनारायणजी दूगड़ के पत्र

१२	वैसकवार्ता	,,	,,
१३	चुगलमुखचपेटिका	,,	,,
१४	कुकविबतीसी	,,	,,
१५	कृपणदर्पण	,,	,,
१६	कायरबावनी	मुरारिदानजी	कश्मीरवाले
१७	वैसवार्ता	ओझाजी, मुरारिदानजी	कश्मीरवाले
१८	विदुरबतीसी	,,	,,
१९	झमाल	,,	लाला श्रीनारायणजी
२०	जेहल जस जड़ाव	क० रा० मेहरदानजी	
२१	सिधराव छतीसी		ओझाजी
२२	संतोषबावनी	,,	,,
२३	भुरजालभूषण	ओझाजी क.रा.मेहरदानजी	
२४	सुजसछतीसी	,,	,,

से ज्ञात हुआ कि म० म० रा० ब० ओझा गौरीशंकरजी के पास बाँकीदासजी की १५ हस्तलिखित पुस्तकें खेमपुर ठाकुर करणीदानजी चारण राज्य उदयपुर से आई। इन्हीं पुस्तकों की उन्हीं से पं० रामनारायणजी दूगड़ ने नकल ली और ये ही १५ पुस्तकें रा० ब० ओझाजी की कृपा से हमें प्राप्त हुईं। क० रा० मुरारिदानजी जोधपुरवालों के पौत्र क० रा० मेहरदानजी से दो हस्तलिखित जिल्दें मिलीं। उनमें बाँकीदासजी के ३ ग्रंथ मिले १, २०, २३।

लाला श्रीनारायणजी जयपुरवालों से—जो डिंगल के ज्ञाता हैं—एक ग्रंथ मिला सं० १९।

(१) वैसकवार्ता

इस ग्रंथ में कवि ने वेश्या और वेश्याप्रसंगी पुरुषों और वेश्या-प्रसंग से हानि, सतीत्व का अवांतर रूप और सतीत्व-रक्षा प्रतिलोम साधन, बड़े ओजस्वी, मर्मभेदी, नीतिप्रदर्शक, सारगर्भित, लौकिक अनुभव-सिद्ध वाक्यों में—ललित चोज-भरी व्यंग्य और श्लेष-गर्भित कविता में—वर्णन किया है; वेश्यालोलुप पुरुषों का अच्छा खाका खींचा है और उनका पेट भर सच्चा उपहास किया है। अपनी सती साध्वी पत्नियों से नाता और प्रेम तोड़कर वेश्याओं, पातरों और गोत्रियों से प्रेम बाँधनेवाले, अपने धन, धर्म, लोकलज्जा, पुरुषार्थ और संसार यात्रा भ्रष्ट करनेवाले, कामांध, मदोन्मत्त धनियों, सरदारों, अमीरों, राजाओं और जेंटिलमैनों के लिये बाँकीदासजी का यह सुंदर लघु काव्य एक रामबाण नुसखा है और यह मार्ग शत्रु के वध के लिये जहर बुझा नावक का तीर है। जिन भूले-भटकों के हृदय में कुछ भी मनुष्यत्व का अंश बच गया हो, वे इस ग्रंथ-रत्न को एक दफे भी पढ़ लेंगे वा सुन लेंगे तो वे इसके प्रभाव के प्रसाद से अवश्य लाभ उठावेंगे। बाँकीदासजी की इस बाँकी चाबुक की फटकार से और उपदेश की ताड़ना की मार से हजार जार होंगे तो भी जार जार रोकर हजार फायदे उठाएँगे। वेश्याओं के प्रभाव से जिन वीर वंशियों ने अपने पुरुषार्थ को हानि पहुँचाई है उनके मनों पर क्या ये दोहे कम प्रभाव डालेंगे?—

"सावळ अणियां सांकड़ी, चोरंग वणियां चेत।
भणियां सूं भेलप नहीं, हुरकणियां सूं हेत॥"
"हंसियो जग आसक हुए, वसियो खोवण वीत।
रसियो नागी रांड सूं, फसियो होण फजीत"॥
"करहे असवारी कियां, सोना हरणी संग।
उण ढोला ज्यूं आपरो, ढोलो माने ढंग॥"
"देखे फिरती दूतियां, सूतो धूंणे सीस।
फंसियो कामण फंद में, रसियो करै न रीस।"
"सोवे अलगी साय धण, सुपने ही नँह संग।
गनका सूं राखे गुसट, रसिया तोनूं रंग॥"

(२) मावड़िया-मिजाज

इस ग्रंथ में कवि ने उन पुरुषों का चित्र खींचा है जो अपनी माता के पास रावले में या जनाने में अधिक रहकर स्त्री स्वभाववाले हो गए हैं और पुरुषसिंह स्वभाव की मात्रा उनमें हीनता को प्राप्त हो गई है। ऐसे पुरुषों की कवि ने मर्मभेदी वाक्य-बाणों के प्रहार से हँसी उड़ाई है। जो माता या किसी स्त्री को अवलंबन मानकर स्वावलंबन को छोड़ चुके हैं, ऐसे पुरुषों को "मावड़िया" नाम की पदवी दी है। ऐसे स्त्री पुरुषों को उपदेश करने को, उत्तेजना देने और उनके निज पुरुषार्थ को याद दिलाने और उस पर लाने को कवि ने कोई बात उठा न रखी। ऐसे पुरुष इसको पढ़कर अवश्य लज्जित होंगे और अपने जनानेपन को छोड़े बिना न रहेंगे। वह

कौन सा मंद मन होगा जिस पर बाँकीदासजी के ऐसे दोहों का प्रचंड प्रभाव न पड़े। यथा—

"प्रगटे वांम प्रवीण रे, नर निदाढियो नाम।
नर मावड़िया नाम त्यूं, विना पयोधर वाम" ॥
"सूके जेठ मझार सर, तीखा तावडियांह।
सुके इम सिंधू सुणे, मुंहड़ा मावडियांह" ॥
"गरबे फोड़े कुंभगज, घणबल घावड़ियांह।
पापड़ फोड़ पोमावही, मन में मावड़ियांह ॥"
"होस उड़ै फाटै हियो, पड़ै तमाळी आय।
देखे जुध तसवीर द्रग, मावड़िया मुरझाय ॥"
"घूघू ज्यूं घुसियो रहै, मावड़ियो घर मांह।
ऊठै बाहर आवही, तारा हंदी छांह ॥"
"मावडिया तन मैणरा, मिटै कदै नहँ मांद।
मावड़ियां दूणा मरद, चूलां हुंदा चांद ॥"

आगे कवि ने माता की प्रशंसा में भी अच्छे दोहे कहे हैं, यथा—

"नहं तीरथ जणणीं समो, जणणीं समो न देव।
इण कारण कीजे अवस, सुभ जणणीरी सेव ॥"

(३) कृपणदर्पण

इस ग्रंथ में कवि ने धनतृष्णा के कारण जो रात-दिन लंका के स्वर्ण का इजारा लेने का स्वप्न देखते हैं, जो नित्य याचकों का बुरा विचारा करते हैं, जो कौड़ी मात्र मिलने की

आशा से नाटक करने को तैयार हो जाते हैं, जो कंजूसी के कारण अच्छा खाते पीते तक नहीं, जो याचकों के धन को भी छीनने तक में नहीं चूकते, जिनको 'देना' शब्द मात्र बुरा लगता है, जो अतिथि को देखकर अपना दरवाजा बंद कर लेते हैं—ऐसे कृपण अर्थात् कंजूस मनुष्यों के निज मुख देखने को अद्भुत दर्पण निर्माण किया है। जैसा कि स्वयं कवि ने ग्रंथ के अंत में कहा है—

"क्रपणांनू कृपणां तणों, रूप दिखावण काज।
ग्रंथ क्रपण दर्पण कियो, रीझांवण कविराज" ॥

वस्तुतः अनुभवी कविराज ने उन धन-पिशाचों को उस महा अपराध से मुक्त करने के लिये यह मानों दंडसंग्रह बनाया है; क्योंकि यह नराधम, नारायण की अर्द्धांगिनी लक्ष्मी को निर-पराध कैद करते हैं शायद भगवान् लक्ष्मी से कुछ नाराज होकर अपनी कोमल कमला को इन कसाइयों के वश में डाल देते हैं। लक्ष्मी भी कसाइयों के कैदखाने में पड़कर कितनी दुखी रहती होगी उसकी जान अजाब में रहती होगी। अकल के अंधे कंजूस-राम परमेश्वर की दी हुई न्यामत (अर्थात् धन) का कैसा दुरुपयोग करते हैं। बुद्धिमानों ने धन की तीन गतियाँ कही हैं। यथा सोरठा—

"दान भोग अरु नाश, है यह धन की तीन गति।
वह धन होय विनाश, जो देवे नहिं खाय नहिं" ॥

सो कृपण महाराज के धन की तीसरी गति अर्थात् नाश कही गई है। वह नाश क्या है? लक्ष्मी जेलखाना तुड़ाकर भागती है क्योंकि खाना और खर्चना तो कंजूस के लिये कुफ्र है। इन दैालत के काफिरों के लिये, जो मरुस्थल में अधिक पैदा होते हैं, उस मरुस्थल के महाकवि ने यह काव्य क्या बनाया है, कुफारा बनाया है। और इसके जरिए से इनमें जहाद लाजिम आता है। देखिए हमारे कवि ने क्या अच्छा कहा है!—

"कृपण कहै ब्रह्मा किया, मांगण बड़ो बलाय।
विसव वसावण वासतें, फाटक दिया बणाय॥"

"रयणायर पुत्री रमा, डाटी कर दुरभाव।
रयणायर ते डूबवै, सूंमा केरी नाव॥"

"सूंम नाम लेणो सुतो, मूंग पकावण बेर।
अन दिन उणरी आथ जूं, डाटो भाटो देर॥"

"दियो सबद सुणियों दुसह, लागो तन मन लाय।
सूंब दियो न करै सदन, परब दियाली पाय॥"

"नार नपुंसकरा घरां, अदतांरे घर अत्थ।
भागहीण भोगे नहीं, देखे परसै हत्थ॥"

हिंदी-साहित्य में सूम और अदाता की प्रशंसा में अनेक कवियों ने, बहुत चोजभरे छंदों में, हास्यरस को कूट कूटकर भर दिया है सो काव्यप्रेमी पुरुषों से अविदित नहीं है। घाघ, वेणी, घासीराम, वंशगोपाल, माधव, ग्वाल आदि सैकड़ों कवियों के छंद हैं। यथा—(१) सूम कहै संपत सों बैठ गीत

गाव री, (२) जाग न.परै तो मैं रुपया देइ डारौ तो, (३) खान-दान पानदान कहिबे को रहे हैं, (४) नगद रुपैया भइया कापै दियो जात है, (५) बाजे बाजे लोगन को देबे की कसम है, (६) द्वारे चोबदार कहे साहब जनाने हैं, (७) डीलदार गुंबज अवाजदार फिस्स, (८) दाऊजू तो आठूं जाम देत ही रहत हैं, (९) दान में देत न एक अधेला, (१०) चौंक परयो पितुलोक में बाचसो आपके देख सराध के पेरे, (११) फस्त खुलाय तुला चढ़ि बैठो, (१२) देइबे के डर ते वे दादा ना कहत हैं, (१३) दिन द्वै की बातो हेत रुई रह गई है, इत्यादि। सूम सर-दारों की बड़ाई में कवियों ने अपने हृदय के गुबार निकाले हैं सो रसिक इनके पूरे कवित्त काव्य ग्रंथों में देखें।

(४) मोहमर्दन

इस ग्रंथ में शांत रस की प्रधानता है। जीव का मोह, अर्थात् अज्ञान वा मूर्खता को मिटाने के लिये ३९ दोहों में बाँकीदास-जी ने संसार की अनित्यता असारता और मिथ्यात्व को दरसा-कर ईश्वर-स्मरण, शुभ कर्म, भूत दया और सच्चे सुख के मार्ग की खोज को बड़ी उत्तमता से दिखलाया है। प्रत्येक दोहे में एक या एक से अधिक उपदेश, चितावनी, उत्तेजना और शिक्षा निज अनुभव को लिए हुए भर दी है। नश्वर जीवन के प्रतिलोम ज्ञान को इन दोहों में कैसा अच्छा कहा है—

"पग पग जम डाका पड़ै, बांका! धार विवेक।
हुतभुक विच जल लाख है, उडग्गो है दिन एक॥"

"जग में बांछे जीवणो, सब प्राणी समुदाय।
हट कर नर ज्याँनूं हरे, जुलम कह्यो नहि जाय॥"
"ताजदार बैठो तखत, रज में लौटे रंक।
गिणे दुनांनूं हेकगत, निरदय काल निसंक॥"
"सर सूके नह संचरे, बांका पही बिहंग।
किणरे चाले संग कुण, सब स्वारथ रे संग॥"
"आप नांम इण ऊपरां, रसना राघव नाम।
रूड़ो विधसूं राखियो, पुरषां जकां प्रणाम॥"
अंत के दोहे में कैसा निचोड़ का उपदेश कहा है —
"जीव दया पाली जकां, उजवाली निज आव।
बनमालो कीधो बलू, पड़ो सुरालो पाव॥"

(५) चुगलमुखचपेटिका

ग्रंथ का विषय नाम से ही प्रकट है। इस ग्रंथ में उन कापुरुषों, पापात्माओं, परहित-विनाशक दुष्टों और चुगली के पेशेवाले पाजियों का फोटो खींच दिया है जो कि सरदारों, अमीरों, राजाओं, अमात्यों आदि के पास स्वार्थ या बिना ही स्वार्थ के दूसरों के सच्चे अथवा झूठे गुण-अवगुण को कान में भरकर उनकी ओर से मन फिरा देते हैं, सच्चे को झूठा और झूठे को सच्चा कर देते हैं। बाँकीदासजी ने यह कितना सच्चा कहा है—

"चुगली कानां सुणणसूं, मैलो व्हे गुरु मंत॥"
"सने सने सिरदाररी, चुगल बिगाड़े चाल॥"

"ठग कामेती ठोठ गुर, चुगल न कीजै सेण ।
चोर न कीजे पाहरू, ब्रहसपतिरा बैंण ॥"
"लोक चुगल काने लगे, घू घू बोल्यो गेह ।"
"नरक समो दुख थल नहीं, बाडव समो न ताप ॥
लोभ समो ओगण नहीं, चुगली समो न पाप ।"
चुगल का स्वरूप कैसा वर्णन किया है—
"सनमुख अत मीठा सबद, मेह समैंरो मोर ।
उगलै विष परपूठ ओ, चुगल दई रो चोर ॥
पर अकाज करबो करै, सदा नयण कर सैन ।
चुगल जठे नँह चानणो, चुगल जठे नँह चैन ॥"
चुगलों के संबंध में कैसी अच्छी सलाह देते हैं—
"जो सुख चाहो जगत में, लच्छ धरम सुखलोय ।
चित्र मंडाणां चुगळरो, मत देखो मुख कोय" ॥

इन चुगलों से संसार का कितना अनिष्ट होता है, मनुष्यों का कितना अहित हो जाता है और समर्थों के मनों को बिगाड़कर कितना हेर फेर करके ये कितना विप्लव मचाते हैं, इन बातों से मानों तंग आकर कवि बाँकीदासजी चुगलों को यह शाप देते हैं—

"पनग लड़ो कीड़ा पड़ो, सड़ो झड़ो दुख संग ।
जग चुगलांरी जीभड़ी, वायस भखो विहंग ॥"

और चलते ही अपनी इष्ट देवी भगवती को अर्ज करते हैं कि—

"महिषासुर ज्यूं मारजे, चुगल ग्रसूलां चाड ॥"

शास्त्रकारों ने भी बाँकीदासजी की सारी उक्तियों का समर्थन करते हुए एक ही वचन में सूत्र रूप से सिद्धांत-निरूपण किया है—

"पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः ॥"

अर्थात् यदि चुगली खाना सीख लिया है तो और किसी पाप करने की आवश्यकता नहीं; चुगली पर सब पापों का खातमा है। कलश चढ़ गया, एलएल० डी० की डिगरी हासिल हो गई।

(६) वैसवार्ता

इस ग्रंथ में कवि बाँकीदासजी ने वैश्यों अर्थात् वणिकों पर अपनी कविता की सुधा का वर्षण किया है। मंगलाचरण के पढ़ने से तो नए पाठक को यही ज्ञात होता है कि कवि कोई जैन धर्म का ग्रंथ लिख रहे हैं परन्तु तीसरा दोहा पढ़ते ही तुरंत यह खयाल होता है कि जैनियों वाणियों पर कटाक्ष है। परंतु आगे बहुत सा भाग पढ़ लेने पर यह विचार भी जाता रहता है। आम तौर पर बणियों की खबर ली गई है। सारे ग्रंथ के पढ़ लेने से प्रायः नीचे लिखी बातें टपकती हैं।

१—कवि को ऐसे व्यापारियों से ज्यादा काम पड़ गया है जो लालची, दगाबाज, धोकेबाज, धर्म कर्म का कुछ खयाल न रखनेवाले, धरोहर दाबनेवाले, देन लेन, व्यापार में

चालाकी करनेवाले, लेकर फिर न देनेवाले, हलके बाट पारे-भरी पोली डाँड़ी और पलड़ों में मोम लगानेवाले, घट-तौले, घणमोले आदि। इनके प्रतिकूल उत्तम गुणों के रखने-वाले सदाचारी, धर्मनिष्ठ, इक सखुने, पूरे तोलनेवाले जबान के पाबंद आदि से कम काम पड़ा है क्योंकि ग्रंथ में ऐसे लोगों का बहुत कम वर्णन है।

२—ग्रंथकर्त्ता ने महाजनों का हद से ज्यादा मजाक उड़ाया है। माना कि संसार में इस किस्म के भी महाजन मिलते हैं जैसा कि कवि ने वर्णन किया है परंतु क्या संसार में सब ऐसे ही ऐसे हैं। जिस तरह से बणियों की बुराई का ग्रंथ लिखा है उसी तरह अगर इनकी बड़ाई का भी लिखते तो दोनों ओर का अनुभव मालूम हो जाता, इसलिये इसे काणा अनुभव कहेंगे। इस हिसाब से यह काव्य वह काव्य है जिसे फारसीवाले 'हजो' अर्थात् निंदा कहते हैं। इसके साथ यह भी कहेंगे कि इसमें सभी "हज्वे मलीह" नहीं हैं। 'हज्वे मलीह' मीठी निंदा को कहते हैं जिसका वर्णन हिंदी-वाले 'व्याजस्तुति' शब्द से करते हैं क्योंकि इसमें "हज्वे करीह" भी मिली हुई है। "हज्वे करीह" परुष (कठोर) निंदा को कहते हैं।

३—संभवत: कवि का अभिप्राय पूर्वोल्लिखित संकीर्ण विचार के और अप्रतिष्ठित वणिकों से सावधान रहने के लिये कुछ अपने अनुभव काव्य मिस संसार में छोड़ने का प्रतीत

होता है। नहीं तो यह दूषणावली ही दूषणावली के आभूषण न बनाते, गुणावली को भी काम में लाते।

४—इस ग्रंथ को समग्र पढ़ लेने से यह बात भी झलकती है कि बाँकीदासजी को किसी या किन्हीं बणियों से हानि पहुँची है या उनकी किसी बणिये से बिगड़ गई है। जैसा कि इन दोहों से टपकता है—

"जल छाणे, दिन जीम ही, नीली बस्त न खाय।
दोसत हूं देतां दगो, कसर न राखे काय॥"
"गुरु सूंही गुदरे नहीं. वणिक बैंत, वणियांह।"
"पढ़ै मंत्र मुख दे पलो, कोमल माल करग्ग।
पंथ बुहारे नरकरा, साधन करै सरग्ग॥"
"वणियाणी जाया तणो, भरम न गमणो भूल।
नटियो कोडी ही नदे, मरणो करै कबूल॥"

(७) कुकविबत्तीसी

कुकविबत्तीसी में कविराजा ने उन कविता-कामिनी रूप के बिगाड़नेवाले और पेट-पंथी महाकवियों का वर्णन किया है जो पिंगल को तो अपना परम शत्रु समझकर पहले ही गोली मार देते हैं, काव्य के नव रसों को हेय समझकर षट्रसों की ही चिंता करते हैं, जो "कहीं का पत्थर कहीं का रोड़ा भानमती ने कुनबा जोड़ा" कहावत को चरितार्थ करते हैं, जो अपनी नादिरशाही द्वारा बेचारी कविता की मिट्टी पलीद करते हैं। वे प्रतिष्ठा के भूखे, महाकवियों के द्वेषी,

मूर्खों के मध्य "काकमध्ये बकः" की तरह, अथवा "अंधों में काणो राव" की तरह बन बैठते हैं।

बुरी रचना करनेवालों के अतिरिक्त रचनाओं को बुरी तरह पढ़नेवाले और उच्चारण करनेवाले हीन कवियों से भी ग्रंथकर्त्ता का कहीं कहीं अभिप्राय है। दूसरों की कविता चुराकर अपनी कविता बनानेवालों के वास्ते कैसा अच्छा कहा है—

"उत्तम मूसे एकभड़, मध्यम दूहा मूंस।
अधमगीत मूसे अडर, त्रिविध कुकवि विण तूस॥"

आगे देखिए लंपट कवियों के लिये क्या अच्छा कहा है—

"डिंगलियां मिलिया करै, पिंगल तणो प्रकास।
संसकृती ह्वै कपट सज, पिंगल पढिया पास॥"

कुकवि महाराजों की स्तुति भी पढ़ने योग्य है—

"औगण ईरानी कटक, कुकवी नादरशाह।
कायब हिंदी दल कटे, रसण तेग बहराह"।

(८) विदुरबत्तीसी

कवि बाँकीदासजी ने खवासियों, दासों और दोगलों को अपने ग्रंथ विदुरबत्तीसी में विदुरजी के नाम से प्रकट किया अर्थात् उनके लिये विदुर शब्द का प्रयोग किया। कहाँ वह "विदुर-प्रजागर" के रचयिता विदुरजी, कहाँ वह महाभारत के प्रधान अंग के वक्ता महाप्रज्ञ, नीति-निपुण, विचित्र-वीर्य के पुत्र विदुरजी और कहाँ यह पामर दासीपुत्र, जिनका

निषिद्ध वर्णन कवि ने किया है। यह मन को अखरता है क्योंकि संस्कृत कोषों में विदुर के दो अर्थ हैं। एक तो "रथाभ्र-पुष्पविदुरशीत-वानीर-वंजुलाः" और "ज्ञाता तु विदुरो विदुः"। इस प्रकार विदुर शब्द का शब्दार्थ दासी-पुत्र नहीं है। परंतु धृतराष्ट्र के भाई विदुरजी दासीपुत्र थे, इस कारण कवि ने अवांतर रूप से इस शब्द का दासीपुत्र के अर्थ में प्रयोग किया है जो उपहास का सूचक भी है।

जिनको कवि ने विदुर कहा है उनके लिये गोला, गोल, दास, दासीपुत्र, दासीजादा, ये शब्द भी प्रयोग किए हैं। इससे यह प्रकट है कि विदुर शब्द से ही दासीपुत्रों का वर्णन करना अभिप्रेत नहीं था।

इस ग्रंथ के पैंतीस दोहों में दासीपुत्रों के लक्षण, स्वभाव, व्यवहार, प्रभाव, रहन-सहन आदि का हास्यमय चित्रण किया है। इन दासों की संगति से जो बुराइयाँ पैदा होती हैं उनसे बचाने को बाँकीदासजी के उपदेश बहुमूल्य हैं। यथा—

"गोला सूं न सरै गरज, गोला जात जबून।
ऊखाणों सायद भरै, सो गोलां घर सूंन॥"

और

"कूकर लाय जलै नहीं, जुडै न कायर जंग।
विदुर न ठहरै विपत में, संपत में हीज संग॥"

तथा

"दासीजादा दे दगा, पास रहंता पूर।
रीझै खीझै राखणां, दासीजादा दूर॥"

एवं

"बीछू, बानर, व्याल, विख, गरदभ, गंडक गोल।
ऐ अलगाहिज राखणां, ओ उपदेश अमोल॥"

(८) भुरजाल-भूषण

"भुरजाल भूषण" ग्रंथ में, दोहों में, जगत्प्रसिद्ध मेवाड़ देश के चित्तोड़गढ़ की प्रशंसा की है और इसमें जयमल और पत्ता की भी बहुत कीर्ति गाई है जो इस गढ़ पर अकबर के साथ खूब लड़े हैं और जिन्होंने गढ़ की रक्षा की है। बाँकीदासजी ने चित्तोड़ को "भूरजाल भूषण" कहा है। 'भुरजाल' शब्द भुर्ज-आलय से बना मालूम होता है, अथवा भुरजाला शब्द से है। भुर्ज शब्द बुर्ज का अपभ्रंश है। बुर्ज फारसी शब्द है। भुरजालभूषण शब्द कहने से सब किलों का भूषण अर्थात् जेवर व शोभा समझना चाहिए। प्रथम दोहे में "साह तणां खनी सबल", ऐसे बड़े पुरुषों का शरणागत आना समझा जा सकता है जैसा—शाहजादा खुर्रम। इसके लिये इतिहास में ऐसा लिखा है—"इसी महाराणा जगतसिंहजी के समय में शाहजादे खुर्रम ने शरण लिया। जगमंदिर के गुंबदवाले महल इन्हीं के रहने के लिये बनाए गए थे। इस सहायता के लिये शाहजादा खुर्रम ने बादशाह होने पर श्री दरबार को

पगड़ी-बदल भाई बनाया। यह पगड़ी अभी तक उदयपुर में मौजूद है।" (चित्तौड़गढ़—दामोदर शास्त्री कृत)

इस दुर्ग को सातों अकलीम में प्रसिद्ध होना लिखा है सो कवि ने ठीक ही लिखा है। मान कवि कृत "राजविलास" ग्रंथ में आया है। यथा—

दोहा

"मेदपाट महिमंडणह, चित्रकोट गढ़ चारु।"

कवित्त (छप्पय)

"गुरु चौरासी गढनि, मही मेवार सुमंडन।
अकल अभेद अभीत, विषम पर चक्र विहंडन॥"
तुंग विशाल त्रिकोट थिरिसु, कोशीसा थाहट।
पौरि बुरज गुरु प्रबल, कठिन अग्गला कपाहट॥"
बहुकुंड वापि सर जल विमल, विबुधालय वसुधा बहित।
देखे यु दुर्ग सब देश के चित्रकोट मो बसिय चित॥"९४॥
"महि चित्रकोट समानयं, गढ़ कौन आवहि गानयं"॥१०७॥
रिनथंभ मडव रेवतं, सुर असुर किन्नर सेवतं।
आबू सुगढ़ आसेरयं, अवगाढ़ गढ़ अजमेरयं॥१०८॥
ग्वालेर अलवर गज्जना, विक्रमरु बंधुर बज्जना।
गूगोर नरवर गाहिए, शिव साहिगढ़ साराहिए॥१०९॥
मंडोवरा मैदानयं, गढ गागरोनि गुमानयं।
दौलताबाद सु देखयह, पुहवी सु पूना पेखयहु॥११०॥

हिसारगढ़ हरणौरयं, सोवरण गिरि सच्चौरयं ।
गढ़देव ईडर गौरवं, बैराठ बंधू नौरवं ॥१११॥
कहि कँगूरा कल्यानियं, ठिल्ला पहारसु ठानियं ।
सुनियै शिवाना सारका, महिमध्य मंडल मारका ॥११२॥
तारागनं, त्रकुटाचलं, नाशक्य, त्रंबक कुंडलं ।
यों कोट दुर्ग अनेकयं, बाषानियें सु विवेकयं ॥११३॥

इस चित्तोड़गढ़ के स्वामियों की प्रशंसा में कवि ने (सं० दो० २ में) लिखा है कि पद्मिनी जैसी सुंदर रानी सिंहलद्वीप से लाए। इतना कहने से कवि का लक्ष्य उसी पद्मिनी के रूप के कारण पद्मिनी के स्वामी महाराणा रत्नसिंह से अलाउद्दीन खिलजी का झगड़ा और मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत काव्य के अनुसार, रत्नसिंह को वापिस छुड़ा लाना आदि बातें हैं जिनको सच्चे इतिहास के लेखक—ओझा गौरीशंकरजी आदि—नहीं मानते हैं अर्थात् यह नहीं मानते कि पद्मिनी के कारण अलाउद्दीन ने चढ़ाई की। इतना ही मानते हैं कि "**पद्मावत, तारीख फरिश्ता,** और **टाड के राजस्थान** के लेखों की यदि कोई जड़ है तो केवल यही कि अलाउद्दीन ने चित्तोड़ पर छः मास के घेरे के अनंतर उसे विजय किया, वहाँ का राजा रत्नसिंह इस लड़ाई में—लक्ष्मणसिंह आदि कई सामंतों सहित—मारा गया, उसकी राणी पद्मिनी ने कई स्त्रियों सहित जौहर की अग्नि में प्राणाहुति दी। इस प्रकार चित्तोड़ पर थोड़े से समय के लिये मुसलमानों का अधि-

कार हो गया। बाकी सब बातें बहुधा कल्पना से खड़ी की गई हैं।"

फिर ओझाजी ने लिखा है कि "अमीर खुसरो की तारीखे अलाइया के अनुसार सुलतान अलाउद्दीन ता० २८ जनवरी सन् १३०३ को दिल्ली से रवाना हुआ और ता० २६ अगस्त १३०३ को किला फतह हुआ। इस किले को अपने बेटे खिजरखाँ को दिया और चित्तोड़ का नाम खिजराबाद रखा।" (मेवाड़ का इतिहास २ रा खंड पृ० ४८५)

तीसरे दोहे में "सात लाख हिंदू मुआ, असुर अठारह लाख" जो लिखा है यह तादाद उन्होंने कहाँ से ली यह उन्हीं को मालूम होगा। इतिहास में इस संख्या को ठीक मानने को हमें कोई प्रमाण नहीं मिला। ७४॥ का अंक लौकिक में ७४॥ मन जनेऊ और चित्तोड़ मारे का पाप आदि बातें बहुसंख्यक मनुष्यों का मारा जाना अवश्य प्रकट करता है परंतु इतिहास की कसौटी पर बाँकीदासजी की संख्या नहीं कसी जा सकी। अलाउद्दीन खिलजी, बहादुरशाह (गुजरातवाला) और अकबर आदि ने चित्तोड़ पर चढ़ाइयाँ कीं जिनमें असंख्य मनुष्य मारे गए। (महाराणा उदयसिंह पृ० ४१७ पर नोट देखो।) वहाँ ७४॥ का अंक ॐ० का रूपांतर है कि प्राचीन काल में ओं को ७ के अंक के समान लिखा जाता था। फिर आगे शून्य लिखी गई। जल्दी लिखने से ४ का अंक और आगे विराम की दो खड़ी लीकें लगाए जाने से ७४॥

हो गया। यह पूर्वकाल के प्रारंभ में लिखा जाता था। और राजपूताने के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ ठाकुर भूरासिंहजी शेखावत मलसीसर संगृहीत महाराणा-यश-प्रकाश में पृष्ठ १२ पर गीत-संख्या तीन में महाराणा गढ़ लक्ष्मणसिंह के संबंध में जो दिया है उसमें ऐसा आया है "दीन अलाव फिरे गढ़ दोला, हर सिरमाल बणाव हुआ। सात लाख भड खत्रो सरांरा मेछ अठारा लाख मुआ॥" इसका अर्थ उस पुस्तक में यह दिया है—अलाउद्दीन ने गढ़ के गिर्द घेरा दे दिया। और महादेव ने भी मस्तकों की माला का भूषण बनाया। जहाँ सात लाख वीर क्षत्रिय और अठारह लाख म्लेच्छ (मुसलमान) मारे गए। परंतु इस पर जो नोट संग्रहकर्ता ने दिए हैं उनसे प्रगट है कि लक्ष्मणसिंहजी ने सं० १३६० में मुहम्मद तुगलक बादशाह के साथ युद्ध किया था, अलाउद्दीन के साथ नहीं। यह बात सर्वथा गलत है क्योंकि प्रसिद्ध इतिहासज्ञ पं० गौरीशंकरजी ओझा का भी यह नोट उस पुस्तक में दिया गया है—"राणा नाम की दूसरी शाखा का प्रथम पुरुष राहप हुआ जिसका वंशज लक्ष्मणसिंह (गढ़ लक्ष्मणसिंह) अलाउद्दीन के हमले में राव रत्नसिंह के पक्ष में लड़कर अपने सात पुत्रों सहित काम में आया।" और ओझाजी ने राजपूताने के इतिहास जिल्द दूसरी अध्याय ४ पृष्ठ ५४६ के नोट में भी लिखा है— "अलाउद्दीन के साथ की लड़ाई में हम्मीर का पितामह लक्ष्मसिंह (लखमसी) और पिता अरिसिंह दोनों मारे गए,

जिसके पीछे कुछ वर्ष तक अजयसिंह सीसोदे का स्वामी रहा जिसके बाद हम्मीर ने वहाँ की जागीर पाई थी।"

महाराणा हम्मीर जिनको चौथे दोहे में शिव का अवतार कहा है उसके लिये महाराणा-यश-प्रकाश में गीत ६ वें में

"हरहर तणा हमीर नरेसुर लाभथका मूका रह लोय।
एकण आस तुहाली ऊपर, सीसोदा आवै सहकोय ॥१॥
जटधारी, धारी जानोई, कविताधारी, कंथाधार।
मारगदस मेवाड नरेसुर, बहै तुहालै बड़ दातार ॥ २ ॥
हर पंथ अघहर पंथ अह हुअ.........इत्यादि" इनसे

चारण कवियों ने इनको शिव का अंश कहा है; इसके कारण ये हैं—(१) इस हम्मीर ने गए हुए चित्तोड़ को फिर सं० १३८३ में वापिस जेतसी से ले लिया था, (२) यह दानी बहुत था। इसके दान की प्रशंसा प्राचीन ग्रंथों और प्रशस्तियों में स्थान-स्थान पर लिखी है, (३) तीसरे यह महावीर था। इसको विषमधारी पंचानन आदि उपाधियाँ थीं। हम्मीर का देहांत संवत् १४२१ में हुआ।

राणा साँगा, जो बाबर से देश-रक्षा के लिये लड़े थे, महावीर थे और उन्होंने गढ़ मांडू गुजरात देश पर हमला करके उसे अपने अधीन कर लिया। यह किला (मांडू) उन्होंने बड़ी ही वीरता से बहुत ही कम आदमियों के साथ ले लिया था। और वहाँ के बादशाह मुज़फ़्फर (महमूद) को कैद करके १५७४ में चित्तोड़ ले आये थे। कई दिनों तक उसे रखा,

बाद में अपने अनुकूल प्रतिज्ञा कराकर और उसका जड़ाऊ ताज और पट्टा लेकर उसे छोड़ दिया। इसी को महाराणा-यश-प्रकाश के गीत २४ में इस प्रकार लिखा है। "खलचिया धरा खागां गुहै खैगरै, असुरची अर्थ कै घर अथांणो। मेलतो छोडतो बडा पोह माल्लवी. रूफ साराहियो राव राणों ॥३॥ मिले सगराम सगराम जुध मसलियो, त्रिजड बल खान खंधार तूटो। आस भंडार सपतंग ले सब गल, छोडियां साह महमंद छूटो" ॥४॥ और आगे २५ वें गीत में यह आया है "मांडब राव मुक्यो मेवाडै" इसी तरह अन्य गीतों में भी मांडू के बादशाह को पकड़कर छोड़ देना आया है जो इन महाराणा की बड़ी प्रशंसा है।

६, ७, और ८ वें दोहों में चित्तौड़गढ़ की विशालता, प्राकृतिक उपयोगिता, अनुपमता, दृढ़ बनावट आदि की प्रशसा है। पहाड़ की ऐसी बनावट आ गई है कि वर्षा का पानी आड़ी सी रुकावट याने बंध से पुष्कल भरा रहता है। निर्झर सदा चलकर व्योम मुख के कुंड में गोमुख होकर डाकता रहता है, उसका पानी कभी नहीं सूखता है। आश्चर्य है! किलों में इस तरह पानी की रसद बड़े काम की होती है और दोहे के उत्तरार्द्ध में किले की मजबूती की प्रशंसा है, इस किले की दीवार के कँगूरे ऐसे हैं मानो दूसरे किलों की बुर्जें हों। राजविलास में आया है—

"मुख भीम कुंड सु आनिए, जसुतीर गोमुख जानिए।
पै धार पतत प्रवाहनी, अवलोक ते उच्छाहनी॥१०३॥

गुरु बुरज गिरि सम गात यह वर घोरि सम विख्यात यह,
भारी कपालसु भग्गला अति गाढ़ शृंखल अग्गला ॥६६॥
प्राकार तीन प्रचंड हैं, मनु अमर आयुसमंड।
सुविशाल गज सँग बीस के, उत्तंग गज एकतीस के ॥६७॥

नवें दोहे से प्रायः अंत तक अकबर की चढ़ाई और उस विकट लड़ाई में राजपूतों की बड़ाई, जयमल पत्ता की अनुपम जगत्प्रसिद्ध वीरता आदि का वर्णन है। यह लड़ाई इतिहास-प्रसिद्ध है। अकबर बड़ी विकट सेना लेकर वि० सं० १६२४ (ई० सन् १५६७) में चढ़ आया। और महाराणा उदय-सिंह की अनुपस्थिति में किले के रक्षक और रण के नियंता सिसोदिया पत्ता (प्रतापसिंह अमेठ के ठिकाने का पूर्वज) और मेडतिया राठौर जयमल (बदनोर के सरदारों के पूर्वज) नियुक्त हुए थे। ये बड़ी बहादुरी से अकबर और उसकी सेना को छकाकर वीर-गति को प्राप्त हुए। इनकी छतरियाँ वहाँ बनी हुई हैं।

चौदहवें दोहे में "दिए दुरंगा ढाह" से अकबर की वह कारीगरी सूचित होती है कि दमदमें और सलामत बुर्ज और सुरंगें लगाकर चित्तोड़ के विशाल बुर्जों को सुरंग से उड़ाया।

पंद्रहवें दोहे से अठारहवें दोहे के पूर्वार्द्ध तक अकबर के विजयशाली होने और उसके बल की प्रशंसा है। कश्मीर और बंगाल के लेने की जो प्रशंसा कवि ने यहाँ लगाई है वह चित्तोड़ की चढ़ाई से पूर्व की नहीं है सो संवतों से पाठक जान लें।

अठारहवें दोहे के उत्तरार्द्ध से लगाकर २० वें तक किले के वीरों, योद्धाओं और सामान का सूक्ष्म वर्णन है तथा जयमल पत्ता का गुणगान है। जैसा कि पाठक जानते हैं, जयमल राठौर वीरमदेव (मेडतिये) के ११ पुत्रों में सबसे बड़ा था। उसका जन्म वि० सं० १५६४ आश्विन सुदि ११ को हुआ था। मेडते का किला लेने को अकबर ने १६१९ में मिर्जा शर्फुद्दीन को भेजा था। इसने किले में सुरंग लगाकर किला हस्तगत कर लिया और उसी समय ५०० राजपूतों को लेकर जयमल राणाजी के पास सपरिवार आ गया। पत्ता प्रतापसिंह प्रसिद्ध चूंडा के पुत्र कांधल का प्रपौत्र था। २१ वें दोहे से ३२ तक चित्तोड़गढ़ के इस युद्ध के संबंध में कवि की चोज-भरी प्रशंसा, गढ़ की नैसर्गिक श्रेष्ठता और बनावट की उत्तमता और अजेयता का दिग्दर्शन है। आगे ३३ से ४५ तक अकबर और उसके वजीर आसफखाँ का विचार, और फतह करने की तदबीरें और जयमल पत्ता को संदेश भेजना और उनका अन्य वीरों से सलाह करके जवाब भेजना कवि ने वर्णन किया है। दोनों तरफ के जवाब सवाल इन दोहों में बहुत वीरता-पूर्ण हैं परंतु ठा० हनुमंतसिंह रघुवंशी रचित इतिहास में यह लिखा है—"किलेदारों ने एक दफे सांडा सिलेदार को और दूसरी दफे साहिबखाँ को भेजकर सुलह की दरख्वास्त की मगर बादशाह ने यही जवाब दिया कि जो राणा उदयसिंह हाजिर हो जावे तो सुलह

मंजूर है नहीं तो नहीं, और यह बात किलेवालों के इख्तियार से बाहर थी इसलिये उन्होंने सुलह की उम्मीद छोड़कर लड़ने मरने पर कमर बाँधी।" (पृ० १६६) और यही बात पं० गौरीशंकरजी हीराचंदजी ओझा ने अपने राजपूताने के इतिहास भाग दूसरे के पृ० ७२६ में लिखी है। अस्तु।

जयमल पत्ता के जवाब से चिढ़कर अकबर क्रुद्ध हुआ और उसने अपने वीरोचित गर्व भरे वचन कहे। वे आगे के दोहों (४६ से ५२ तक) में वर्णित हैं। ५३ व ५४ के दोहे में दुर्गा चंद्रावत की निंदा जयमल पत्ता ने की है। इसके संबंध में इतिहास में यह लिखा है—"अकबर ने चित्तोड़ की चढ़ाई से पूर्व रामपुरे के किले को आसिफखाँ द्वारा फतह किया था जिसमें दुर्गा चंद्रावत रक्षक था। यह हारकर महाराणा की शरण में आ गया।" इससे यह मालूम होता है कि अकबर ने रामपुरा दुर्ग लेने और दुर्गा को भगा देने की धमकी जयमल पत्ता को भी दी होगी परंतु वे कब डरनेवाले थे। फिर पचपनवें दोहे से ६० वें तक जयमल पत्ता की वीरता, दृढ़ता, और चित्तोड़ से सच्चा प्रेम भरा हुआ संबोधन है जो कवि की सदुक्ति और उन उभय वीरों की अनुपम शूरवीरता का एक अलौकिक वर्णन है।

उपरांत ६१ से अंत तक कवि बाँकीदासजी की ही उक्ति है जिसमें इन वीरों की अतुलित शक्तिमय दृढ़ता, रण-कौशल और चित्तोड़गढ़ का वास्तव दुर्गमत्व वर्णित है।

६८ वें छंद में इस महान् दुर्ग के आदि-निर्माण का उल्लेख है। इतिहास में लिखा है—यह किला मौर्यवंश के राजा चित्रांगद ने बनवाया था जिससे इसको चित्रकूट (चित्तोड़) कहते हैं। विक्रम संवत् की आठवीं शताब्दी के अंत में (७२८ ई०) मेवाड़ के गुहिलवंशी राजा बापा ने राजपूताने पर राज्य करनेवाले मौर्यवंश के अंतिम राजा मानमोरी से वह किला अपने हस्तगत किया था। इस किले में मौर्यों के बनाए हुए महल और चित्रांगद तालाब आदि अब तक मौजूद हैं। यह चित्तौड़ का दुर्ग समुद्र की सतह से १८५० फुट ऊँचाईवाली सवा तीन मील लंबी और अनुमान आध मील चौड़ी उत्तर दक्षिण स्थित एक पहाड़ी पर बना हुआ है और तलहटी से किले की ऊँचाई ५०० फुट है। राजविलास में लिखा है—"चित्रकोट चित्रांगदे मोरी कुल महिपाल। गढ़ मंड्या अवलोकि गिरि देवनसीदा ढाल ॥१६॥ संगहि लिय सीसोदिए, दुर्ग राह रिषिदान। बापा रावल वीरवर, वसुमति जासु बखान ॥ १७॥ पाट अचल मेवाड़पति रघुवंशी राजान। बापा रावर बड़ बहत, थिरि चीतोड़ सुथान ॥ १८।" और इसकी परिधि के बाबत उक्त ग्रंथ में यह लिखा है—"कहि परिधि द्वादस कोस की, अनभंग अंग अदोस की। दलदेव निर्मित दुर्ग ये, अरि दलन गर्व अलग्ग ये ॥"

और डा० स्ट्रेटन, रैजिडेंट मेवार, ने इस किले की बातें संक्षेप से अपनी पुस्तक "Chitor and the Mewar Family" में

लिखी हैं और वहीं वर्णन को समाप्त करते हुए यह लिखा है—
"Such, roughly described, is the hill which with comparatively little aid from art in the form of bastioned encircling walls near the summit has been the principal fortress of the Mewar Family"

(p 4.)

अर्थात् संक्षेप वर्णन से यह पहाड़ वह है जो थोड़ी सी कारीगरी के साथ अर्थात् बुर्जीदार दीवार को चोटी पर धारण करते हुए ११५० वर्ष तक मेवाड़ राज्यवंश का प्रधान किला रहा है।

ओझा गौरीशंकरजी ने अपने इतिहास में कैसे उत्तम वचनों में इस किले की सच्ची प्रशंसा लिखी है—"राजपूत जाति के इतिहास में यह दुर्ग एक अत्यंत प्रसिद्ध स्थान है जहाँ असंख्य राजपूत वीरों ने अपने धर्म और देश की रक्षा के लिये अनेक बार असिधारा-रूपी तीर्थ में स्नान किया और जहाँ कई राजपूत वीरांगनाओं ने सतीत्व-रक्षा के निमित्त, धधकती हुई जौहर की अग्नि में कई अवसरों पर अपने प्रिय बाल-बच्चों सहित प्रवेश कर जो उच्च आदर्श उपस्थित किया वह चिरस्मरणीय रहेगा। राजपूतों के लिये ही नहीं किंतु स्वदेशप्रेमी हिंदू संतान के लिये क्षत्रिय-रुधिर से सींची हुई यहाँ की भूमि के रजकण भी तीर्थरेणु के तुल्य पवित्र हैं।"
(पृ० ३४९ प्र० भाग)

इस "भुरजालभूषण" के गुणगान से हम भी अपनी लेखनी को, सेवा में प्रवृत्त करते हुए और सहायक ग्रंथों के आचार्यों के, कृतज्ञ होते हुए यहाँ पर विश्राम देते हैं।

(१०) गंगालहरी

'गंगालहरी' ग्रंथ में कवि ने दोहा और सोरठा छंदों में गंगाजी की स्तुति, गंगाजी की गुणावली, गंगाजी से अपनी मनोरथ-सिद्धि की प्रार्थना बड़ी चोजभरी वाक्यावली से वर्णित की है। चलते ही मंगलाचरण का दोहा कितना उत्तम है—

"श्रीपत चरण सरोजरो गंगाजल मकरंद।
अलियल ज्यूं कर पान अब अधिकावण आनंद॥"

यहाँ विष्णु के चरण को कमल कहा है और उससे निकले हुए गंगाजल को मकरंद अर्थात् पुष्प-रस कहा है और कवि ने अपने आपको भौंरा बनाया है। इस दोहे में 'अब' शब्द का प्रयोग यह अर्थ ध्वनित करता है कि अनेक पुष्पों का रस ले लिया अर्थात् अनेक नदियों में स्नान कर लिया परंतु गंगा की प्राप्ति में अलौकिक रस पाया अथवा अब उत्तर अवस्था में गंगा की शरण लेना ही सच्चे आनंद का हेतु हो सकता है अर्थात् मोक्ष प्राप्त हो सकता है। वा 'अब' शब्द से कलियुग का भी अभिप्राय लिया जा सकता है, और साथ ही यह प्रयोजन भी निकलता है कि अपने कल्याण के लिये और सब जगह भटक आया परंतु फल की प्राप्ति नहीं हुई तो अब अर्थात् अंत में गंगा के आश्रय से अभीष्ट सिद्धि

की संभावना हुई। इसकी पुष्टि "अधिकावण आनंद" से होती है। इस दोहे में इस वास्ते रूपकालंकार है। कवि ने अलंकार को अच्छा निभाया कि 'पान' शब्द और 'आनंद वृद्धि' अलंकार के स्वरूप और अर्थ के गौरव को बढ़ाता है। शब्द-योजना की तरफ ध्यान दें तो 'श्री' शब्द और 'श्रीपत' शब्द प्रारंभ में आने से पूर्ण कल्याणवाचक हैं और गंगाजल को श्रीजल भी कहते हैं। पाठक बाँकीदासजी के ग्रंथों को पढ़कर जानेंगे कि डिंगल छंद की प्रसिद्ध रचना-चातुरी में वैणसगाई (वर्णमैत्री) एक आवश्यक और अनिवार्य्य अंग होता है। कवि बाँकीदासजी ने इसे अपनी रचना में सर्वत्र खूब निभाया है। इस दोहे में 'श्री' में तालव्य शकार और सरोज में दंत्य सकार मंद प्रथम है और द्वितीय चरण में गंगा का गकार और मकरंद का ककार हीन चतुर्थ और तृतीय चरण में अलियल का अकार और अब का अकार और चतुर्थ में अधिकावण का अकार और आनंद का आकार पूर्ण प्रथम वैणसगाई हैं। हमने जहाँ तक निगाह डाली है, चतुर बाँकीदासजी वैणसगाई के निर्वाह में बहुत कम चूके हैं। यह तो नहीं हुआ है कि सर्वत्र ही उत्तम वैणसगाई ला सके हों परंतु किसी भी प्रकार की वैणसगाई जरूर रखी है। वैणसगाई बना बनाया अनुप्रास का काम देता है। इसमें संदेह नहीं कि वैणसगाई के प्रयास से कहीं कहीं अर्थ का घाटा हो जाता है। हाँ, प्रवीण

कवियों में इस घाटा के न आने देने का प्रयत्न पाया जाता है तब भी साहित्यमर्मज्ञ इस बात को जानते हैं कि शब्दालंकार और अर्थालंकार में स्वाभाविक स्थायी मैत्री नहीं है अपितु शब्दालंकार अर्थालंकार की हानि ही करता है। शब्द-सिद्ध और अर्थ-सिद्ध कवियों का कौशल भले ही इसका वारण करे और इन दोनों का मनमुटाव मिटानेवाले ही "मोटे कवि" कहला सकते हैं। बाँकीदासजी का यह सोरठा देखिए—

"धर गंगाजलधार, आंणी तपकर ऊजलो।
आ मोटो उपगार भागीरथ कीधो भुयण॥"

इसमें बिलकुल प्रयास मालूम नहीं होता और न वर्ण-मैत्री से अर्थ को हानि पहुँची है अपितु छंद में उज्ज्वलता आई है और **मोटो** शब्द तो हमारे कवि को अपने गुण में **मोटो** (प्रबल या प्रवीण) बनाता है।

इस गंगालहरी में, प्रत्येक छंद में, एक वा दो अलंकार अवश्य हैं। पढ़नेवाले स्वयं समझेंगे कि किसमें क्या अलंकार है। अलंकार ग्रंथों की तरह कहीं भी बाँकीदासजी अलंकार लाने की कोशिश नहीं करते हैं; वे तो स्वाभाविक उक्ति ही में अपने मन का अभिप्राय उक्त शब्दों में कह देते हैं और अर्थ की सुंदरता अलंकार के साथ आ जाती है। मानो उनकी उक्ति आप ही सुंदर है, अलंकार से सुंदर नहीं। सच कहा है—"सुंदर जे हैं आपही सुंदर तिनको कहा सिंगार॥"

श्रीगंगाजी के लिये जगह जगह बाँकीदासजी की अगाध भक्ति और प्रेम टपके पड़ते हैं, शायद इस ग्रंथ की रचना के पूर्व उन्होंने गंगास्नान नहीं किया होगा, अथवा किया होगा तो उनके मन की फिर भी नहीं निकली होगी, लालसा बनी ही रही होगी। यथा—

"दूधां बरणां पाणियो, मंजन करसी देह।
बांका उण दिन बरस ही, दूधां हंदा मेह॥"
"बांको खिण नर बीसरै, तट निरमल ऊ तोय।
आया चंगा दीहडा, गंगा दरसण होय॥"
"नग नायकचा नाह, विच जटजूट बसावियो।
पावन गंग प्रवाह, पाणी तू कद परसही॥"
"गंगा ब्रम्म कमंडली, पावनता विण पार।
तू मोनूं तिसावही, कै देसी दीदार॥"

इस गंगालहरी में अन्य कवियों के, जिन्होंने गंगाजी की स्तुति में स्तोत्र रचे हैं (पंडितराज जगन्नाथ, वाल्मीकि, कालिदास, शंकराचार्य, ग्वाल कवि, पद्माकर आदि), विचार कहीं कहीं झलकते हैं। तथापि अनेक स्वतंत्र और नए विचार भी हैं। यथा—

"सुत विनता तन खोय, जल तजे जणणी जतन।
तू राखे मझ तोय, भसम हाड भागीरथी॥"
"नीर मिले तो नीर में, सायर माँह समाय।
नर न्हावे तो नीर में, जोत समावै जाय॥"

"गल मुँडमाल मसाण ग्रह, संग पिसाच समाज।
पावन तूझ प्रभाव सूं, संभु अपावन साज॥
जल अवगाहण जीवणो, दूर हुआं अति दीन।
तू गंगा तो जल तणों, मोकद करसी मीन॥"
"पावन तू हरि पाय करि, कै तो करि हरि पाय।
है पावन ओ मूझ हिय, मात सँदेह मिटाय॥"

जयपुर,
ता० १५ मार्च सन १६२६ } पुरोहित हरिनारायण

नोट—इस भूमिका के लिखे जाने में बा० महताबचंदजी खारैड विशारद तथा चौबे सूर्यनारायणजी दिवाकर ने बड़ी सहायता दी, तदर्थ इन्हें अनेक धन्यवाद हैं। ह० ना०

बाँकीदास ग्रंथावली

दूसरा भाग

---

(१) अथ वैसक वार्ता लिख्यते

दोहा

साबळ अणियां सांकही, चोरंग बणिया चेत ।
भणियां सूं भेलप नहीं, हुरकणियां सूं हेत ॥ १ ॥
दीठा भाव दिखावणां, हुरकणियां रा हाथ ।
हात नहीं मन किमि हिचे, भेले अस भाराथ ॥ २ ॥
गिनका रे जे नर ग्रहे, कबरी डंड करेण ।
खाग ग्रहे किमि दळण खळ, तेज विहीणा तेण ॥ ३ ॥

वैसक = वेश्या, रंडी ।

(१) साबळ = सेल । सांग (लोहे की) । अणियां = नोंक, फाल । सांकही = सकुचाते हैं, डरते हैं । चोरंग = चतुरंगिणी सेना, फौज । बणियां = बने हुए । चेत = ज्ञान, होश । भणियां = विद्वान् । भेलप = मेल, सत्संग । हुरकणियां = रंडिये वा रंडी के दल्लाल । हेत = प्यार, स्नेह ।

(२) दीठा = देखा । दिखावणां = दिखानेवाले । किम = कैसे । हिचे = भिड़े, चले । अस = अश्व, घोड़े । भाराथ = युद्ध । भेले = मिले, भिड़े ।

(३) गिनका = रंडी । कबरी = वेणी, स्त्रियों की चोटी ।

आगे बरवा अच्छरा, उर धरता अनुराग ।
हवणों का अलियल हुआ, वार बधू वप बाग ॥ ४ ॥
सठ गनका री बात सुण, आलोचे नह एम ।
चाह घणां चरणां चढ़ी, काठां चढ़सी केम ॥ ५ ॥
आ काठां चढ़सी अवस, धरणीधर दे धोक ।
सठ मन मानै सुधरसी, पातर सूं परलोक ॥ ६ ॥
फरगट मारे फूटरा, कर सूं सरगट काढ़ ।
सठ दाखै भालो सरस, गिनकावालो गाढ़ ॥ ७ ॥
हंसियो जग आसक हुए, वसियो खोवण वीत ।
रसियो नागी रांड सूं, फसियो होण फजीत ॥ ८ ॥

डंड करेण = भुजदंड से । खाग = खड्ग । दलण = दलने, मारने । विहीणा = विहीन । तेण = उन (हाथों) में ।

(४) बरवा = बरने (प्राप्त करने) को । अच्छरा = अप्सरा । हवणों = अब । अलियल = भँवरे । वारबधू = वेश्या । वप बाग = वप (वपु) शरीररूपी बाग (बगीचे) में ।

(५) आलोचे = समझे, विचारे । एम = ऐसे । चाह = लोभ । घणां = बहुत । काठां = लकड़ी में, चिता में । केम = कैसे ।

(६) आ = यह (निज सती स्त्री) । अवस = अवश्य । धरणीधर = सूर्य्य वा ईश्वर । पातर सूं = रंडी से ।

(७) फरगट = निजारे, फरकाफूंदी, नृत्य । फूटरा = अच्छा, सुंदर । सरगट = घूंघट । दाखै = कहै । भालो = देखो । गाढ़ = दृढ़ता ।

(८) आसक = आशिक, प्रेमी । खोवण = खोने को । वसियो = बसा । वीत = वित्त, धन ।

करहे असवारी कियां, सोना हरणी संग ।
उण ढोला ज्यूं आपरो, ढोलो मानें ढंग ॥ ९ ॥
बाजे नित घूघर बंधे, फरगट वालो फैल ।
तन मन मिलयो तायफे, छांकां हिलियो छैल ॥ १० ॥
गोला सूं कीजे गुसट, ऊभी गिनका आण ।
लोपी छांका लेण नूं, काका वाली काण ॥ ११ ॥
घणो दिराडे घूमरां, गवराड़े नह गूढ ।
भाड़े वाली भामनूं, माथे चाढ़े मूढ ॥ १२ ॥
पारस नह नह पोरसो, पातर राखे पास ।
जिणरे आयो जांणजे, नेडो धनरो नास ॥ १३ ॥

---

(९) करहे = ऊँट । सोनां हरणी = रंडी, धन हरनेवाली । उण = वो । ढोला = ढोला, नरवर का राजा । ढोलो = छैला । (यहाँ ढोला मारुणी की कथा का प्रसंग है । व्याजस्तुति है ।)

(१०) फैल = फितूर, फैलाव । तायफे = रंडी से । छांकां = मद्य से । हिलियो = आदी हुआ, हिला ।

(११) गोला = गुलाम, नीच । गुस्ट = गोष्ठ, बात-चीत, गुप्त सलाह । ऊभी = खड़ी हुई । आण = आकर । लोपी = मिटाई । छाकां = मद्य । लेण नूं = लेने के लिये । काका = (चाचा) बड़ेरे । वाली = की । काण = मर्यादा ।

(१२) दिराडे = दिलाता है। घूमरां = घूमर, नृत्यविशेष। गवराड़े = गवाता है । नह गूढ़ = चौड़े, (नह = नहीं + गूढ़ = गुप्त) । भाड़े वाली भामनूं = रंडी को । माथे चाढ़े = सिर पर चढ़ाता है । मूढ = मूर्ख आदमी ।

(१३) नह = नहीं । पोरसा = सुवर्ण पुरुष । पातर = रंडी । नेड़ो = नजदीक । नास = नाश ।

सोरठा

पातर वाली प्रीत, मीठी लागे प्रथम मन ।
मंद हुआ धन मीत, हुएं विरस कड़वी हुवे ॥ १४ ॥

दोहा

देव पितर इन सूं डरै, रसक तरै किण रीत ।
हेम रजत पातर हरै, पातर करे पलीत ॥ १५ ॥
घटै आव जस धन घटै, अकल हटै बल अंग ।
नींदवियो दानां नरां, पातर तणों प्रसंग ॥ १६ ॥
काका बाबा भ्रात कवि, हुवै दूर रुख हेर ।
संत महंत्त न संचरै, पातर रे पग फेर ॥ १७ ॥
पड़दे घालो पातराँ, ठावी ठावी ठौड़ ।
परणीं नूं नह पेटियो, देखो बुधरी दौड़ ॥ १८ ॥

---

(१४) विरस = शत्रु—मनोमालिन्य वाले ।

(१५) रसक = रसिक, प्रेमी । तरे = पार लगे । किण रीत = किस प्रकार । पातर = पात्र, आभूषण । हेम = सोना । रजत = चाँदी । पलीत = अपवित्र, भ्रष्ट, नाश, प्रेतयोनि ।

(१६) आव = आयुष्य । हटे = घटती है, मिटती है । नींदवियो = निंदा की है । दानां = बुद्धिमान् ।

(१७) रुख हेर = रुख देखकर । संचरे = आते हैं । पग फेर = लौट जा ।

(१८) ठावी = बड़ी, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित । ठौड़ = जगह । नूं = को । पेटियो = एक वक्त के खाने की सामग्री आटा दाल आदि । बुध री = अकल की । ठावी = बड़ी, प्रतिष्ठित, खास, प्रसिद्ध ।

संके जावे संग सूं, अरध निसा में ऊठ ।
नर मूरख तो पिण न दे, पातरियां नू पूठ ॥ १६ ॥
तक लीधो सोना तिसो, पातरवालो प्रेम ।
ज्यां सांचों कर जांणियों, कहो न दे धन केम ॥ २० ॥
रसिया रे तन रोग सूं, सड़ जावे नह सोच ।
हेम रजत खातर हुवै, पातर लोच पलोच ॥ २१ ॥
घणी बुरी घर घालणी, पातर सूं ह्वै पाम ।
जीव गयां जावै जिका, करे दवा नह काम ॥ २२ ॥
पातर हूं ता प्रीत कर, आफू डलां अरोग ।
आखर पछताया अठे, लानत दे दे लोग ॥ २३ ॥

---

(१६) संके = शरमाता हुआ, चुपके से । अरध निसा = आधीरात । पूठ = पीठ ।

(२०) तक लीधा = ताक लिया, देख लिया । सोना तिसो = सोने जैसा । वालो = का । ज्यां = जिन्होंने । केम = कैसे ।

(२१) रसिया रे = प्रेमी का । नंह = नहीं । हेम रजत खातर = सोने चांदी के वास्ते । लोच पलोच = अति कोमल होकर लपट जाती है ।

(२२) घर घालणी = घर का नाश करनेवाली (डेरा जमानेवाली) । पांम = पाँव, उपदंश जिससे सारा शरीर फूट निकले । जिकां = वह ।

(२३) हूं ता = से । आफू डलां = अफीम के डले । अरोग = खाकर । देदे = बहुत देने से । अठे = इस कार्य में (रंडीबाज़ी में । जब चेत हुआ आँख खुली तब अपने को धिक्कारा) ।

धन लोड़े तोड़े धरम, विध विध जोड़े बात ।
जड़ सनेह खोड़े जड़ण, गिनका मोड़े गात ॥ २४ ॥
दूजां नू सानी दिये, एक तणे बस अंक ।
किण किण नँह दीधो कदम, पातर रे परजंक ॥ २५ ॥
रामजणी अर कंचणी, पातर देवे पांम ।
है बाघण बन हेकरी, राखै अलगी राम ॥ २६ ॥
अंग घणां आलंगियो, अधर घणांरी ऐंठ ।
नर मूरख जाणे नहीं, पातरियां री पैठ ॥ २७ ॥
कोड़ वचन खातर कियां, पातर न करै प्रीत ।
आथ देख अकुलीण नूं, माड़े कर ले मीत ॥ २८ ॥

---

(२४) लोंड़े = खोसे, लूटे । जड़ = झूठा । खोड़े जड़ण = पग बंधन करने को । मोड़े = मरोड़ती है ।

(२५) दूजां नूं = दूसरों को । सानी = इशारा । दिए = देती है । एक तणे = एक के । अंक = गोद । किण किण = किस किसने । दीधो = दिया । कदम = पैर । परजंक = पलंग ।

(२६) रामजणी, कंचणी, पातर = यह सब वेश्याओं के भेद हैं । रामजणी = प्रायः हिन्दू वेश्या, कंचनी = प्रायः मुसलमान वेश्या, पातर भी प्रायः हिन्दू वेश्या है किंतु यहाँ दोनों के लिये है—यथा प्रवीण-राय पातरी । बाघण = नाहरी । हेकरी = एक की । राखै = रखे । अलगी = अलग, दूर ।

(२७) घणां = बहुत । आलंगियो = आलिंगन किया । ऐंठ = झूठन । पैठ = प्रतीत ।

(२८) कोड़ = क्रोड़ । खातर = खातिर । आथ = द्रव्य । अकु-लीण नूं = नीच को । माड़े = जबर्दस्ती से । मीत = मित्र ।

कर कर बाड़ा कपटरा, धाड़ा पाड़ण धाम ।
दिल चोरण झाड़ा दिए, भाड़ावाली भांम ॥ २९ ॥
बादल काला बरसिया, अत जल माला आंण ।
काम लगो चाला करण, मतवाला रंग मांण ॥ ३० ॥
हरणीमन हरियालियां, उरहालिया उमंग ।
तीज परब रँग त्यारियां, सावण लाये संग ॥ ३१ ॥
लूंबां झड़ नदियां लहर, बक पंगत भर बाथ ।
मोरां सोर ममोलिया, सावण लायो साथ ॥ ३२ ॥
इंद्रधनुष तणियो अजब, चातुक धुन मन चाव ।
बीज न मावे बादलां, रसिया तीज रमाव ॥ ३३ ॥

---

(२९) बाड़ा = ओट, आड़ । धाड़ा पाड़न = डकैती करने को । झाड़ा = झाड़ फूँक, मीठे वचनों द्वारा फुसलाना । भाड़ावाली भांम = पैसे की स्त्री, किराये की स्त्री, रंडी ।

(३०) बरसिया = बरसे । जलमाला = मेघमाला । आंण = आकर । काम = कामदेव । लगो = लगा । चाला = खेल, तमाशे । रंग मांण = भोग कर ।

(३१) हरणीमन = मनोहर । हरियालियाँ = हरियाली । उर = हृदय में । हालिया = चलने लगी । तीज परब = यहाँ श्रावण सुदी या भाद्र बदी तृतीया (जिसे कजली तीज भी कहते हैं) से मतलब है, यह स्त्रियों का बड़ा त्योहार है ।

(३२) लूंबा झड़ = मेह की झड़ी । बक पंगत = बगुलों की पंक्ति । भर बाथ = बहुत खेंचकर अपने संग । ममोलिया = बीर बहूटी, वीरबधूटी ।

(३३) चातुक धुन = पपीहे की बोली । चाव = उमंग । बीज = बिजली । मावे = समावे । रमाव = खिला या आनन्द दिला ।

मोर शिखर ऊंचा मिलै, नाचै हुआ निहाल ।
पिक ठहके झरणाँ पड़ै, हरिए डूंगर हाल ॥ ३४ ॥
गाजे घण सुण गावणो, प्याला भर मद पाव ।
झूले रेसम रंग झड़, झोटा देर झुलाव ॥ ३५ ॥
पेच सुरंगी पाघ रा, ढांके मत धर ढाल ।
काछी चढ़ आछी कहूँ, हंजा भीजण हाल ॥ ३६ ॥
मेह सुजल पोटां मह्यां, सावण करता सैल ।
मोटो हुवे सिताब मन, छोटा रे ही छैल ॥ ३७ ॥
भीज रीझ झेली भली, पावस पांणी पैल ।
मतवाळा मनवार री, छाक मठेलो छैल ॥ ३८ ॥
आलीजा अलबेलेया, हो हंजा हुसनाक ।
भीनोड़ा रसिया भमर, छैल पियो मद छाक ॥ ३९ ॥

---

(३४) निहाल = आनंद भरे या आशा पूर्ण हुए । ठहके = बोले । डूंगर = पहाड़ । हाल = चलो ।

(३५) घण = घन, मेघ । सुन गावणो = गाना सुन । रंग झड़ = रंग की झड़ी । झोटा देर = ढकेलकर ।

(३६) सुरंगी = कसूमल लाल । पाघरा = पगड़ी का । कच्छी = कच्छी घोड़ा । आछी = अच्छी । हंजा = प्रेमी । भीजण = भीगने को ।

(३७) पोटां = बहुत । सैल = सैर । सिताब = जल्दी से ।

(३८) भीज = भीजने की । रीझ = बखशिश । झेली = ली । भली = अच्छी । पैल = बहुतायत । मनवार = मनुहार । छाक = मदिरा का प्याला । मठेलो = पीछी मत दो, इंकार मत करो ।

(३९) अलबेलिया = छैला । हुसनाक = सुंदर । भीनोड़ा = भीगे हुए । मद छाक = मदिरा का प्याला (खूब मदिरा पीवो) ।

पांणी सूं पोसाक रो, धरग्यो रंग घुपीज ।
द्यो रंगभीनी दूसरी, रंग भीनी नूं रीझ ॥ ४० ॥
भीनो रंग जल भीजतां, सांयीनो सिरदार ।
ते लीनो धन मन तिया, वस कीनो इण वार ॥ ४१ ॥
नाच गाय कर निलजता, रच वप भूषण रास ।
मार निजारा मोहियो, हंजो मुधरे हास ॥ ४२ ॥
विहद कोर गोटे बणो, पातर रे पोसाक ।
परणी फाटे पंगरण, बेली फाटे बाक ॥ ४३ ॥
नायक तीजी नार रो, मों दुखदायक मार ।
धरणी धर खावँद धके, परणी करै पुकार ॥ ४४ ॥
में कीधो सांचे मते, नायक तोसूं नेह ।
बण आवें सो देह वित, दाह विरह मत देह ॥ ४५ ॥

---

(४०) सूं = से । पोसाक रो = कपड़ों का । धरग्यो = उतर गया । धुपीज = धुल करके । द्यो = देवो । रंगभीनी = रंग से भरी हुई, स्त्री या रंडी का विशेषण या नाम ।

(४१) सांयीनो = जोड़ीवाला । इणवार = इस वक्त (मौका देखकर) ।

(४३) विहद = बेहद । परणी = विवाहिता स्त्री । फाटे पंगरण = फटे वस्त्र । बेली = सेवक, सहायक, हितैषी (स्त्री के लिये) । फाटे बाक = भूखे ।

(४४) तीजी = अन्य । मो = मुझे । मार = कामदेव । धरणी-धर = ईश्वर । खावंद = पति । धके = से, आगे, सन्मुख ।

(४५) नायक = स्वामी । साँचे मते = सच्चे मन से । बण आवे = जैसा बन सके । दाह = ज्वाला ।

प्रात तणी पासी पड़ी, दासी हूं विण दांव ।
आंख पलक सिर ऊपरे, थारा धरजे पांव ॥ ४६ ॥
प्यारा थांसूं पलक ही, बांछूं नहीं विजोग ।
उरबसिया मो आवजो, रसिया थारा रोग ॥ ४७ ॥
पमगां चढ़ लाटेपटो, रावत कीधा बाव ।
कुंण पूछे ढोलाकने, जांगडिया नूं जाब ॥ ४८ ॥
परगह सिर लीधो पलो, रसिया में नँह रांम ।
अहनव नाडे गांठिया, भाड़े वाली भांम ॥ ४९ ॥
के नाड़े के कंचुए, बांध्या वेणी बंध ।
कामण रा राखै कनै, मादलिया मन मंध ॥ ५० ॥

---

(४६) तणी = की । पासी = फांसी । विण दाव = बिना दाम की या बिना छलछिद्र की । थारा = तुम्हारा ।

(४७) पलक ही = पल भर । बांछूं = चाहूँ । बिजोग = वियोग । उरवसिया = हृदयेश्वर । आवजो = आना ।

(४८) पमगां = घोड़े । लाटेपटों = लटपटा । बाव = वचन । जांगरिया = मीरासी या गायक । जाब = जवाब ।

(४९) परगह = साथी । सिर लीधो पलो = मुँह छिपा लिया । गाँठिया = बाँध लिए ।

(५०) कंचुए = कंचुकी में । वेणी बंध = चोटी में । कामण रा = जंत्र मंत्र के । कनै = पास । मादलिया = तावीज या सोने चाँदी की चैाकियाँ । मन मंध = वशीकरण के ।

छोड़ै छानी दूतियां, लफरा जिणरै लाख ।
आपतणी कर अँजसियो, रसियो पड़दे राख ॥ ५१ ॥
कामण बस किण कामरू, बणियो घाणी बैल ।
हार गयो अछतो हुओ, छतो थको ही छैल ॥ ५२ ॥
सांप्रत जाणी सोखता, चितली जांण चुड़ेल ।
हार गयो अछतो हुओ, छतो थको ही छैल ॥ ५३ ॥
चित फाटो देखे चिरत, सुणियो अपजस सोर ।
रसिया मुख तालो रहै, जादूवालो जोर ॥ ५४ ॥
देखे फिरती दूतियां, सूतो धूंणे सीस ।
फंसियो कामण फंद में, रसियो करै न रीस ॥ ५५ ॥
परगह ले बांधी पगां, सेंठी गूघर साथ ।
हंजारो सारो हुकम, हुओ रंगीली हाथ ॥ ५६ ॥

---

(५१) छानी = छिपी हुई । लफरा = लुच्चे लफंगे । आपतणी = अपनी । अँजसियो = फूला, खुशी मनाई ।

(५२) बस किण काम = काम के बस किया या कामरू देश की स्त्रियों के मुवाफिक दीन बनाया । अछतो = निर्बल, अनहुआ । छतो = होते हुए भी ।

(५३) सांप्रत = चौड़े धाड़े । सोखता = संखणी या चूसनेवाली । चितली = रीझा ।

(५४) चित फाटो = मन फटा । चिरत = चरित्र । मुख तालो रहै = मुँह बंद रहै ।

(५५) फसियो = फँसा । रीस = गुस्सा ।

(५६) सेंठी = मजबूत । गूघर = घूघरों के । हंजारो = प्यारे का ।

दीधो धन लीधो दलद, कीधो गात कुढंग ।
गनका सूं राखे गुसट, रसिया तोनूं रंग ॥ ५७ ॥
सोवे अलगी सायधण, सुपने ही नँह संग ।
गनका सूं राखे गुसट, रसिया तोनूं रंग ॥ ५८ ॥
सुजस बिगड़ बिगड़ी सभा, आहुट गई उमंग ।
गनका सूं राखे गुसट, रसिया तोनूं रंग ॥ ५९ ॥

---

(५७) दलद = दरिद्रता । कुढंग = कुरूप, बेढंगा । गुसट = गोष्ठी ।

(५८) सायधण = सहधर्मिणी, विवाहिता स्त्री । अलगी = अलग ।

(५९) आहुट गई = उड़ गई ।

(२) अथ मावड़िया मिजाज लिख्यते

दोहा

मेछां हंदा मुलक में, जो मावड़ियो जाय।
महबूबां री मिसल में, किल सिरदार कहाय ॥ १ ॥
मावड़िया अँग मोलियां, नाजुक अंग निराट।
गुपत रहे ऊमर गमै, खाय न निजबल खाट ॥ २ ॥
बिना पोटली बाणियो, बिन सींगां रो बैल।
कदियक आवै कोटड़ो, छिपतो छिपतो छैल ॥ ३ ॥
नैणा रा सोगन करै, भै माने सुण भूत।
रामत दूलां री रमै, रांडोलो रा पूत ॥ ४ ॥

मावड़िया मिजाज = स्त्री स्वभाववाला (पुरुष), मायला, जो बचपन से माता के पास अधिक रहा हो।

(१) मेछां = म्लेच्छ। हंदा = का। मावड़िया = माँ का बिगाड़ा हुआ पुत्र। महबूबां री = दिलदारों की, प्रिय लोगों की। मिसल = पंक्ति। किल = निश्चय।

(२) मोलियां = पुरुषार्थहीन निर्बल, बारीक कपड़े का लहरिया। निराट = निपट। गुपत = गुप्त। गमै = खोवे। खाट = पैदा कर।

(३) पोटली = गठरी। सींगां = सींग के। कोटड़ी = सरकारी या जागीरदारों की कचहरी।

(४) नैणा रा = नेत्रों की। सोगन = शपथ। रामत = खेल। दूलां री = गुड़ियों की। रंडोली रा पूत = रंडा के पुत्र।

सुरताणां राणां तणी, नँह पूछी जे बात ।
मावड़िया मालक जठै, पूजीजे नँह पात ॥ ५ ॥
पाहण गल बांधै पड़ो, बेरो बावड़ियांह ।
पिण मंगण मत पारथो, मुजलां मावड़ियाह ॥ ६ ॥
मात सलामत पित मुआ, आवे नँह आपांण ।
धाम धूम मिजनूं घटा, जे मावड़ियां जांण ॥ ७ ॥
प्रगटे वांम प्रवीण रे, नर निदाढियो नाम ।
नर मावड़िया नाम त्यूं, विना पयोधर वाम ॥ ८ ॥
कर मुख दे लचकाय कट, झमक चलै सुर झीण ।
मावड़ियो महिला तणो, मारे रोज मलीण ॥ ९ ॥

---

(५) सुरताणां = बादशाह । राणां = राजा । तणी = की । पात = चारण या कवि ।

(६) पाहण = पत्थर । बेरो = कूप । बावड़ियांह = बावड़ियें । पिण = परन्तु । मंगण = माँगनेवाले । पारथो = प्रार्थना करना । मुजलां = (पाठां० = मुळजाँ) बेशरम ।

(७) सलामत = जिन्दा । मुआ = मरे । आपांण = शक्ति । धाम धूम मिजनूं घटा = कमजोर गुस्सा बहुत । जे = उनको । धामधूम = सुनसान । मिजनूं = जनाना ।

(८) वाम = स्त्री । निदाढियो = बिना डाढ़ी मूँछ का । (जैसे स्त्री प्रकट में बिना डाढ़ी मूँछवाला नर कहलाता है वैसे ही बायला बिना स्तनवाली स्त्री है ।)

(९) कर मुख दे = मुँह पर हाथ दे । कट = कमर । झमक = ठमके के साथ । सुर झींणा = बारीक आवाज । मलीण = नखरा,

पायो किण धनवंत पद, दामे डावड़ियांह ।
कवियण किन पायो कुरब, मांगे मावड़ियांह ॥ १० ॥
झूसर भारन झल्लही, गोधां गावड़ियांह ।
इम जस भारन ऊपड़े, मोलां मावड़ियांह ॥ ११ ॥
कहै सगा भोलप करी, दीधी डावड़ियांह ।
राव सरीखे रंगहै, मुंहडे मावड़ियांह ॥ १२ ॥
कुज कोई चुंमन करै, गनका हंदो गाल ।
कुज कोई खावण करै, मावड़िया रो माल ॥ १३ ॥
नाव तिरे नहं नीर में, निबलां नावड़ियांह ।
राजस नँह साबत रहे, मिनखां मावड़ियांह ॥ १४ ॥

बड़ाई मारना। अथवा मलीण = स्त्रीधर्म, नवाब वाजिदअली शाह लखनऊवाले की तरह होकर।

(१०) किण = किसने। दामें डावड़ियांह = लड़कियों के धन से। कवियण = कवियों ने। कुरब = इज्जत।

(११) झूसर = जूडा, जूआ। झलही = उठा सकता है। गोधां गावड़ियांह = छोटा बैल गाय। ऊपड़े = उठता है। मोलां = सस्ता, हल्का, नीच, अयोग्य।

(१२) सगा = संबंधी। भोलप = भूल। डावड़ियांह = लड़कियां। राव = रावड़ी अर्थात् फीका, रसहीन, पुरुषार्थ-हीन (रंगमहल में स्त्री के सम्मुख पुरुषार्थहीन हो जाता है)।

(१३) कुज कोई = हर एक। चुंमन करै = चूमता है। हंदो = का। खावण करै = खाना चाहता है।

(१४) निबलां = निर्बल। नावड़ियांह = नाव चलानेवाले, मल्लाह। राजस = राजसी ठाट बाट, साहिबी।

डावा कर ऊपर दुसट, कर जीमणो करंत।
सो लगाय मुख सांकतो, मावड़ियो कुचरंत॥ १५॥
चाहे मिनखां चूतियां, नहं निरवाहे बोल।
गुंजा सूं घटतो घणो, मावड़ियां रो मोल॥ १६॥
सूके जेठ मझार सर, तीखा तावड़ियांह।
सूके इम सिंधू सुणे, मुंहड़ा मावड़ियांह॥ १७॥
मावड़ियां मन मांझली, सौ गाड़ां भर सीत।
की ऊँचो माथो करे, पड़िया रहे पलीत॥ १८॥
गरबे फोड़े कुंभगज, घण बल घावड़ियाँह।
पापड़ फोड़ पोमावही, मन में मावड़ियांह॥ १९॥

---

(१५) डावा = बाँयां। दुसट = दुष्ट। जीमणा = दाहिना। सांकतो = लजाता हुआ।

(१६) चूतिया = बेवकूफ। निरवाहे = निबाहता है। गुंजा = चिरमिटी। घणो = बहुत।

(१७) तीखा = तेज। तावड़ियांह = धूप में। सिंधु = वीर रस का राग। मुँहड़ा = मुँह।

(१८) माँझली = मध्य। सीत = ठंड, लज्जा। की = क्या। माथा = सिर। ऊंचो करे = उठावे। पलीत = मैले, नीच। अथवा भूतों की तरह से छिपे रहते हैं।

(१९) गरबे = गर्व करे। कुंभगज = हाथी का कुंभस्थल। घण बल = बहुत बल के साथ। घावड़ियांह = शूर वीर। पोमावही = गर्व करते हैं।

ओछा कुळ में ऊपना, दोभा डावड़ियाह ।
हवळे बोलै होट में, मूरख मावड़ियाह ॥ २० ॥
होस उड़ै फाटै हियो, पड़ै तमाळा आय ।
देखे जुध तसवीर द्रग, मावड़िया मुरझाय ॥ २१ ॥
पीठ तुरस केवाण कर, आस पास रजपूत ।
मावड़िया सोहै नहीं, मुख मूंछां सिर सूत ॥ २२ ॥
दीसै बदन दयामणा, डूबण जोगो डोळ ।
रहे हमेसा राज में, मावड़िया री मोळ ॥ २३ ॥
लाजाळू गुल चिमन में, खगकुळ मांहि बकोट ।
मावड़िया मिनखांमहीं, यां तीनां में खोट ॥ २४ ॥
ज्यांरो जीभन ऊपड़ै, सेणां मांही सेत ।
वांरां कर किम ऊपड़ै, खळां घिरतां बिच खेत ॥ २५ ॥

---

(२०) ओछा = छोटे । ऊपना = उत्पन्न हुए । दोभा = ढीले शरीर-वाले । डावड़ियाह = लड़के । हवले = धीरे ।

(२१) तमाला = आँखों में अँधियारी आना । जुध = युद्ध ।

(२२) तुरस = ढाल । केवाण = तलवार । सिर सूत = सिर पर पगड़ी ।

(२३) दीसै = दिखे । बदन = मुख । दयामणा = दया दिलानेवाला, दीन । जोगो-योग्य । डोल=हाल, चेहरा, मुख । मोल = सस्तापन ।

(२४) लाजालू = लजवंती के पेड़ जिसे छूईमूई भी कहते हैं । गुल चिमन = बाग । बकोट = बुगुला, काक । खोट = खुटाई, दोष । खग = पक्षी ।

(२५) ऊपड़ै = उघड़ती है । सैणा = मित्र मंडली । सेत =

कर कम्पै लोयण झरै, मुख ललरावै जीह ।
मावड़िया जुध में मिलै, पुगतापणरा दीह ॥ २६ ॥
देख सरप ह्वै दादुरा, सब्द कला कर सून ।
पुरख असेंदो पेख ह्वै, मावड़ियां मुख मून ॥ २७ ॥
मुख नहं नूर उछाह मन, बळ नहं कंध विसेष ।
मावड़िया लोयण महीं, रज हंदी नहं रेख ॥ २८ ॥
घूघू ज्यूं घुसियो रहै, मावड़ियो घर मांह ।
ऊठै बाह्वर आवही, तारां हंदी छांह ॥ २९ ॥
हेको काजन ह्वै सकै, आवो संत असंत ।
मावड़िया खिण खिण मता, नवा नवा निरमंत ॥ ३० ॥

साफ, स्पष्ट । खलां = शत्रु से । घिरया = घिरे हुए । खेत = रणभूमि ।

यण = नेत्र । ललरावे = कलराती है । जीह = जिह्वा । पुगतापण = बुढ़ापा । दीह = दिन ।

(२७) दादुरा = मेंडक । शब्द कला = बोलना । कर = से । सून = बंद, शून्य । असेंदो = अजनबी । पेख = देख । मून = मौन ।

(२८) उछाह = उत्साह । कंध = भुजा । रज हंदी = वीरता की, रजोगुण की ।

(२९) घूघू = उल्लू । घुसियो रहै = छिपा रहै । ऊठै = उठ करके । तारांहंदी छांह = रात्रि में ।

(३०) हेको = एक भी । खिण खिण = क्षण क्षण । मता = विचार । निरमंत = बांधता है, करता है ।

मावड़ियो वन मांझलो, सो नह जाय सिकार।
डोळा मिनखी सूं डरै, मूसा ज्यूं मुरदार ॥ ३१ ॥
क्यूं नहं लालच बस करो, बहु हाका विरदांह।
है नहं ऊँचो हत्थड़ो, मावड़ियां मुरदांह ॥ ३२ ॥
मावड़िया मुख ठंकियां, बैसे फाड़े बाक।
नयण सुणें नह बीर रस, रबल घणों दिमाक ॥ ३३ ॥
आसव झड़ी न लागही, भड़ां छकावण भाळ।
कर नह जाणै का पुरुष, मावड़ियां मतवाळ ॥ ३४ ॥
जाय नवोढा सासरे, आंसू नांख उसास।
मावड़िया जावे मुहम, इण विध हुवें उदास ॥ ३५ ॥

---

(३१) बन मांझली = बन में। डोला = नेत्र। मिनखी = बिल्ली। (मिनखीसू—पाठा० मिनकीरां)।

(३२) क्यूं नहं = कितना ही चाहे। बहु हाका = बहुत ज़ोर से बोलकर। बिरदांह = यश गान करो। ऊँचो हत्थड़ो = ऊँचा हाथ, दान देना। मुरदांह = मुर्दों का।

(३३) ठंकिया = छुपाना। बाक = मुँह। दिमाक = मस्तक।

(३४) आसव = शराब। झड़ी न लागही = भले प्रकार न पीवे (शराब)। भड़ां = भट, शूर वीर। छकावण = मस्त करने को। भाल = देखो। कापुरुष = खोटे आदमी। मतवाल = शराब का नशा।

(३५) नवोढ़ा = नव-विवाहिता। नांख = डाल। मुहम = लड़ाई। इण विध = इस तरह।

माथे टोप सनाह तन, कर दसता रिण काज।
मावड़िया सोभै नहीं, सूरा हंदो साज॥ ३६॥
मावडिया दीठां फुरै, मत हिय मांहिं पयट्ठ।
पुरष तणी पोसाखकर, बाई आंण बयट्ठ॥ ३७॥
सेखसली सरखा हुवे, मावड़ियां रे मीत।
पोपां बाई प्रगट हुवै, नवी चलावे नीत॥ ३८॥
मांवड़ियां मुसकल हुवै, सजियां कोप सरीर।
कर थापट कूटे कमल, नाखै नैणां नीर॥ ३९॥

---

(३६) सनाह = कवच। दसता = हाथ का आवरण (लोहे का)। रिण = युद्ध।

(३७) दीठां = देखने से। फुरे = स्फुरण होती है। मत = विचार। पयट्ठ = प्रवेश कर। तणी = की। पोसाख कर = वस्त्र पहिन कर। बाई = स्त्री। आण बयट्ठ = आ बैठी है।

(३८) सेखसली = शेखचिल्ली, मन मोदक खानेवाला। पोपां बाई = एक रानी हुई थी जिसके राज्य में पोल बहुत थी। (शेख चिल्ली—पंजाब में एक फकीर हुआ है जिसकी जाहिरा बातें अनघड़ और बेतुकी होती थीं जैसे उसके दर्वाजे की चौखट पर यह लिखा था कि "अरे बेवकूफ ऊपर क्या देखता है नीचे देख" और नीचे यह लिखा हुआ था "अरे बेवकूफ नीचे क्या देखता है ऊपर देख।" पोपां बाई— एक कुम्हारी खंडेले के राज्य इलाके जयपुर में हुई थी जिसका पोल का राज्य मशहूर है। अंत में वह अपनी ही मूर्खता से शूली पर टँगी थी। उसके राज्य में सब धान २२ पंसेरी बिकता था)।

(३९) सजियां = युद्ध के लिये तैयार होने से। थापट = दो हाथल, थप्पड़। कमल = मस्तक। नाखै = डालै।

विळखीजे तरुणी बदन, कंथ न आयो तीज ।
मावड़ियां आयां मुहम, वदन जाय विळखीज ॥ ४० ॥
लालचियां संतोष ज्यूं, मन हींजड़ा मनोज ।
ऊमर में नहं ऊपजे, इम मावड़ियां मोज ॥ ४१ ॥
हित सूं कमठाकृत हरी, सेवै पुलक सरीर ।
वदन छिपावण देह विच, ते मांगे तदबीर ॥ ४२ ॥
मावड़ियां तन मैणारा, मिटै कदे नहँ मांद ।
मावड़ियां ढूळा मरद, चूळा हंदा चांद ॥ ४३ ॥
मावड़ियो जुध मंडियां, विलखो करे विलाप ।
आड़ा म्हारे आवजो, जणणी रा व्रत जाप ॥ ४४ ॥

---

(४०) विलखीजे = उदास हो । कंथ = पति । तीज = श्रावण शुक्ला या भादों कृष्णा तृतीया ।

(४१) लालचियां = लालचियों को । मनोज = कामदेव । ऊपजै = उत्पन्न होवे । मौज = आनन्द । हींजड़ा = नपुंसक ।

(४२) कमठाकृत हरी = कच्छपावतार । पुलक = प्रसन्न । ते = वे मावड़िया । मांगे तदबीर = बदन छुपाने का उपाय ।

(४३) मैंणरा = मोम के, नाजुक । कदे = कभी । मांद = बीमारी । ढूला = गुड्डा, कपड़े का पुतला । चूला हंदा चाँद = घर में घुसा रहनेवाला (यह लोकोक्ति है—"हांडी के हमीर और चूल्हे के चांद") ।

(४४) जुध मंडियां = युद्ध जुड़े । विलखो = विलख करके । आड़ा = सहाय । आवजो = आवें । जणणी रा व्रत जाप = माता के व्रत और जप ।

तरुणी री पोसाक त्रण, जीवन मूली जांण ।
कलह समैं राखे कनैं, मावड़ियो विण मांण ॥ ४५ ॥
आठां बाटां ऊपड़ै, मावड़िया रो माल ।
चाकर सीखे हरष चित, चोरां हंदी चाल ॥ ४६ ॥
रावळियां रामत समै, मावड़ियो लो माँग ।
तो रतना-पातर तणूं, सखरो लावे साँग ॥ ४७ ॥
मान कियोड़ी महल ज्यूं, बुगलां ज्यूं कम बोल ।
मावड़ियो घर मींडको, पुरुषपणारी पोल ॥ ४८ ॥
रिण नहं भीनी रुधर सूं, मद सं गोंठ मझार ।
मूंछां मावड़िया मुहें, त्रथा कियो विसतार ॥ ४९ ॥

---

(४५) पोसाक त्रण = तीन पोशाक (साड़ी, लहँगा, काँचली) विण = बिना । मांण = मान ।

(४६) आठां बाटां = आठों ही दिशा में । ऊपड़ै = उठता है; खर्च होता है । हरख = हर्ष ।

(४७) रावळिया = एक जाति जो केवल राजपुत्रों के सामने ही खेल तमाशे करती है । रामत = खेल । सखरो = अच्छा । सांग = भेष । तो रतना......सांग = तो मावड़ियां रत्ना पातुरी का अच्छा स्वांग धरे ।

(४८) मान कियोड़ी = मानिनी । महल = स्त्री या नायका । मींडको = मेंडक । पुरुषपणा = पुरुषत्व । पोल = खाली, हीन ।

(४९) रिण = युद्ध । भीनी = भीगी । गोंठ = दावत । मझार = में । मुहें = मुँह पर । कियो विस्तार = बढ़ी ।

पसू पणों पंखी पणूं, सुतर मुरग रे संग ।
मरद पणों महिला पणों, मावड़िया रे अंग ॥ ५० ॥
रात दिवस भींची रहे, मूठी मावड़ियांह ।
ज्यांरे धन किण विध जुड़े, कीरत कावड़ियांह ॥ ५१ ॥
कीरत माजीरी करै, चितकर मंगण चोज ।
इण उपावसूं ऊपजै, मावडियां मनमोज ॥ ५२ ॥
पार पखे राजी प्रजा, पाजी न करे पाप ।
साजी ताजी साहबी, माजीरे परताप ॥ ५३ ॥
मारग आंधी मालणों, जवहर लीधा जांह ।
माजीरो दूखो मती, माथो ऊमर मांह ॥ ५४ ॥

---

(५०) पसू पणों = पशूपन । पंखी पणूं = पक्षीपन । महिला पणों = स्त्रीपन । मरद पणों = मनुष्यपन । शुतर मुर्ग = यह एक पक्षी है जो अफ्रिका में होता है । इसकी गर्दन लंबी होती है और यह दूब और पत्थर खाता है ।

(५१) भींची रहे = बंद रहती है । मूठी = मुट्ठी । कीरत = कीर्त्ति । कावड़ियांह = कावड़ से बोझा ढोनेवाले ।

(५२) कीरत = कीर्ति । माजी = माता । चितकर मंगण चोज = माँगनेवाले चित्त में कपट (चतुराई) धरके । उपाव = उपाय । ऊपजै = होवे । मौज = दातव्यता ।

(५३) पार पखे = पराए पक्ष से । पाजी = दुष्ट । साजी ताजी स्वस्थ बनी हुई । साहबी = ठकुराई ।

(५४) मालणों = चलना । जवहर = जवाहिरात । जांह = जाय । दूखो मती = मत दुखो ।

आय खोलियो आंगणों, माजी जिण दिन मोड़ ।
हेक साथ नव निधि हुई, उण दिन सूं इण ठोड़ ॥ ५५ ॥
जाया माजी रात जस, पीहर हुओ प्रबीत ।
आयां सुसरा आंगणों, निरमल फैली नीत ॥ ५६ ॥
सासू दादी सासुआं, राजी सयल रहंत ।
माजीनूं मीरां कहे, मोटा संत महंत ॥ ५७ ॥
देव महोछव देहरां, परगह संपतपूर ।
आछा कामां ऊपरां, माजीरो मजकूर ॥ ५८ ॥
बटपाड़ा रां वंसनूं, माजी लीधो मार ।
मेलप राखै मान भय; मूंसा सूं मंजार ॥ ५९ ॥
न्याव किया नोसेरवां, सुविहांना सिरदार ।
आज करै माजी इसा, न्याव संदेह निवार ॥ ६० ॥

---

(५५) आंगणें = आँगन में । मोड़ = सेहरा । हेक साथ = एक साथ । इण ठोड़ = इस स्थान पर ।

(५६) जाया = जन्मे । जस = जिस । प्रबीत = पवित्र । नीत = नीति । सुसरा आंगणें = सुसराल ।

(५७) सयल = सब । मीरां = प्रसिद्ध भक्त मीरा बाई ।

(५८) महोछव = महोत्सव । देहरां = मंदिर । परगह = परिग्रह, सांसारिक उपाधि । संपत = संपत्ति । पूर = भरपूर । ऊपरो = पर । मजकूर = जिकर (कीर्ति) ।

(५९) बटपाड़ां = लुटेरे या डाकू। मेलप = मित्रता। मूसा = चूहा।

(६०) नोसेरवां = फारिस का न्यायी बादशाह जो नौशेरवां आदिल नाम से प्रसिद्ध था । सुविहांना = सुघड़, न्यायी, ईश्वरीय न्याय

कीधा माजी न्याव किल, जग मांझल जेताह ।
काजी सुण धिन धिन कहै, विप्र समृतवेताह ॥ ६१ ॥
वारा हरचंद रा वहै, रामराज री रीत ।
कुसमां छाई कनकरां, पुहमी बटे प्रवीत ॥ ६२ ॥
माजी ग्च राखे मतो, सौ गणलां छाणंत ।
असळ आगराई अमळ, जमियो जग जाणंत ॥ ६३ ॥
कोप करण नूं काळका, सरसत करण सलाह ।
पूरण अन अंनपूरणा, भाषे लोक भलाह ॥ ६४ ॥
माजो मांनै वेदमत, सुणै सदा सुरगाह ।
सती आठमी सांपरत, दसमी श्री दुरगाह ॥ ६५ ॥

अथवा सोहवां महापंडित की तरह । निवार = दूर करके । न्याव = न्याय ।

(६१) किल = निश्चय । जेताह = जितने । धिन धिन = धन्य धन्य । समृतवेताह = स्मृत्तिवेत्ता, धर्मशास्त्र के जाननेवाले ।

(६२) वारा = समय । हरचंद रा = हरिश्चंद्र के । वहै = चलते हैं । कुसमां = फूल । कनक रा = सोने के, सुवर्ण के । पुहमी = पृथ्वी ।

(६३) मतो = राय । सौ गळणां छाणंत = सौ गरणों से छानकर, बहुत छान बीन कर । आगराई = आगरे की बादशाही । अमल = हुकूमत ।

(६४) सरसत = सरस्वती । भाखे = कहते हैं । भलाह = भले ।

(६५) सुरगाह = सुरगाथा, कथा । सांपरत = सांप्रत, साक्षात् (माजी को सती और दुर्गा के समान बताया है) ।

सोनारी ईढोणियां, आंगो जळ अबळांह।
गांजण निबळा गामड़ां, सगत नहीं सबळांह ॥ ६६ ॥
सहू दईरा दीकरा, लीला ळाड़े ळोक।
दई हूँत छाना दिवस, सै काटै विण सोक ॥ ६७ ॥
खानाजादां खबर ले, प्रज दुज गो प्रतिपाल।
कर व्रत नित सुक्रत करे, माजी केरे माल ॥ ६८ ॥
बैरांगर हीरा हुए, कुलवंतिया सपूत।
सीपै मोती नीपजै, सब ब्रम्मारा सूत ॥ ६९ ॥
आब अमोलक ऊजळां, सभर गुणां तत सार।
न्याय इसा नग नीपजै, माजी कूख मझार ॥ ७० ॥

---

(६६) अबलांह = स्त्रियां। ईढोणिया = इंडुई। गांजण = गर्जना। गामड़ां = गांव। सगत = शक्ति। सबलाह = बलवान्।

(६७) दई = परमेश्वर, दैव। दीकरा = संतान, लड़के। लाड़े = प्यार करती है, लड़ाती है। लोक = संसार। हूत = से। छाना गुप्त। बिण सोक = बिना शोक के।

(६८) खाना जादां मेवकों की। खबर ले = सहायता करना, पूछताछ करना। दुज = द्विज, ब्राह्मण। केरे = का।

(६९) बैरागर=हीरे की खान। हीरा = भली, अच्छी हीरा। सूत = नियम।

(७०) आब = पानीवाले, आबदार। अमोलक = अमूल्य। ऊजला = श्वेत, शुद्ध। सभर = भारी। ततसार = तत्वसार। न्याय = निश्चय। नग = सन्तान। कूख = कुक्षि, पेट।

पय श्रीमाजीरो पिए, उच्छरियो तू एम ।
पय श्रीगंगारो पिए हंस उच्छरे जेम ॥ ७१ ॥
माजीरा दरसण करै, नित दिन ऊगे नेम ।
थूं न उळंघे थूकियो, कह्यो उळांघे केम ॥ ७२ ॥
रेसम हंदा पोतड़ां, पालणिये पोढाय ।
तो जेहा बेटा तिके, भळे झुळाया माय ॥ ७३ ॥
जगत दिखायो जनम दे, पोष करी प्रतिपाल ।
ईश्वर नूं उपमा दिए, मात तणी मुनमाल ॥ ७४ ॥
जनमे बीछू जगत में, जणणीरो ले जीव ।
तिण गुनाह पनही तलै, सहको हणे सदीव ॥ ७५ ॥
नहं तीरथ जणणीं समो, जणणीं समो न देव ।
इण कारण कीजे अवस, सुभजणणीरी सेव ॥ ७६ ॥

---

(७१) उच्छरियो = बड़ा हुआ, पोषण पाया । एम = ऐसे । जेम = जैसे ।

(७२) दरसण = दर्शन । दिन ऊगे = प्रातःकाल को । थू = तू । केम = कैसे ।

(७३) रेसम हंदा = रेशम के । पालणिये = पलने में । पोढाय = सुलाकर । तो = तेरे । जेहा = जैसे । तिके = जो ।

(७४) नू = को । तणी = की । मुनमाल मुनियों का समाज ।

(७५) तिण = उस । गुनाह = पाप । पनही = जूता । तलै = नीचै । सहको = सब कोई । सदीव = सदैव ।

(७६) नह = नहीं । समो = समान । अवस = अवश्य । सुभ = शुभ । सेव = सेवा ।

लियां रही दस मांस लग, उदरदुखां उतरांह ।
दुख जिण जणणी ने दिवे, कालो मुंह कुतरांह ॥ ७७ ॥
कासीदे कांनां करग, बदो तणीं सुण बात ।
ज्यां जीवानूं जगत में, मुगत समापे मात ॥ ७८ ॥
जितरे जणणी जीवही, वेद प्रकासे बात ।
जितरे गंगादिक तणी, जन उपजे नह जात ॥ ७९ ॥
मात तणो आग्या महीं, सोइज पूत सपूत ।
मात बचन मानै नहीं, कहिए जको कपूत ॥ ८० ॥
मित्र मित्र हितरी कहै, गुर सिस हितरी बात ।
धणी दास हितरी कहै, ज्यूं अतहितरी मात ॥ ८१ ॥
सिद्ध कपिल मुन सारखां, महिमा जाहर कीध ।
जननी हंदो चरण जल, पावन सिर धर पीध ॥ ८२ ॥

---

(७७) लग = तक । दुखां = दुख । उतरांह = उतने । दिवै = देवै । कुतरांह = कुत्तों का ।

(७८) कासीदे = खेंचे या देवे । करग = हाथ । बदी = बुराई । तणी = की । समापे = समर्पित करती है । मुगत = मुक्ति ।

(७९) जितरे = जब तक । गंगादिक = गंगा आदि । जात = यात्रा । उपजै = इच्छा होवै ।

(८०) आग्या महीं = आज्ञा में । जको = उसको । सोइज = वही ।

(८१) गुरसिस = गुरु, शिष्य की । धणी = स्वामी । अत = अति, अत्यंत ।

(८२) सारखां = समान । कीध = की । हंदो = का । पीध = पिया ।

आप आपरी उगतसूं, तीख रचे तवनांह ।
माततणी महिमा कही, जैन वेद जवनांह ॥ ८३ ॥
माततणों धुर देख मुख, पाछे हरि पूजंत ।
जगत महीं जीवे जको, दूजा विच जमदंत ॥ ८४ ॥
समृत पुराणां कहत श्रुत, न्यायादिक मतनेक ।
जणणीरा रिण हूँत जण, ऊरण हुए न एक ॥ ८५ ॥
मात वचन ध्रू मानिया, सारा मिटिया सोक ।
सारा लोकां सूं सिरै, लाभो अवचल लोक ॥ ८६ ॥
मानै तीरथ मातनूं, विमल भाव वणियांह ।
मात भलां सुख मानियो ज्यां पूतां जणियांह ॥ ८७ ॥

---

(८३) आप आपरी = अपनी अपनी । उगतसूं = युक्ति से । तीख = अच्छी । तवनांह = स्तवन या स्तुति में । जैन = जैनी । जवनांह = यवनों में ।

(८४) धुर = पहिले । जमदंत = यम की दाढ़ में या मृतक ।

(८५) समृत = स्मृति । पुराणां = पुराण । श्रुत = वेद । न्यायादिक-षट्शास्त्र । मतनेक = अनेक मत (वाले) । ऋण = कर्ज । जण = जन । ऊरण = उऋण ।

(८६) ध्रू = ध्रुव (भक्त) । मिटिया = मिट गए । सिरै = अच्छा । लाभो = पाया । अवचल = अविचल, अविनाशी, अचल ।

(८७) वणियांह = बने हुए । ज्यां = उन । जणियांह = जन्म दे करके ।

पेट धरे जायो पछै, धवरायो मल धोय।
जिण कारण जगदीस सूं, जणणीं गरवी जोय ॥ ८८ ॥

---

(८८) पेट धरे = पेट में धारण किया। जायो = जन्म दिया। धवराया = स्तन पान कराया। मल = विष्टा। गरवी = भारी, ऊँची। जोय = देखो, जानो

(३) अथ कृपण दर्पण लिख्यते

दोहा

कृपण कहै ब्रहमा किया, मांगण बड़ी बलाय।
विसव वसावण वासतै, फाटक दिया बणाय ॥ १ ॥
फाटक रखवाली करै, फाटक हरै फसाद।
सूंम कहै सुख सूं सुवां, फाटक तणै प्रसाद ॥ २ ॥
कृपण संतोष करै नहीं, लालच आड़े अंक।
सुपण बभीषण सूं मिलै, लिए अजारे लंक ॥ ३ ॥
कृपण संतोष करै नहीं, सौ मण जाणै सेर।
कर टांकी ले काटहीं, सुपना मांहि सुमेर ॥ ४ ॥
मुनि घालै तप जोग बल, सरग कपाटा हत्थ।
वेही कृपण कपाट नूं, ऊघाडण असमत्थ ॥ ५ ॥

---

(१) ब्रहमा = ब्रह्मा। बड़ी बलाय = बहुत दुखदायी। मांगण = माँगनेवाला। विसव वसावण = संसार बसाने को।

(२) फसाद = झगड़ा। सुवां = सोते हैं। तणै = के।

(३) आड़े अंक = अपार। सुपन = स्वप्न में। बभीषण = रावण का भाई विभीषण। अजारे = मुकाते, ठेके। लंक = लंका। (क्योंकि लंका सुवर्ण की मानी जाती है इसलिए कृपण उसे ठेके पर लेने का स्वप्न देखता है।)

(४) टाँकी = छेनी। काटही = काटते हैं। सुमेर = सुमेरु, पर्वत। (सुमेरु भी सुवर्ण का माना जाता है।)

(५) घालै = डालते हैं। सरग = स्वर्ग। हत्थ = हाथ। उघाड़न = खोलने को। असमत्थ = असमर्थ।

भ्रात मित्र जुग जुग भला, नीत प्रसिद्ध निराट ।
जुगल भुजा कर जांणिया, कृपणां जुगल कपाट ॥ ६ ॥
कठण घोर जिण सूं कटी, पंक पहाड़ां गात ।
कृपण कपाटां ऊपरै, होज्यो जाय निपात ॥ ७ ॥
उभै एक कर राखणां, कृपण कहै सिर कूट ।
जाचक जन भीतर धसै, फाटक पड़िया फूट ॥ ८ ॥
डोढ़ो पड़दो देखिये, सूमां घरै सिवाय ।
भीतर जम किंकर बिना, जीव मात्र नहँ जाय ॥ ९ ॥
कृपण बराटक पावियां, नाटक करै निलज्ज ।
सुण जाचक खाटक करै, सब दिन फाटक सज्ज ॥ १० ॥
दरवाजा सूंमा तणां, मूढां तणां हियाह ।
खुलिया माथा पच कियां, सो नंह सांभलियाह ॥ ११ ॥

---

(६) निराट = अत्यन्त ।

(७) कठण = कठिन । जिण सूं = जिससे । कपाटां ऊपरे = किवाड़ों पर । होज्यो जाय निपात = जाकर गिरो । (कवि कहता है कि वह बिजली कृपण के घर पर गिरे ।)

(८) उभै = दोनों (कपाट) । एक कर = इकट्ठे कर । सिर कूट = सिर पीट कर । पड़िया फूट = टूट पड़ने से ।

(९) घरै = घर में । जम किंकर = यम के दूत ।

(१०) बराटक = कौड़ी । खाटक = जबरदस्त । सज्ज = बंद करके ।

(११) मूढ़ा = मूर्खों के । हियाह = हृदय । माथा पच = माथ कूट, अति परिश्रम । सांभलियाह = सुने ।

कृपण हुवै मर कुंडली, संपत बांटे नांहि ।
कहियो चोड़ै कुंडली, मरता भारथ मांहि ॥ १२ ॥

देखीजे सूमां द्रुमां, एकी प्रकृत अभंग ।
जड़ माया घर में जिते, इते प्रफूलत अंग ॥ १३ ॥

जिका न दीधो जनम धर, हेको कण दुज हत्थ ।
नहि बैसीजे नांव में, सायर सूंमा सत्थ ॥ १४ ॥

रयणायर पुत्री रमा, डाटी कर दुरभाव ।
रयणायर ते डूबवै, सूंमा केरी नाव ॥ १५ ॥

कामी फिर बामी कृपण, जादूगर नर चार ।
रात दिवस पड़दे रहै, पड़दा सूं हिज प्यार ॥ १६ ॥

---

(१२) कुंडली = सर्प । चोडै = साफ साफ । कुंडली = नाम विशेष, जन्मग्रह, जन्मपत्री । भारथ = लड़ाई ।

(१३) अभंग = निश्चय (यहाँ वृक्ष के संबंध में उसकी जड़ का पृथ्वी में रहने से और सूम के संबंध में उसके द्रव्य का पृथ्वी में रहने से है)। जिते = जहाँ तक ।

(१४) जिकां = जिसने । हेको = एक भी । कण = दाना । दुज = द्विज । बैसीजे = बैठना चाहिए । सायर = समुद्र । सत्थ = साथ (क्योंकि सूम के पाप से नाव डूब जाती है) ।

(१५) रयणायर = समुद्र, रत्नाकर । डाटी = गाड़ी । डूबवै = डूबती है ।

(१६) बामी = वाममार्गी । पड़दा सूं हिज = परदे से ही ।

सूंमपणो पातक छटो, अपजस तर आंकूर।
कारण इण बीकम करण, इण सूं रहिया दूर ।। १७ ।।
नीत रीत सूमां नहीं, सूमां नहीं सबाब।
सूमां घरे सुगाल में, ँधै रसोडै राब ।। १८ ।।
कीड़ो कण पावे नहीं, अदतारां घर आय।
ओर घरांसूं आणियों, जिको गमाड़े जाय ।। १९ ।।
सूंम नाम लेणो सुतो, मूंग पकावण बेर।
अन दिन उणरी आथ जूं, डाटो भाठो देर ।। २० ।।
एक बरग में ऊपना, सूंम कहै इकसार।
दोलत हरै दकारियो, दोलत थंभ नकार ।। २१ ।।

---

(१७) तर = वृक्ष। आंकूर = अंकुर। इण = इस। बीकम = विक्रमादित्य राजा। करण = कर्ण राजा (विक्रमादित्य और कर्ण ये दोनों बड़े दानी हुए हैं)।

(१८) सबाब = पुण्य। सुगाल = सुकाल। रँधै = पकती है। राब = राबड़ी।

(१९) कण = दाना। अदतारां = कंजूस। ओर = दूसरे। आणियो = लाया हुआ। जिको = वह भी। गमाड़े = खो देता है।

(२०) सुतो = वह तो। बेर = वक्त। पकावण = पकाने (उबालने) के वक्त। अन = अन्य। उणरी = उसकी। आथ जूं = धन जैसे। डाटो = गाड़ना। भाठो देर = पत्थर देकर।

(२१) ऊपना = उत्पन्न हुए। इकसार = एकसा। दकारियो = 'द' अक्षर (देना)। थंभ = थँभानेवाला। नकार = इंकार ('द' और 'न' एक ही वर्ग के अक्षर हैं)।

सूंब सूंब कहै सरब दिन, जाचक पाड़ै बूंब ।
सिद्ध दिगंबर बाजही, ज्यूं धनवंतो सूंब ॥ २२ ॥

आदर चाहै मूढ़ वे, सूंबा रे घर जाय ।
सिर लिखमी रे दी सिला, घर आया दफणाय ॥ २३ ॥

ऊबां जल बल कायरां, बिदरां कुल बिवहार ।
नहीं दबां निरधूमतां, ज्यूं अदवां उपगार ॥ २४ ॥

दियो सबद सुणियां दुसह, लागे तन मन लाय ।
सूंब दियो न करै सदन, परब दियाली पाय ॥ २५ ॥

करतब नहं राजी कृपण, राजी रूपैयांह ।
कडवो दास कुटंबियाँ, प्रामणड़ां पइयांह ॥ २६ ॥

---

(२२) सूंब = सूम । बूंब = पुकार, चिल्लाना । बाजही = कहलाते हैं ।

(२३) लिखमी = लक्ष्मी । दफणाय = गाड़ते हैं । कंजूस लोग प्रायः अपने धन को पृथ्वी में गाड़कर ऊपर पत्थर धर देते हैं ।

(२४) ऊबां = ऊसर । बिदरां कुल बिवहार = विदुरों के कुल में व्यवहार । दबां = अग्नि । निरधूमता = बिना धुएँ के । अदवां = कंजूस । उपगार = उपकार ।

(२५) दियो = देने का । सबद = शब्द । सुणियां = सुनने से । दुसह = दुखी, असह्य । दियो = दीपक । दियाली = दीपमालिका ।

(२६) करतब = कर्तव्य । राजी = प्रसन्न । रूपैयांह = रुपैयों से । प्रामणड़ां पइयांह = पाहुने, अतिथि ।

जावे नहि जाचक घरां, संत महंतां सत्थ ।
मंगल री जणणी मही, अदतारांरी अत्थ ॥ २७ ॥
किया रवाना दोलती, वीसलनंद विगोय ।
कृपण हिया मँह कांगसी, नहि फेरे नर-लोय ॥ २८ ॥
जोड़ा माया कृपण पच, रांधै सुपच अनाज ।
वायस सँचियो मांस वप, कल में नावै काज ॥ २९ ॥
चारण भट्टां बांभणां, वयण सुणावे सूंब ।
थें राजी सनमान सूं, दीधे राचै डूंब ॥ ३० ॥
मन माया लालच लियां, त्रिसलो लियां लिलाट ।
रसण नकार लियां रहै, ओ सूंबां रो घाट ॥ ३१ ॥

---

(२७) घरां = घर पर । सत्थ = साथ । जणणी = माता । अदतारांरी = सूमों की । अत्थ = द्रव्य, अर्थ । (जैसे मंगल की माता पृथ्वी है उसी प्रकार सूमों के द्रव्य की माता भी पृथ्वी ही है) ।

(२८) दोलती = धनवान् । वीसलनंद = बीसलदेव का पुत्र पृथ्वीराज चौहान । विगोय = नाश करके । हिया मंह कांगसी फेरना = हृदय में विचारना । नरलोय = नरलोक ।

(२९) वायस = कव्वा । संचियो = इकट्ठा किया । वप = शरीर । नावै = नहीं आवे । पच = कष्ट उठाकर । रांधै = पकावे (भोजन बनाना) । सुपच अनाज = अच्छा पचनेवाला (राबड़ी या राब) । कल में = संसार में ।

(३०) भट्टां = भाटों को । बांभणां = ब्राह्मणों को । वयण = वचन । दीधे = देने से । राचै = प्रसन्न होते । डूंब = डोम ।

(३१) त्रिसलो लियां लिलाट = ललाट पर तीन सल लिए हुए (जब मनुष्य किसी से घृणा करता है तो ललाट पर तीन सल पड़ते हैं) । रसण = जिह्वा । नकार = नहीं कहना, नटना । ओ = यह । घाट = हाल ।

रत ज्यूं द्दत जाचक रसक, जाचै बे कर जोड़।
ननो भंणे नव नार ज्यूं, मूढ़ क्रपण मुख मोड़ ॥ ३२ ॥
खाधो सोही मीठ है, अग्र जनम किण दीठ।
ऊखाणों अदतां पढ़ै, पूरब पद दे पीठ ॥ ३३ ॥
नार नपुंसकरा घरां, अदतांरे घर अत्थ।
भागहीण भोगे नहीं, देखे परसै हत्थ ॥ ३४ ॥
हरख मिलै आदर करै, पोपै थाल मँगाय।
मीठो उत्तर मोकलै, मीठो सूंब कहाय ॥ ३५ ॥
मिलतो मंगण नूं कहै, मुदै करूं मालूम।
मारग लागो मत टिको, हाजर नाजर सूंम ॥ ३६ ॥

---

(३२) रत = रति। द्दत = धन। जाचक = माँगनेवाला। रसक = कामुक। बे = दो। ननो = नकार। भंणे = कहता है। नव नार = मुग्धा नवोढ़ा नायिका। ज्यूं = जैसे।

(३३) खाधो = भोजन किया। मीठ है = मीठा है। अग्र = आगे। किण दीठ = किसने देखा है। ऊखाणो = दृष्टांत। पूरब पद = पहिले के पद को। दे पीठ = मुँह फेरकर।

(३४) नपुंसकरा घरां = नपुंसक के घर में। अदतांरे = कंजूस के। अत्थ = द्रव्य। भागहीण = भाग्यहीन। परसै = स्पर्श करते हैं।

(३५) हरख = हर्ष। पोपै = खिलाता है। थाल मँगाय = थाली मँगाकर। मोकलै = भेजता है। कहाय = कहलाता है।

(३६) मिलतो = मिलते वक्त। मुदौ = असली बात (मुदैाकरू = गाठा० मुजरो कर)। करूं मालूम = कहता हूँ। मारग लागो = रास्ता ापो। हाजर नाजर = चौड़े धाड़े।

मंगण लारे मंडिया, आगै भागो जाय ।
सुजस कुजस नंह संभले, जंबुक सूंब कहाय ॥ ३७ ॥
जस अपजस जाचक पढ़ै, मांगे चाल विलूंब ।
नहीं चिढ़ै उत्तर न दे, घाम घूंम वो सूंब ॥ ३८ ॥
नदे दिखाई मंगणा, नेड़ोही सो कोस ।
रात दिवस पड़दे रहै, अदता पड़दा पोस ॥ ३९ ॥
म्हैलां बस बस मातरै, मंत्री बस मुरझाय ।
मंगण मिलियाँ रोयदे, चोदू सूंब कहाय ॥ ४० ॥
ऊंमर लग ऊधार री, बाण न छोड़ै बत्त ।
जोर फिरावै जाचकां ऊधारियो अदत्त ॥ ४१ ॥
काढ़ै दोसण कायबां, बातां दिए बिगोय ।
पूछै अरथरु पहलियां, सूंब मजाकी सोय ॥ ४२ ॥

---

(३७) मंगण = मांगनेवाले । लारे = पीछे । मंडिया = लगे । संभले = सुनता है । जंबुक = गीदड़ ।

(३८) चाल विलूंब = अँगरखी का पल्ला पकड़कर । चिढ़ै = चिढ़ता है । घांम घूम = पूर्ण ।

(३९) मंगणा=मागनेवालों को । नेड़ो = निकट । पड़दा पोस = छिपकर बैठनेवाले ।

(४०) म्हैलां बस = महिला के वशीभूत । बस मातरै = माता के पास रहै । रोयदे = रो देता है । चोदू = कायर ।

(४१) ऊमर लग = उमर भर । ऊधाररी = फिर देने की, बाकी रखने की । बाण = आदत । बत्त = बात । जोर = बहुत । जाचकां = याचकों को । अदत्त = सूम (इसको उधारिया सूम कहते हैं) ।

(४२) काढ़ै = निकाले । दोसण = दूषण । कायबां = कविता में ।

अरध चंद हेकां दिए, हेकां गाल हजार।
हेकां कुतकी हे दुवै, एह दुष्ट अदतार ॥ ४३ ॥
कपणां नूं कपणां तणों, रूप दिखावण काज।
ग्रंथ कपण दर्पण कियो, रीझावण कविराज ॥ ४४ ॥
कपण कपण दर्पण निरख, प्रकृति न तजै प्रबंध।
भालो नवमां भेद में, जिको कहावै अंध ॥ ४५ ॥

दिए विगोय = निंदा करते हैं। पहलियां = पहेलियाँ। मजाकी = ठट्ठेबाज।

(४३) अरधचंद = गर्दनी। हेकां = एक को। गाल = गाली। कुतकी = छोटी लकड़ी। हे दुवे = देता है। एह = वह। अदतार = कंजूस।

(४४) नूं = को। तणो = का। दिखावण काज = दिखाने के लिये। रीझांवण = रिझाने को। कविराज (बाँकीदास)।

(४५) निरख = देखकर। प्रकृति न तजै प्रबंध = अपने स्वभाव को न छोड़ै। भालो = देखो। (यह अंधकृपण है)।

(४) अथ मोह मर्दन लिख्यते

दोहा

नारायण देवां मंही, ज्यूं तारायण चंद ।
कमला पगचंपी करै, बंक संक तज बंद ॥ १ ॥
खग इण साकरखोररे, संगन साकर गूंण ।
सब दिन पूरे सांइयां, चांच दई सो चूंण ॥ २ ॥
आलस तज निज गरज अब, भज त्रभुयण भूपाल ।
पिए निरंतर आय पय, बांका काल बिडाल ॥ ३ ॥
तट गंगा तपियो नहीं, नह जपियो नरसीह ।
जड ते आरण धमण जिम, दम गमिया बहु दीह ॥ ४ ॥

---

(१) तारायण = तारागण । कमला = लक्ष्मी । बंक = बाँकीदास। संक तज = शंका दूर करके या निश्चय के साथ । बंद = नमस्कार कर ।

(२) खग = पक्षी । साकरखोर = शक्कर खानेवाला, मधुर फल-भक्षी । गूंण = बोरी । सांइयां = स्वामी, परमेश्वर । चूंण = आटा, अन्न या चुग्गा ।

(३) त्रभुयण = त्रिभुवन । आय = आयुष्य । पय = दूध । बिडाल = बिलाव ।

(४) जड = जड़, मूर्ख । आरण = लुहार की भट्टी । धमण = धौंकनी । दम = श्वास । गमिया = खोए । दीह = दिवस ।

बीता उमर बरसड़ा, बातां करता बंक।
क्यूंहो नह साधन कियो, उर जमरो आतंक ॥ ५ ॥
पग पग जम डाका पड़ै, बांका धार विवेक।
हुतभुक विच जल खाख ह्वै, उडणों हे दिन एक ॥ ६ ॥
रोम रोम आमय रहे, पग पग संकट पूर।
दुनियां सूं नजदीक दुख, दुनियां सूं सुख दूर ॥ ७ ॥
नीचो जावै नीर ज्यूं, जग नव नहचे जांण।
सकल पदारथ साररी, ह्वै खिण खिण में हांण ॥ ८ ॥

सोरठा

तन दुख नीर तड़ाग, रोज विहंगम रूखड़ो।
विसन सलीमुख बाग, जरा बरक ऊतर जबल ॥ ९ ॥

---

(५) बरसड़ा = वर्ष। उर = हृदय में। जम = यमराज के। आतंक = भय (का)।

(६) डाका = डकैती। धार = धारण कर। हुतभुक = हुताशन, अग्नि। खाख = भस्म।

(७) आमय = रोग। पूर = पूर्ण।

(८) नव = नीचा। साररी = सत्त्व की, शक्ति की। खिण खिण = क्षण क्षण। हांण = हानि।

(९) तड़ाग = तालाब। रोज = शोक। विहंगम = पक्षी। रूखड़ो = वृक्ष। विसन = व्यसन, भोग विलास। सलीमुख = शिलीमुख, बाण। जरा = बुढ़ापा। बरक = बिजली। जबल = पहाड़।

भावार्थ—दुःख रूपी जल से भरा हुआ यह शरीर रूपी तालाब है; अथवा शोकरूपी पक्षी के लिये यह वृक्ष है। संसार के झगड़े और दुःखों का यह बाग है, इस आयु का बुढ़ापा बिजली की चमक है अथवा पहाड़ी का उतार है।

दोहा

केस जरा धोवण करे, धोला अतही धोय ।
अंतक राऐ ऐंचतां, हात न मैला होय ॥ १० ॥
रूडे तीरथराजरे, नित जल कीजे न्हान ।
तोपिण न हुए पाकतन, मूल पुरीष मकान ॥ ११ ॥
अटकाई नह आयबल, आई जरा अगूढ़ ।
आसी जदतू अटकसी, मान किसी विध मूढ़ ॥ १२ ॥
जग में बांछे जीवणो, सब प्राणी समुदाय ।
हटकर नर उणांनू हरे, जुलम कह्यो नहि जाय ॥ १३ ॥
हणें पसू तिण खिण हुए (चे), हिए दयारी हांण ।
थाली मांह मसांण घट, गिलहो छोड़ गिलान ॥ १४ ॥
उदर भरण घर घर अटे, रटे नहीं श्रीराम ।
सूंस करे कवड़ी सटे, ते गुण घटे तमाम ॥ १५ ॥

---

(१०) धोला = श्वेत । अंतक = काल । राऐ = राजा । ऐंचतां = खींचते । हाथ न मैला होय = हाथों में श्यामता नहीं लगती है ।

(११) रूडे = अच्छा । तीरथराज = प्रयाग । मूल = असल में । पुरीख = पुरीष, मैला ।

(१२) अटकाई = रोकी । आयबल = आयुष्य के बल । अगूढ़ = प्रकट । आसी आवेगी । अटकसी = अटक जावेगा ।

(१३) बांछे = चाहता है । जीवणों = जीना । हरे = हरण करना ।

(१४) हणे = मारे । तिण खिण = उस वक्त । हाण = हानि, नाश । मसाण = श्मशान, मुर्दा । गिलही = खाता है । गिलांन = ग्लानि ।

(१५) अटे = भटकता । सूंस = सौगंध । कवड़ी = कौड़ी । सटे = वास्ते, बदले में । ते = तिससे ।

अंध कूप संसार ओ, भीतर काल भुजंग।
बांछे सुख नर ऐथ बस, सबल अविद्या संग ॥ १६ ॥
गात संवारण में गमे, ऊमर काय अजांण।
आखर प्राण प्रमूक ओ, खाख हुसी मल खांण ॥ १७ ॥
हातां ठाली हालणों, जांझी संपत जोड़।
मोत सरीखो मनखरे, खलक महीं नहं खोड़ ॥ १८ ॥
चरणां आठां चालियो, जंगलरी रुख जाय।
पुरष हूत दूंणूं पसू, अंतक कीधो आय ॥ १९ ॥
नह बहमन नोसेरवां, अफरास्याब न ऐथ।
फरेदून नमरूद फिर, कयूमर्स गो कैथ ॥ २० ॥

---

(१६) ओ = यह। ऐथ = यहाँ पर। सबल अविद्या संग = सबल अविद्या के साथ।

(१७) गात = शरीर। गमे = खोए। अजाण = अज्ञानी। आखर = अंत में। प्रमूक = निकलकर। मल खांण = मल की खान।

(१८) ठाली = खाली। हालणों = चलना। जांझी = बहुत सी। सरीखी = जैसी। मनखरे = मनुष्य के। खलक = दुनिया। खोड़ = ऐब।

(१९) आठां = आठ। हूत = से। दूंणूं = दुगुना। अंतक = काल। जब मनुष्य मरता है तो ४ आदमी उठाकर श्मशान में ले जाते हैं, उनके ८ पाँव होते हैं और चौपाए या पशु के ४ ही पग होने से उस वक्त मनुष्य दुगुना पशु हो जाता है।

(२०-२१) बहमन, नौशेरवाँ, अफर्सयाब, फरीदूं, नमरूद, कयूमर्स, शहरयार, मनोचेहर, कैकाऊस, जुहाक, सुलेमान और जमशेद

सहरयार मीनोचहर, कैकाऊस जुहाक।
सुलेमान जमसेदनूं, फेस गयो जम फाक ॥ २१ ॥

जहां पहलवां जीभ सूं, केकाउस कहियोह।
अंतक केहर अगर ओ, रुस्तम नंहं रहियोह ॥ २२ ॥

ताजदार बैठो तखत, रज में लोटे रंक।
गिणे दुनांनूं हेक गत, निरदय काल निसंक ॥ २३ ॥

जम हथ्था फुरती जिका, बरणो कवण बणांय।
पोंहचे मारण प्राणिया, जल थल अंबर जाय ॥ २४ ॥

फारस देश के बादशाहों के नाम हैं। वे अब कहां हैं, उनको जम (काळ) खा गया। नमरूद बड़ा घमंडी था, अंत में पिस्सू उसके मस्तक को खा गए जिससे वह मरा। ऐसे ही जुहाक बड़ा ज़ालिम था तो उसके दोनों कंधों में से सर्प निकले जिनके डस लेने से वह मर गया। फेस = पीसकर। ऐथ = यहां। गो = गए। कैथ = कहां।

(२२) जहां पहलवां = दुनिया में पहळवान। अंतक केहर = कालरूपी सिंह। अगर = आगे। रुस्तम = पहळवान का नाम प्रसिद्ध है। केकाऊस = बादशाह का नाम।

(२३) ताजदार = बादशाह। रज = धूल। रंक = दरिद्री। दुनांनूं = दोनों को। हेकगत = एक गति से, एक सा।

(२४) जमहथ्था = यमदूतों के हाथ। बणाय = बनाकर। अंबर = आकाश। अर्थात् जळचर, थलचर और नभचर, काल किसी को भी नहीं छोड़ता है या जळ थल आकाश सब जगह उसकी पहुँच है।

पंथ असेंदे पूगणो, अलगो घणों अकथ्थ।
ठहे विण जाण्यों हालणों, संबल (जा) विण सथ्थ ॥ २५ ॥

वसता हरिया बाग बिच, होती रोस हजार।
वसिया उहीज बांकला, माढू ग्राम मझार ॥ २६ ॥

नित मंगल होता नवा, बहु दल दूर बलाय।
वसिया उहीज बांकला, जंगल माझल जाय ॥ २७ ॥

काचो जल भरियो कलस, माझल माले मीन।
जांणे निज चिरजीवणों, लोकां आमत लीन ॥ २८ ॥

है झूटो सोचो हिए, अखलेश्वर री आंण।
मत अपणाओ माढुआं, जगनू सांचो जाण ॥ २९ ॥

---

(२५) असेंदे = अज्ञात । पूगणो = पहुँचना । अलगो = दूर । घणो = बहुत । अकत्थ = कहने में नहीं आवे । हालणों = चलना । संबल जा = सँभल जा । विण सत्थ = बिना साथ के ।

(२६) रोस = रोश, आराम । उहीज = वही । बांकला = बाँकीदास । माढू = मनुष्य । मझार = बीच ।

(२७) बहु दल = बहुत सेना । दूर बलाय = आफत से दूर । मांझल = बीच में ।

(२८) मालै = खेलती है । लोकां = दुनिया । आमतलीन = यह समझ रखा है ।

(२९) अखलेश्वर = परमात्मा । आंण = दुहाई, शपथ । अपणाओ = प्रीति करो । माढुआं = मनुष्यो ।

हिल मिल सब सूं हालणों, ग्रहणों आतम ग्यान।
दुनियां में दस दोहड़ा, माहू तू मिम्झमान ॥ ३० ॥
र थोड़ी ऊमर रही, काय न छोड़े कूड़।
हिय अंधा तूं नांख हब, धंधा ऊपर धूड़ ॥ ३१ ॥
आगल सुरग कपाट अघ, दोजग अगुओ देख।
संपत लता कुठार सम, विपत लता घण वेष ॥ ३२ ॥
वीरत कीरत बंस वित, मत मोजां गुण मांन।
संप सुलच्छण धरम सुष, ठहेयां अघ सूं हाण ॥ ३३ ॥
मर सूके नह संचरे, बांका पही विहंग।
किणरे चाले संग कुण, सब स्वारथ रे संग ॥ ३४ ॥
जंतु भषे अथवा जलै, कै पड़ियो रह जाय।
किल भिसटा भसमी क्रमी, इण नर तन सूं थाय ॥ ३५ ॥

---

(३०) हिलमिल = प्रीतिपूर्वक। हालणों = चलना या रहना। ग्रहणो = ग्रहण करना। दीहड़ा = दिन। मिम्झमान = मिहमान।

(३१) कूड़ = झूँठ। हब = अब। धूड़ = धूल।

(३२) आगल = रोक। सुरग कपाट = स्वर्ग के किवाड़। दोजग = दोज़ख, नरक। घणवेष = मेघ समान।

(३३) वीरता, कीर्ति, कुल और धन के अभिमान के पाप से संपत्ति, सुख, सदाचार और धर्म की हानि होती है।

(३४) संचरे = आता है। पही = पथिक। विहंग = पत्ती। किणरे = किसके। कुण = कौन।

(३५) कै = या। पड़ियो = पड़ा। किल = निश्चय। भिसटा = मैला। क्रिमी = कीड़ा।

कारण विण जगसूं करै, आठ पोहर उपगार ।
जाणीजे सुरतर जिके, मानव लोक मझार ॥ ३६ ॥
प्राण छते जीवे पुरष, कासूं ज्यांरी कांण ।
प्रांण गयां जीवे पुरष, ज्यों जीवणों प्रमाण ॥ ३७ ॥
आप नांम इल ऊपरां, रसना राघव नाम ।
रूड़ो विधसूं राखियो, पुरषां जकां प्रणाम ॥ ३८ ॥
जीव दया पाली जकां, उजवाली निज आव ।
बनमाली कीधो बलू, पड़ी सुराली पाव ॥ ३९ ॥

---

(३६) विण = बिना । सुरतर = कल्पवृक्ष ।

(३७) छतां = मौजूद रहते । कासूं = क्या । कांण = बड़ाई ।

(३८) आपनांम = अपना नाम । इल = पृथ्वी । रूड़ी = अच्छी । जिकां = वेही ।

(३९) पाली = पालन की । उजवाली = पवित्र बनाई । आव = आयुष्य । बनमाली = श्रीकृष्ण । बलू = साथी या सहायक । सुराली = देवताओं की पंक्ति ।

(५) अथ चुगलमुखचपेटिका लिख्यते

दोहा

सगत सुखीकर सेवगां, अखिल जगत ओछाड़ ।
महिषासुर ज्यूं मारजे, चुगल त्रसूलां चाड़ ॥ १ ॥
ठग कामेती ठेठ गुर, चुगल न कीजे सेण ।
चोर न कीजे पाहरू, ब्रहसपती रा वेण ॥ २ ॥
डूंम न जांणे देवजस, सूंम न जांणे मोज ।
मुगल न जांणे गो दया, चुगल न जाणे चोज ॥ ३ ॥
चुगलां जीभ न चालही, पर उपगार प्रसंग ।
नह नीपजही नीलसूं, राज ऽंसरो रंग ॥ ४ ॥

चपेटिका = चपत, थप्पड़ ।

(१) सगत = शक्ति, देवी । सेवगां = सेवक । ओछाड़ = रक्षा, रक्षक । ज्यूं = जैसे । त्रसूलां = त्रिसूल की । चाड़ = चढ़ाकर या चोट ।

(२) कामेती = कामदार । ठेठ = मूर्ख । सेंण = मित्र । पाहरू = पहरा देनेवाला, जासूस । ब्रहस्पति = नीति शास्त्र का आदिकर्त्ता । वेण = वचन ।

(३) डूंम = ढोली, डोम । देवजस = ईश्वर की स्तुति । मौज = आनंद, दातव्यता । मुगल = मुसलमान । गोदया = गोरक्षा । चोज = रहस्य ।

(४) चुगलां = चुगलखोरों की । पर उपगार = परोपकार । नीपजही = पैदा होता है ।

चरचा करतां चुगलसूं, प्रकृत हुवे परतंत।
चुगली कानां सुणणसूं, मैलो व्हे गुर मंत ॥ ५ ॥
श्रीदसरथ दसरथ सुतन, पीथल मूंज पंवार।
कुंण कुंण डहकाणां नहीं, बस चुगलां वापार ॥ ६ ॥
चुगल बधक गुरु-सेजगत, चोर कृपण गुण चोर।
कुंण घटतो बधतो कवण, एकण गिरर मोर ॥ ७ ॥
रोल बिगाड़े राजनूं, मोल बिगाड़े माल।
सने सने सिरदाररी, चुगल बिगाड़े चाल ॥ ८ ॥
चुगल फिरंगी अत चतुर, वियातणां बखांण।
पांणी मांहे पलक में, आग लगावे आंण ॥ ६ ॥

---

(५) प्रकृत = प्रकृति, स्वभाव। परतंत = परतंत्र। सुणणसूं = सुनने से। गुर मंत = गुरु और मित्र।

(६) पीथल = पृथ्वीराज चहुवान। मूंज = धारा नगरी का परमार राजा मुंज। कुंण कुंण = कौन कौन। डहकाणां = बहकावट में आए। वापार = क्रिया।

(७) बधक = घातक। गुरु-सेजगत = गुरु-पत्नी से व्यभिचार करनेवाला। कुंण = कौन। बधतो = अधिक। एकण = एक ही। मोर = पत्नी।

(८) रोल = दिल्लगी, उपद्रव। मोल = सस्तापन। सने सने = धीरे धीरे।

(६) फिरंगी = अँग्रेज। दारू = (शराब) निकालने का यंत्र। तणा = की। बखांण = बड़ाई। पलक में = क्षण में। आंण = आ करके।

साह दुकानां चोरटा, साहब कांनां चाड़ ।
लागे बित मत हर लिए, बे सोभा का फाड़ ॥ १० ॥
साहिबसूं दाखे सुखन, सत पुरषां उरसाल ।
चुगलां आहिज चाकरी, चुगलां आही चाल ॥ ११ ॥
लोक चुगल कांने लगे, घू घू बोल्यो गेह ।
भायां सूं भेलप नहीं, विपत लिखो त्यां वेह ॥ १२ ॥
करण रसायण कडछिया, हरिचिरतां हंसियाह ।
चुगलांने गणिया चतुर, बने गिरे बसियाह ॥ १३ ॥
करे न चुगलो कांकरो, चुगल दिराणों नाम ।
विषम अंगारा चिलम बिच, जले तेण अठजाम ॥ १४ ॥

---

(१०) साह = साहूकार । दुकानां = दुकान पर । चोरटा = चोर । चाड़ = चुगल । साहब = मालिक । वित = धन । मत = बुद्धि । फाड़ = बिगाड़नेवाले ।

(११) दाखे = कहना । सुखन = बात । पुरखां = पुरुषों के । उरसाल = हृदय का साल । आहिज = यही । आही = यही । चाकरी = नौकरी ।

(१२) घू घू बोल्यो गेह = घर पर घू घू बोला । (कहावत है कि जिस घर पर उल्लू बोलता है उस पर आफत अवश्य आती है ।) भेलप = मिलाप । वेह = विधाता ।

(१३) करण रसायण कड़छिया = सोना बनाने को अधीर, रसायनी । हरिचिरतां = हरिचरित्र । हंसियाह = हँसनेवाले । बने गिरे बसियाह = वन पहाड़ों में बसते हैं ।

(१४) कांकरो = कंकर । चुगल = चिलम में रखने का कंकर ।

सुणणहार रा श्रवणसूं, सुखन बंधे नह सोर।
चतुराई चुगलां तणी, जग में दीठी जोर ॥ १५ ॥
नरक समो दुख-थल नहीं, बाडव समो न ताप।
लोभ समो ओगण नहीं, चुगली समो न पाप ॥ १६ ॥
तन धारे बोछण तणों, जग चुगलांरी जीह।
आठ तरफ खावे उदर, दै छोनां दुख दीह ॥ १७ ॥
पनग लड़ो कीड़ा पड़ो, सड़ो झड़ो दुख संग।
जग चुगलांरी जीभड़ी, वायस भखो विहंग ॥ १८ ॥
बुरी चुगल मुख में बसे, आछीरो नँह अंग।
माखी बैसे स्वानमुख, भूल न बैसे अंग ॥ १९ ॥

दिराणों = दिया । विषम अंगारा = तेज आग। अठजाम = आठों पहर। तेण = इसलिए।

(१५) सुणणहार = सुननेवाले। सुखन = बात। बंधे नहसोर = चुपके से लग जावे। दीठी = देखी। जोर = जबरदस्त।

(१६) दुखथल = दुख की जगह। बाडव = अग्नि। ताप = गर्मी। ओगण = अवगुण।

(१७) बीछण = मादा बिच्छू। जीह = जीभ। आठ तरफ = हर तरफ। दै छोना = डंक मारकर। दुख दीह = दुख देती है (दै... दीह पाठा०–दै छाना दुख दीह—छाना = गुप्त। दीह = दिन)।

(१८) पनग = पन्नग—सांप। लड़ो = डसो। झड़ो = गिर पड़ो। जीभड़ी = जिह्वा। वायस = कौआ। विहंग = पक्षी। भखो = खाओ।

(१९) बुरी = बुराई। आछीरो = भलाई का। नँह = नहीं। भूल न बैसे = भूलकर भी नहीं बैठता है। (कुत्ता मैली वस्तु खाता और

मात हूंत अधिकी मया, करै चुगल विधकेंण।
मल वा करसूं मेटही, भ्रौ रसणां अग्रेण ॥ २० ॥
नेह निवांणे नांखियां, चुगलो नहिं चिकणाय।
लाखां गुण कर देखलो, वह धाँ नँह बंधाय ॥ २१ ॥
नायक माने चुगल नूं, परगह करै पुकार।
मांहरा सिररामोड़नूं, कर बोलो करतार ! ॥ २२ ॥
मूढ जिके गुरु मंत्र ज्यूं, चुगली श्रवण सुनंत।
राग तान रीझल नहीं, ढोलो सीस धुणंत ॥ २३ ॥

मक्खी का भी मैली चीज़ से प्यार होता है, भँवरा फूल पर ही बैठता है।)

(२०) मात = माता भी। हूंत = से। मया = कृपा। विधकेण = किस प्रकार। मल = मलमूत्र। वा = वह। मेटही = साफ करती है। श्रौ रसणा अग्रेण = जीभ के अग्रभाग से। (चुगली खाने को अष्टा खाना भी कहते हैं।)

(२१) नेह = तेल, स्नेह। निवाणे = जलाशय में, मेल करने को। नाखियाँ = डालने से, लगाया। चुगली = चोटी। गुण = उपकार, डोरी। धाँ = किसी तरह। नंह बंधाय = नहीं बँधती है। (मित्र नहीं होता है।) चिकणाय = मुआफिक होना, चिकना होना।

(२२) नायक = सर्दार। माने चुगलनूं = चुगल की बात मानता है। परगह = पास के लोग। मांहरा = हमारे। सिररामोड़नूं = मालिक को। बोलो = बहरा।

(२३) जिके = जो। ज्यूं = समान। रीझल = रिझानेवाली। ढोलो = स्वामी। धुणंत = हिलाता है। (राग, तान को न समझने-वाला सिर हिलावे तो मूर्ख कहाता है ऐसे ही चुगल की बातों पर रीझनेवाला मूर्ख है।)

साहिब चुगल समान है, सो इज बुरी सुणांत ।
श्रोता बकता होत सम, भणिया लोक भणांत ॥ २४ ॥
मातारा कुच हूंत मुख, लड़को हरख लगात ।
मूरख कान लगाड़ मुख, एम चुगल उमगात ॥ २५ ॥
मिहल विछीया चुगल मुख, नायक कांन लगांह ।
भूषणगण मांणस भला, मिलही च्यार मंगांह ॥ २६ ॥
तखत दिली बेसण तणों, मन मांझल मुगलांह ।
मालक श्रवणें देण मुख, चाह रहै चुगलांह ॥ २७ ॥
चिड़ो बचांरी चांच में, चांच दिवै भर चार ।
दुरजन मुख इण विध दिवै, मूरख श्रवण मझार ॥ २८ ॥

---

(२४) साहिब = मालिक । बुरी = चुगली । वकता = वक्ता, कहनेवाला । भणिया = विद्वान् । भणांत = कहते हैं ।

(२५) मातारा = माता के । कुच = स्तन । हूंत = से । लड़को = बालक । हरख = हर्षित होकर । लगाड = लगाकर । एम = ऐसे । उमगात = प्रसन्न होता है ।

(२६) मिहल = स्त्री । विछीया = बिछिए । कान लगांह = कानों के लगने से । च्यारमगांह = हर जगह । (दोहे का अर्थ संदिग्ध है ।)

(२७) बेसण तणी = बैठने की । मांझल = में । मुगलांह = मुगलों के । श्रवणें = कान में । चाह = इच्छा । चुगलांह = चुगलों के ।

(२८) चिड़ो = चिड़िया । बचांरी = बच्चों की । चांच दिवै भर चार = चोंच में चुगा भरकर देती है । इण विध = इसी प्रकार । मझार = में ।

चुगलो उगलो चीज है, चुगलो है चरकीन।
काग हुवै कै कूथरो, इणरे रस आधीन ॥ २९ ॥
जग मांझल चुगली जिसो, हींण विसन अनहैन।
विण चुगली भुगते विथा, चुगली कीधां चैन ॥ ३० ॥
करे दान कुरखेत में, मंजन करे प्रयाग।
मरे चुगल कासी मही, मिटे न दोजख माग ॥ ३१ ॥
अंबुजसुतनूं ओलभो, दुखी हुए जग दीध।
जाणो जिणंरी जीभ में, किसतूरी नँह कीध ॥ ३२ ॥
कागां केरी चांच ज्यूं, चुगलां केरी जीह।
विसटा ज्यूं परची बुरी, चूंथे सबही दीह ॥ ३३ ॥

---

(२९) उगली चीज = उल्टी, वमन । चरकीन = पाखाना । कूथरो = कुत्ता ।

(३०) जग मांझल = संसार में । जिसो = जैसा । हींण = हीन, बुरा । विसन = व्यसन । अनहैन = दूसरा नहीं है । विण = बिना । विथा = व्यथा । कीधां = करने से । चैन = सुख ।

(३१) कुरखेत = कुरुक्षेत्र । मंजन = स्नान । दोज़ख़ = नरक । माग = मार्ग ।

(३२) अंबुजसुत = ब्रह्मा । ओलभो = उपालंभ, उलहना । दीध = दिया । जाणी = जान कर भी । जिणरी = जिसकी चुगल की । जीभ में = जिह्वा में । किसतूरी नहकीध = कालिख नहीं की ।

(३३) केरी = की । ज्यूं = जैसी । जीह = जीभ । विसटा = विष्ठा । परची = दूसरे की । बुरी = बुराई । चूंथे = चूँथना, गूँधना । दीह = दिन ।

सनमुख अत मीठा सबद, मेह समैंरो मोर।
उगलै विष परपूठ ओ, चुगल दई रो चोर ॥ ३४ ॥
ऊंडा जल सूकै अवस, नीलो बन जल जाय।
चुगल तणां पगफेर सूं, बसती ऊजड़ थाय ॥ ३५ ॥
छाली हंदा कांनडा, एवालां आधीन।
बस चुगलांरे सरब विध, कांन सठां इम कीन ॥ ३६ ॥
पर अकाज करबो करै, सदा नयण कर सैन।
चुगल जठे नँह चानणो, चुगल जठे नँह चैन ॥ ३७ ॥
चुगली विसतारत चुगल, सांप्रत होय सचेत।
सो मुरदार सरीररी, लट मुख मांझल लेत ॥ ३८ ॥

---

(३४) समैंरो = समय का। उगलै = निकालता है। परपूठ = पिछाड़ी। ओ = वह। दई रो = देव का (ईश्वर का)।

(३५) ऊंडा = गहरा। अवस = अवश्य। नीला = हरा। पग-फेरसूं = पग पड़ने से। थाय = हो जाती है।

(३६) छाली = बकरी। हंदा = के। कानड़ा = कान। एवालां = ग्वालों के। बस चुगलांरे = चुगलखोरों के वश। कांन सठां = मूर्खों के कान।

(३७) अकाज = अनर्थ। करबो करै = किया करता है। नयण-कर = नैन के। सैन = संकेत। जठै = जहाँ या वहाँ। चानणों = प्रकाश। चैन = सुख।

(३८) विसतारत = फैलाते हुए। सांप्रत = सचमुच। होय सचेत = जान बूझ करके। मुरदार = मृतक। लट = क्रीड़ा। मुख मांझल = मुख में।

चुगली करतां चुगलरा, जुग होटड़ा जुड़ंत ।
मल नांखण जांणे मिले, दोय ठीकरा दंत ॥ ३९ ॥
चुगल अपूरब चीज है, जिणनूं लीधी जांण ।
अवरां कांने लागही, उडही अवरां प्रांण ॥ ४० ॥
दियां ओलभो हँस दिए, नीची निजर निहाल ।
सूंस करै गालां सहै, चुगल बड़ो चिरताल ॥ ४१ ॥
सफरी पकड़ण सांतरो, बैठो ढब बुगलांह ।
कथा बुरी करबा तणी, चोखो ढब चुगलांह ॥ ४२ ॥
जो सुख चाहो जगत में, लच्छ धरम सुखलोय ।
चित्र मंडाणां चुगळरो, मत देखो मुख कोय ॥ ४३ ॥

---

(३९) जुग होटड़ा = दोनों होठ । जुड़ंत = मिलते हैं । मलनाखण = विष्ठा डालने को । जांणे = माने । ठीकरा = मिट्टी के बर्तन के टुकड़े जिनसे स्त्रियाँ प्रायः मल उठाया करती हैं ।

(४०) जिणनू = जिसको । लीधो जांण = जान लिया है । अवरां = औरों के । उड़ही = उड़ते हैं । चीज = चील (पाठा०) ।

(४१) ओलभो = उलहना । निहाल = देखकर । निजर = निगाह । सूंस करै = शपथ खाता है । गालां सहै = गालियाँ सहता है । चिरताल = चरित्रवाला अर्थात् छली ।

(४२) सफरी = मछली । पकड़ण = पकड़ने को । सांतरो = तैयार । चोखो = अच्छा । ढब = रीति । चुगलांह = चुगलों को ।

(४३) सुख = मुद (पाठा०) । लच्छ = लक्ष्मी । लोय = लोक । चित्र मंडाणां = चित्राम के । कोय = कोई ।

करै चाड़ पर काचड़ा, अठी उठी नूं ईख ।
पगबिच हाडक परछियां, तिणसूं स्वान सरीख ॥ ४४ ॥
नेड़ा बेसां जाय नित, सीगो मित्र समान ।
क्यूं मोनें गुर ना कहो, किल फूंका जग कान ॥ ४५ ॥
चित दे बातां चुगलरी, सुणजे कर सनमान ।
ऊमर में नँह ऊपजे, कीडांरो दुख कान ॥ ४६ ॥
करै सरबरा काचड़ा ?, स्याल किसूकी सीह ।
कांधा सेथी टूट कर, जमों पड़ो वा जीह ॥ ४७ ॥
मुख ओड़ीरे मांहिले, पर काचड़ा पुरीष ।
पटकै रोडी श्रवण पर, से चंडाल सरीष ॥ ४८ ॥

---

(४४) चाड़=चुगल । पर=पराई । काचड़ा=बुराई । अठी उठीनूं ईख=इधर उधर देखकर । हाड़क=हड्डी । परछियां=पकड़े हुए । तिणसूं=इससे । सरीख=समान ।

(४५) (चुगल कहता है) नेड़ा बेसां=पास बैठते हैं । सीगो= संबंध । मोनें=मुझको । किल=निश्चय । फूंकां=फूंकते हैं । (कन-फुँके गुरू होते हैं अर्थात् गुरू कान में मंत्र सुनाता है ।)

(४६) ऊमर में=उमर भर । नँह ऊपजे=नहीं उत्पन्न होवे । कीडांरो=कीड़ों का । (अभिप्राय है कि चुगल की बातों से कान के कीड़े झड़ जाते हैं ।)

(४७) सरबरा=सबके । काचड़ा=बुराई । कांधा सेथी=कंधे सहित । जमी पड़ो=जमीन पर गिरो । जीह=जीभ । 'कीसूकी सीह' यह पाठ संदिग्ध है ।

(४८) ओड़ीरे=टोकरे के अंदर । पर=दूसरे का । काचड़ा=चुगली ।

बनड़ा नूं सूंपै बनी, हतलेवे मिल हाथ।
सठ कर दे चुगली समे, श्रवण चुगल मुख साथ॥ ४९॥
ऊपाड़े आबू जिती, पर निंदारी पोट।
पिसण न्याय पग डंग पड़े, दुरासीस लग दोट॥ ५०॥
पुरष श्रवण प्यालो भरै, चुगली कांजी चाड़।
मन पय हिय प्याला मह्यां, बेगो दिए बिगाड़॥ ५१॥
ऐ दूहा मैं आखिया, रस नीत रो रहाड़।
सभा भरी मझ सांभलै, चिड़े जिकोहिज चाड़॥ ५२॥

पुरीष = पाखाना वा बुराई। रोड़ी = जहां गोबर पाखाना आदि डालते हैं उस स्थान को कहते हैं। चंडाल = चांडाल। सरीष = समान।

(४९) बनडानूं = दुल्हे को। सूंपै = सौंपती है। बनी = दुल्हन। हतलेवा = हस्त मिलाप के समय। सठ = मूर्ख। कर दे = कर देता है। श्रवण = कान। (श्रोता चुगलखोर के वश हो जाता है।)

(५०) ऊपाड़े = उठावे। आबू जिती = पहाड़ के जितनी। पोट = गठरी। पिसण = चुगलखोर। डग पड़े = गिर जाते हैं। दुरासीस = शाप की। लग दोट = चोट लगकर।

(५१) कांजी = खटाई। चाड = चुगल। मन पय = मन (विचार) रूपी दूध को। हिय = हृदय। मही = में। बेगो = जल्दी। (जैसे कांजी से दूध फटता है वैसे ही चुगल मन को फाड़ देता है।)

(५२) ऐ = ये। दुहा = दोहे। मैं आखिया = मैंने कहे। रस नीति रो रहाड = रस और नीति को रखकर। सांभलै = सुने। चिड़े = चिढ़ता है। जिकोहिज = वोही। चाड़ = चुगल है।

(६) अथ वैस वार्ता लिख्यते

दोहा

नाभनंद आणंदनिध, भरत जन्म करतार।
सिद्धाचल दर्सण सुखद, आदीस्वर नौकार ॥ १ ॥
करम आठ मेटे किये, पंचम गुण परवेस।
थिर सिद्धाचल थापना, आदीस्वर आदेस ॥ २ ॥
जग अपजस देखै नहीं, देखै स्वारथ दाय।
जिम तिम कर बणियो रहै, बणियो तेण कहाय ॥ ३ ॥

---

(१) वैस = वैश्य। नाभनंद = नाभिराजा के पुत्र, ऋषभदेव (जैनियों के प्रथम तीर्थंकर)। आणंदनिध = आनंदनिधि। भरत जन्म करतार = भरत के पिता। सिद्धाचल = शत्रुंजय, काठियावाड़ में जैनियों का तीर्थस्थान। आदीश्वर = ऋषभदेव का दूसरा नाम। नौकार = नौकार मंत्र, जैनियों का गुरु, मंत्र जिसमें अरिहंत, सिद्ध, आचार्य्य, उपाध्याय और साधु को (पंच परमेष्ठि) नमस्कार किया जाता है।

(२) करम आठ = जैनी आठ प्रकार के कर्म मानते हैं (ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी, मोहनी, अंतराय, वेदनी, नाम, गोत्र, आयुष्य)। पंचमगुण = मोक्ष। परवेस = प्रवेश। आदेस = आदेश, नमस्कार।

(३) दाय = अच्छा लगना। बणियो रहै = बना रहै। बणियो = वणिक्। तेण = तिससे।

साह किता केसर बगल, रचै फंद दिन रात।
मच्छ गळा गळ मांहि बस, बच जावे हर बात ॥ ४ ॥
कै पूजै श्रीकंत नूं, कै पूजै अरिहंत।
बांका मत विस्वास कर, ए सह वणक असंत ॥ ५ ॥
कापड़ चोपड़ पान रस, दे सह खांचै दाम।
वणक मित्र जद बांकला, कीधो इण सूं काम ॥ ६ ॥
वात कोप सौ भूत सम, सौ दोयण सम चाड।
गोली सौ गणका जसी, सम सौ चोर किराड़ ॥ ७ ॥
मेह मथारे बरसियो, नदी किराड़ां मार।
घोड़ा हींसन भळिया, सीस किराड़ा भार ॥ ८ ॥

---

(४) साह = साहूकार। किताके = कितनेक। सरबगल = सब को स्वाहा करनेवाले। मच्छ गला = गड़बड़। बस = बसे, रहकर। केसर = केहर, सिंह। बगळ = पास अथवा काबू रहे, रहकर।

(५) श्रीकंत = विष्णु (द्रव्य-पात्र)। अरिहंत = जैनियों के तीर्थंकर (शत्रु को मारनेवाले को)। बांका = कवि बांकीदास। बणक = वणिक्। असंत = दुष्ट। ए सह = ये सब।

(६) कापड़ = कपड़ा। चोपड़ = घी तेल इत्यादि। पानरस = पंसारी की वस्तु औषध इत्यादि। रस = गुड़ खांड़ आदि। खांचे = खींचे। (कीधो इणसूं काम = पाठा० की दोसण सूं काम।) दोयण = शत्रु। जद = जब।

(७) वातकोप = बादी का कोप (रोग)। सौ दोयण = एक सौ शत्रु। चाड़ = चुगल। गोली = दासी। किराड = वणिक्। सम सौ चोर = एक सौ चोरों के बराबर।

(८) मथारै = ऊपर। बरसियो = बरसा हुआ। किराड़ां मार =

नागो ह्वै नाचै बणक, मांग्यो सूंपे माल।
अदभुत ठागो जात इण, लागो लोभ कमाल ॥ ९ ॥
स्वारथ धरम न सिद्ध ह्वै, बणक मित्र कर लाख।
ह्वै उपस्थ कच बालियां, नहिं अंगार नहिं राख ॥१०॥
दगो दियो कर दोसती, ठग जाहर सब ठाह।
बांणण जाया बांकला, कहै महाजन काह ॥११॥
दरसावै जगनूं दया, पाप उठावे पोट ।
हित में चित में हात में, खत में मत में खोट ॥१२॥
गाहै सोदे ग्राहकां, ढाहे जे गज ढल्ल।
लाहो लोटे वाणियों, आ है सांची गल्ल ॥१३॥

किनारे तोड़नेवाली। हींसन = हिनहिनानेवाला। भलिया = अच्छे हैं। भलिया = (पाठा० भालिया) देखकर। किराड़ा = वणिक्।

भावार्थ—नदी के माथे पर मेंह बरसने से वह खुश होकर किनारे तोड़ देती है वैसे ही वणिक् के सिर पर बोझ देखकर घोड़े खुश होते हैं कि हमारा बोझ बँटानेवाला है।

(९) ठागो = ठग।

(१०) उपस्थ कच बालियां = जननेन्द्रिय के केश जलाने से।

(११) ठांह = ठौर। बांणण = बनियानी। बांकला = कवि बांकीदास। महाजन = बड़े आदमी। वणिक् को महाजन कहते हैं। काह = किस लिये।

(१२) जगनूं = जग को। पोट = गठरी। खत में = लिखावट में। खोट = ऐब।

(१३) गाहै = लूटता है। सोदो = सौदा देने में। ढाहे = गिराता

तोला ताकड़ियां थका, खलक तणौ धन खाय।
तिके ग्रहे तरवार नूं, जबरी कही न जाय ॥१४॥
हुवै वसीरो वाणियो, पातर हुवै खवास।
हुवै कीमियांगार ठग, निध हर जावै नास ॥१५॥
झलक गया धननूं झुरै, हया दया कर हीण।
वित अधिकावै वाणियो, नाणे लीण अलीण ॥१६॥
वांका वंचक वाणियां, नहिं जाण्या नहिं राह।
त्यां हंदा धन ताणियां, यां आण्या घर राह ॥१७॥
जल नदियां मिलियां जिके, मिलिया समंद मझार।
वित कर चढ़िया वाणियां, पूगा समदां पार ॥१८॥

है। गजढल्ल = बड़ी बड़ी ढालियाँ। लाहो लेटे = लाभ उठाता है। आहै = यह है। गल्ल = बात।

(१४) तोला ताकड़ियाँ थकां = तोला ताकड़ी से। खलक तणो = दुनिया का। जबरी = जबरदस्ती।

(१५) बसीरो = बसाया हुआ, प्रजा। खवास = पासवान, रखेली। कीमियांगर = सोना बनानेवाले। निधहर जावै नास = धन लेकर भाग जाते हैं।

(१६) झुरै = रोवे। हीण = हीन। नाणै = रुपए पैसे। अलीण = नहीं लेने योग्य।

(१७) वंचक = ठग। नहीं जाण्या = अज्ञानी। नहिं राह = रास्ता भूले भटके हुए। त्यां हंदा धन = उनका धन। ताणिया = खींचकर। आण्या = लाए।

(१८) जिके = जो। समंद मझार = समुद्र के बीच। चढ़िया वाणियां = वणिकों के हाथ पड़ गया।

बंक गयोड़ा दीहड़ा, नदी गयोड़ा नीर ।
वित कर चढ़िया वाणियां, वाळे केहो वीर ॥१९॥
तीड़ा करसण सूंपियो, बानरड़ा नूं बाग ।
माल किराड़ां सूंपियो, ज्यांरा फूटा भाग ॥२०॥
क्याहीं कर बोहरो हुवै, क्याहीं कर ह्वै मित्त ।
क्याहीं कर चाकर हुवै, बणिक हरेवा वित्त ॥२१॥
ऐ दलाल ऐ खुड़दिया, हूंडो वाळ बजाज ।
ऐहिज करै पसारटो, केवल धनरे काज ॥२२॥
दोलत आंणै दूर सूं, अंग बणै अदनाह ।
बड़ा प्रपंचो बांणिया, बाघ गऊ बदनाह ॥२३॥
विरच जाय स्वारथ बिना, स्वारथ जितरे सैण ।
वणक तणो वैसास की, वणक तणां की वैण ॥२४॥

---

(१९) गयोड़ा = बीते हुए । दीहाड़ा = दिन । वाले = लौटावे, पीछा लेवे । केहो = कौन सा ।

(२०) तीड़ा = टिड्डियों को । करसण = खेती । सूंपियो = सौंप दी । वानरडानूं = बंदरों को ।

(२१) क्यां ही कर = कुछ भी करके । ह्वै = होता है । मित्त = मित्र । हरेवा = हरने को ।

(२२) एह = ये ही । खुड़दिया = सर्राफ, टके कौड़ी बेचनेवाले । पसारटो = पंसारीपन ।

(२३) आणै = लाता है । अंग बणै = हितू बनते हैं । अदनाह = अदने आदमी के । बाघ गऊ बदनाह = दिखने में गऊ परंतु हैं बाघ।

(२४) विरचजाय = फिर जाते हैं, झगड़ने लग जाते हैं । जितरे = जब तक । सैण = मित्र । वेसास = विश्वास । वैण = वचन ।

वणक खतारा काम में, ओ दरसावे, खैर ।
नाई नूं दीधी मुहर, वाळन टाकर वैर ॥२५॥
वणक कहै वोपार विध, सीखी गुरु सूं सोझ ।
ऊंट मुत्रां नहिं ओरतौ, कापड़ ऊपर बोझ ॥२६॥
वणक कहै ग्रावै वसत, कै कूड़ै कै गूंण ।
चेळै पड़े सो होय सुध, सैंभर पड़ैं स लूंण ॥२७॥
गांठ दिए अंचल हिए, वणिक विचार विचार ।
नाणों खुल जावे नहीं, खुल जावै नहिं खार ॥२८॥
करै वणिक कुल कसब कर, हित मांहे वित हांण ।
वणिक दगो दे विरचियो, उर इचरज मत आंण ॥२९॥

---

(२५) खतारा काम में = अपराध के कार्य्य में । ओ = वह, ये । खैर = प्रसन्नता । वाळन = पीछा लेने को । टाकर = घाव ।

(२६) वोपार = व्यापार । विध = रीत । सोझ = शोध । मुओ = मरे । ओर तो = दूसरा । कापड़ ऊपर बोझ = ऊँट की क़ीमत कपड़े पर पड़ती है ।

(२७) वसत = वस्तु । कूड़े = सीधड़ा (ऊँट की खाल का बर्तन)। कै = या तो । गूंण = गुण, यहां "गूंण" शब्द का अर्थ बोरी या पोठी भी हो सकता है । चेलै = तराजू के पलड़े । सुध = शुद्ध ।

(२८) गांठ दिए = गांठ देता है । अंचल = वस्त्र । नाणों = रुपया पैसा । खार = द्वेष ।

(२९) कुल कसब = खानदानी पेशा । इचरज = आश्चर्य । हांण = हानि । विरचियो = विरुद्ध हो जावे । आंण = ला ।

दाव घरोहड़ मांड खत, लटपट करके लाय।
बड़ो बड़ाई वाणिया, धन लेणो धी जाय ॥३०॥
विणजै सासू अर बहू, धंधे ततपर धूत।
ठग नंह जो गणिका ठगै, वणियाणी रा पूत ॥३१॥
आंना अध आंना अरथ, तुरत बिगाड़ै तांन।
बदले तुसरै वाणियां, धुर गौढ़ालै धान ॥३२॥
और भाव देतां करै, लेतां ओरहि भाव।
धाव परायो हरण धन, साहां जात सुभाव ॥३३॥
नाणौं गुर नाणौं इसट, नाणौं राणों राव।
नांणा बिन प्यारो न को, साहां जात सुभाव ॥३४॥

---

(३०) दाबय = दबाता है। रोकड़ = धन। लटपट करके लाय = लायकी करके, लल्लो पत्तो की बातें बककर। धी जाय = विश्वास दिलाकर। दावघरोहड़ = दाबत रोकड़ (पाठा०)।

(३१) विणजे = वाणिज्य करता है। धंधे = काम में। धूत = धूर्त। वणियाणी रा पूत = वणिक स्त्री के लड़के। ठगनह जो गनिका ठगै = ठगन जोग नीका ठगै (पाठा०)।

(३२) अध = आधा। अरथ = वास्ते। तान = मेल या राग। तुसरै = छोटी चीज के वास्ते (जौ की भूसी)। धुर = आसामी। गौढ़ालै = पास से ले लेते हैं।

(३३) देतां = देते समय। लेतां = लेने के समय। धाव = दौड़ते हैं। साहां = सेठों का या वणिक का। धन = द्रव्य, पशु। जात स्वभाव = जाति स्वभाव है। साहां = शेर। पाठा०—सीहा।

(३४) गुर = गुरु। इसट = इष्ट। नाणौ = पैसा। को = कोई। राणों = राजा।

जोड़ै नांणो जगत में, कर कर करड़ा काम ।
विवनो जीवे वाणियों, नांणा रो सुंण नाम ॥३५॥
लेखण तोला ताकड़ी, सोगन नै जीकार ।
वणियाणी जाया तंणा, है ये हिज हथियार ॥३६॥
खबरदार नर जबर नूं, बसत मंगाड़े मोल ।
बिगड़ै उण दिन वाणियों, तोलण हूंता तोल ॥३७॥
ए वाजै साजे पलै, साजी साहूकार ।
ए वाजै देवाळिया, ऊंधा ताला मार ॥३८॥
हूंडी सूं भूंडो हुवै, ऊंड़ो गाड़े आथ ।
देवाळो दरसाय दै, कर काठो हिय हाथ ॥३९॥

---

(३५) करड़ा = कठिन, खोटा । जोड़ै = जुड़ाता है । विवनो = दुगना, मरा हुआ भी । जीवे = जीता है ।

(३६) लेखण = कलम । सोगन = शपथ । जीकार = जीकारा, मीठा बोलना या खुशामद करना । ये हिज = ये ही ।

(३७) नर जबर नूं = जबरदस्त का । बसत = वस्तु । मंगाड़े = मँगाता है । उण दिन = उस दिन । तोलण हूंता = तोलने का ।

(३८) ए वाजै = ये कहलाते हैं । साजे पलै = चलते हुए काम में पैठ रहे तब तक । साजी = साहाजी । देवालिया = जो लेकर वापस न देवे । ऊंधा = उलटे । जब कोई दिवाला निकालता है तो उलटे ताले जुड़ देता है ।

(३९) हूंडीसू = हुंडी से । भूंडी हुवै = बात बिगड़ जाती है । ऊंडी = गहरी । आथ = धन । देवालो = दिवाला । दरसाय दै = दिखा देते हैं । काठो = कठोर ।

जोड़ण वित अनजात में, अकल नहीं अवड़ीह ।
वित नित जोड़ै वाणियों, कर कवड़ो कवड़ीह ॥४०॥
कूंतो पर धन रो करै, हाजर कला हजार ।
धूत हिए आगम धड़ा, बैठा हाट बजार ॥४१॥
थल कतार लांघण थटे, लै जिहाज जल अंत ।
भोली ढ़ाली वाणणी, बेटा धूत जणंत ॥४२॥
फोग केर काचर फली, पापड़ गेघर पात ।
बड़ियां मेले बाणियां, सांगरियां सोगात ॥४३॥
धूत बजारी धरमरी, हिए न माने हील ।
मन चलाय खांपण महों, काढ़ै नफो कुचील ॥४४॥

---

(४०) जोड़ण = जोड़ने की । अनजात = अन्य जाति । अवड़ीह = इतनी । कर कवड़ी कवड़ीह = कौड़ी कौड़ी इकट्ठी करके ।

(४१) कूंतो = मोल तोल । धूत = धूर्त । आगम = आगे से । धड़ा = अंदाजा ।

(४२) थल = पृथ्वी । कतार लांघण थटे = (कतार) ऊँटों से लाँघते हैं या पार करते हैं । वाणणी = वणिक स्त्री । भोली ढ़ाली = सीधी सादी । धूत = धूर्त । जणंत = जनती है ।

(४३) फोग = एक वृक्ष होता है जिसके फल का शाक होता है । काचर = कचरी । गेघर = हरे चने । गेघरपात = चने के पौदे के पत्ते । बड़ियां = (मंगोड़ी) बड़ी । सोगात = भेट । सांगरियां = सांगरी (शाक विशेष) ।

(४४) बजारी = बज़ारू या दिखावटी । हील = डर । खांपण = मुर्दे के उठाने की वस्त्रादि वस्तुएँ । मंही = में । कुचील = खोटे आदमी ।

हे नँह सेंधा नूं दगो, म्रहे कुतो ही ज्ञान।
देवे सेंधा नूं दगो, साह करै सनमान ॥४५॥
कवड़ो रा लहणा महीं, राखे हट कर रोक।
पाग कांख मांझल लियां, लूंड बजारी लोक ॥४६॥
उत्तम थूंक विलोवही, मध्यम मूंकी थाप।
वणिक अधम चिढता करै, पनसेरी सूं पाप ॥४७॥
इम आवे इक ऊपरां, हाटी लोप हटक्क।
सलभ मुआं सिर संक्रमें, कीड़ी जेम कटक्क ॥४८॥
कर कम चाले जीभ अत, सिर पाघड़ सिरकंत।
विढै बजारां वाणियां, मुख मूंछां फरकंत ॥४९॥

---

(४५) सेंधा = जानकार। म्रहै = रखता है। कुतो = कुत्ता। सेंधा = मुलाकाती। साह = वणिक। करै सनमान = सनमान करके (पेट में घुसकर कटारी मारता है)।

(४६) कवड़ी रा = कौड़ी के। लहणां महीं = कर्ज लेने में। पाग = पगड़ी। कांख = बगल। मांझल = में, बीच। लूंड = लुच्चे। बजारी लोक = बाजार में बैठनेवाले।

(४७) थूंक विलोवही = बक बक करते हैं। मूकी थाप = मुक्का और थप्पड़ चलाते हैं। चिढ़ता करै = क्रोध में आकर करते हैं। पाठा०—विढंता = लड़ते। पंसेरी सूं पाप = कम तोलते हैं।

(४८) इम = ऐसे। हाटी = वणिक। लोप हट्टक = कार उल्लंघन करके। सलभ = टिड्डी। संक्रमें = चढ़ते हैं। जेम = जैसे। कीड़ी कट्टक = कीड़ीदल।

(४९) कर कम चाले = हाथ कम चलते हैं। अत = बहुत। पाघड़ = पगड़ी। सिरकंत = हिलती है। विढै = लड़ते हैं।

चित लालच वेलां चढ़ै, चेलां जिनस चढ़ांहि ।
हेलां पर घर हांण दै, मेलां खेलां मांहि ॥५०॥
पंसेरी इक पालडे, पुंगोफल इक ओड़ ।
ऊ तोलण सम कर उभै, आ चतुराई खोड़ ॥५१॥
दगो पालड़ा डांडियां, तोला मझ तणियांह ।
गुर सूंही गुदरे नहीं, वणिक वैंत वणियांह ॥५२॥
तोल दिए परखाय दे, गणे दिए दे माप ।
वांण न छोड़े वाणियो, बंधव गणे न बाप ॥५३॥
मैण लगाड़े पालड़ां, तोलां मांहि कसूर ।
डर तज राखै डांडियां, पारद हूंता पूर ॥५४॥

---

(५०) वेलां = समय । चेलां = तकड़ी के पल्ले । जिनस = वस्तु । हेलां = प्रगट, चिल्लाने से । हांण दै = हानि पहुँचाते हैं । मेलां खेलां माहिं = मेलों खेलों के समय ।

(५१) पालड़े = पलड़े में । पूंगीफल = सुपारी । ओड़ = तरफ । ऊ = वह । उभै = दोनों को । आ = यह । खोड़ = ऐब । तोलण = तोरण (पाठा०) ।

(५२) दगो = दगा है । पालड़ा = पलड़े में । डांडियां = डंडियों में । तणियांह = तणियों में । सूंही = से भी । गुदरे नहीं = चूकते नहीं । वैंत = अवसर । वणियांह = आने पर । वैंत = व्यूंत (पाठा०) ।

(५३) गणे दिए = गिन देते हैं । दे माप = माप देते हैं (तोल देते हैं, परखा देते हैं, गिन देते हैं और माप देते हैं) । वांण = आदत । बंधव = बंधु । गणे = गिने, समझे ।

(५४) मैण = मोम । पालड़ां = पलड़ों के । मांहि = में ।

जल छाणै दिन जीम ही, नीली वस्त न खाय ।
दोसत हूं देतां दगो, कसर न राखे काय ॥५५॥
सामल ले भाई सगा, डर तज धोले दीह ।
वणियाणी जाया करै, लेखण हूंता लीह ॥५६॥
पढ़ै मंत्र मुख दे पलो, कोमल माल करग्ग ।
पंथ बुहारे नरकरा, साधन करै सरग्ग ॥५७॥
जिते करे हट पाहुणो, इते करै हट एह ।
पग थिर रोपै पाहुणो, एह हुए असनेह ॥५८॥
बांटे नहिं धन वाणियो, खाटे धन करखांत ।
रीझ करै ताली दिए, हँसै दिखालै दांत ॥५९॥

कसूर = खोट । डर तज = डर छोड़कर । पारद = पारा । हूंता = से । पूर = भरी हुई ।

(५५) जल छाणै = जल छानकर पीते हैं । जीमही = खाते हैं । नीली वस्त = हरा शाकादि । दोसत हूं = दोस्त को भी । कसर न राखे = कसर नहीं रखते । काय = कुछ भी ।

(५६) सामल = शामिल । धोलेदीह = दिन धौले । लेखण हूंता = कलम से । लीह = लीक, लेख कत्ल करनेवाला ।

(५७) पलो = कपड़ा, पल्ला । कोमल माल = नोकरवाली । करग्ग = हाथ में । पंथ = मार्ग । सरग्ग = स्वर्ग ।

(५८) जिते = जब तक । पाहुणों = पाहुना । इते = तब तक । एह = ये । थिर = स्थिर । असनेह = खारे, नाराज ।

(५९) दिखालै = दिखाते हैं । खाटे = इकट्ठा करता है । करखांत = बड़ी चाह से ।

वित जीमूत न बांटियो, परबस तजिया प्राण ।
कही अनुक्रम सूं कथा, विच वाराह पुराण ॥६०॥
हाट बसे भूखो हँसे, हाथ धरो कण हांण ।
कमर कसे जर केवटण, नंह तर सेज सवांण ॥६१॥
गायक गायो बीण ले, इण लिख दीनी लाख ।
ऊं कोड़ो पायो नहीं, सहर दिली दे साख ॥६२॥
बीच बजारां वाणियां, भांजे सरजे भाव ।
पावां रा लेखा करै, दावां रा दरयाव ॥६३॥

---

(६०) जीमूत = एक ऋषि का नाम है। न बांटियो = नहीं बांटा। परबस = बरजोरी से। (वाराह पुराण में जीमूत ऋषि की कथा है)।

(६१) हाट = दूकान। हाथ धरो कंण हांण = हाथ लगाने से कण (नाज) की हानि होती है। कमर कसे = कमर कसता है। जर = धन। केवटण = सँभालने को। नंह तर = नहीं तो। सेज सवांण = पलंग पर सो जाता है। हाथ धरो...हाण = हत्थ धरो तिण हांण (पाठा०)। नहं तर सेज सवांण = नहं तरसै जस वाण (पाठा०) (यश की इच्छा नहीं करे)। वाण = आदत।

(६२) गायक = गानेवाला। बीण ले = वीणा लेकर। इण = इन्होंने। लाख = लक्ष रुपए। ऊं = उसने। सहर दिली = दिल्ली शहर। साख = गवाही।

(६३) भांजे = तोड़े, घटावे। सरजे = बढ़ावे। पावां = चार छटांक का एक पाव। लेखा = हिसाब। दावां = मुकदमों या झगड़ों के। दरियाव = समुद्र।

मंत्र सुणायो महल नूं, सोळम पोळम साह ।
ऊपर सूं पड़ियो इळां, चोर करे धन चाह ।।६४।।
घ्रत बकियो जासूं अबै, सेत्रूंजारी जात ।
नर भेलाकर चोर नै, पकड़ायो अधरात ।।६५।।
बोहरो किणयक मुगलरो, वणक दिली मझवास ।
दाम लिया उण बोल बस, असपत औरंग पास ।।६६।।
दफ्तर सब दहयूं इसो, कियो सतायु सिताब ।
आयो पाछो वणक इक, जमपुर सूं कर जाब ।।६७।।

---

(६४) महल = स्त्री । नूं = को । सोळम पोळम साह = नाम है । पड़ियो = गिरा । इळां = पृथ्वी पर ।

(६५) घ्रत = बहुत । बकियो = बका । जासूं अबे = अब जाऊँगा । सेत्रूंजारी = शत्रुंजय (जैनियों का तीर्थस्थान) । जात = यात्रा । भेला कर = इकट्ठा करके ।

(६६) किणयक = किसी । दिली मझवास = दिल्ली में निवास था । उण = उसने । असपत = बादशाह (अश्वपति) । ओरंग = औरंगजेब ।

(६७) दहयू = जलाया । सतायु = शतायु सौ वर्ष का । सिताब = जल्दी से । जमपुर सूं कर जाब = यमराज से जवाब करके ।

नोट—एक वणिक को यमदूत पकड़कर ले गए थे । यमराज के यहाँ उसने बड़ी चालाकी से हतायु को शतायु बनाया और यमराज से कहा कि मेरी तो १०० वर्ष की आयु है । इस पर यमराज ने उसे छोड़ दिया ।

दी सुरही हाजर हुई, विनय सुणावै बात ।
गादी हूंत भजावियो, जमराजा इण जात ॥६८॥
रस संचे माखी जुंही, कीड़ी ज्यूं कणरास ।
धरे भेस जिम जीरवे, बैस दूकानां बास ॥६९॥
ठहै हेको जिण धींगड़े, हींगड़ धींगड़ मल्ल ।
मोड़ो आयां ही मिलै, आटा घिरत अमल्ल ॥७०॥

---

(६८) सुरही = गाय । इण जात = इस जाति ने (वैश्य जाति ने)। जब यमराज के दूत किसी वणिक को ले गए तब यमराज ने उससे पूछा कि तूने क्या पुण्य किए हैं तब उसने कहा कि मैंने एक गाय पुण्य की थी । तब वह गाय बुलाकर उसके सिपुर्द की गई और कहा गया कि यह तेरी आज्ञा में दो घड़ी तक रहेगी । वणिक ने गाय को यमराज को मारने के लिये कहा तब यमराज भागकर विष्णु के पास आए । उन्होंने सब हाल जानकर कहा कि इस वणिक को नरक में डाल दो तब वह बोला कि महाराज ! जो आपका नाम लेता है वही दुःख से छूट जाता है तब मैंने तो आपके साक्षात् दर्शन कर लिए इस पर विष्णु भगवान् ने उसे स्वर्ग में भेजवा दिया ।

(६९) संचे = इकट्ठा करता है । जुंही = जैसे । कण रास = अनाज का ढेर । भेस = भेष । जिमि = जैसा। जीरवे = जी रुचे (पाठा०)। जी चाहे । बैस = वैश्य, वणिक । दुकानां = दूकानों में ।

(७०) ठहै = होता है । हेको = एक । जिण = जिस । धींगड़े = गाँव में । हींगड़ = बनियों का एक गोत है । धींगड़मल्ल = नाम है । मोड़ो = बदमाश, देर से । उत्पाती महाजन के लिये संकेत है । अमल्ल = अमल । आया ही = आने से ही ।

नांणे वैसे वीड नहं, उलझे लेखो अत्थ ।
राती पाघणियां तणां, सुलझावण समरत्थ ॥७१॥
वणियाणी जाया तणो, भरम न गमणो भूल ।
नटियो कोडी ही न दे, मरणो करै कबूल ॥७२॥
बांका राखै वाणियो, सारां हूंत सलूक ।
कदियक खीजे तौकरै, वयण विलोणो थूक ॥७३॥
दस दूणा लोयण थकां, रामण आंधो जाण ।
बंक न लंक बसावियो, एक वणक ही आण ॥७४॥
जगडू जग जीवाड़ियो, भांजे भैभैकार ।
कीधो जै जैकार अन, बागो राय सधार ॥७५॥

---

(७१) जब रुपए पैसे का हिसाब बंद करने बैठते हैं और वह हिसाब उलझ जाता है तो लाल पगड़ीवाले (वणिक्) उसको सुलझाने में समर्थ हैं ।

(७२) तणों = का । भरम = अन्दाजा, भेद । गमणो = जाना जाता । नटियो = नटा हुआ । न दे = नहीं देता । मरणो = मरना ।

(७३) बांका = कवि बाँकीदास । वाणियें = वणिक । हूंत = से । सलूक = मेल मिलाप, बर्ताव । कदियक = कभी । खीजे = क्रोधित होवे । वयण = वचन । विलोणे थूंक = थूंक बिलोता है, बक झक करता है ।

(७४) लोयण = नेत्र । थका = होते हुए भी । रामण = रांवण । जाण = जानना चाहिए । बंक = कवि बाँकीदास । लंक = लंका । वसावियो = बसाया । आण = लाकर ।

(७५) जगडू = जगडू शाह एक नामी शाह हुआ था जिसने

वणक सहोदर परत्रिया, वणक राय साधार ।
चोपग चिंतामण वणक, वे डमक्या वरवार ॥७६॥
दरजी फाड़ दुकूल नूं, सींवै लिए सुधार ।
इण विध री रचना अठै, जाणै जाणणहार ॥७७॥

दुष्काल में अन्न बाँटकर लोगों को जिलाया। भांजे = दूर किए। भै-भैकार = हाहाकार। वागो = प्रसिद्ध हुआ, कहलाया। राय = राजा। सधार = संरक्षक।

(७६) चौपग = चौपाया, पशु। चिंतामण = एक प्रकार का रत्न। डमक्या = चमके। वरवार = बारम्बार। राय = राजा। साधार = आधारवाला। चतुर्थ पद का पाठान्तर—बेढभ क्यावरवार। इसका अर्थ यह है—क्यावर—किरावर नुकते शादी का खर्च का आसक्त। बेढब खर्च करनेवाला।

(७७) दुकूल = वस्त्र। नूं = को। सींवै = सीता है। विध = इसी प्रकार। जाणणहार

(७) अथ कुकवि-बत्तीसी लिख्यते

दोहा

सुकवि सुमुख पग नाय सिर, हिय थिर आण हुलास ।
कुकवि बतीसी ग्रंथ कवि, दाखै बांकीदास ॥ १ ॥
सठता धूरतता सहित, छंद रचे मद छाय ।
निपट लियां निरलज्जता, कुकवी जिको कहाय ॥ २ ॥
वानररी निरलज्जता, उपल कठणता लीध ।
वायस तणों कुकुंठ ले, कुकवि विधाता कीध ॥ ३ ॥
दे धरणो दातांर सूं, मांगे हठ कर माल ।
कूड़ा बोले कृतघनी, कुकवि अनंत कुचाल ॥ ४ ॥

---

(१) सुमुख = गणेश । कुकवि = खोटा कवि । हिय = हृदय में । थिर = स्थिरता । आण = लाकर । हुलास = आनंद । दाखै = कहता है ।

(२) सठता = मूर्खता । मद छाय = घमंड में चूर । निपट = अत्यंत । जिको = वो ।

(३) वानररी = बंदर की । उपल = पत्थर । कठणता = कठोरता । लीध = ली । वायस = कव्वा । तणों = का । कुकंठ = बुरा स्वर । कीध = किया, बनाया ।

(४) दे धरणो = धरना देकर, जबर्दस्ती से । कूड़ा = झूठ ।

खिलवत हास खुसामदी, सुरका दुरकी सांग ।
किसब लियां ए कुकवियां, माहव हूता मांग ॥ ५ ॥
सिर धूणे बोले सदा, हास चूक विण होय ।
कुकवि सभा जिण संचरे, सभा प्रभा हत होय ॥ ६ ॥
सूरज खांखल रतन सल, पोहमी रिण जल पंक ।
कायर कटक कलंक इम, कुकवी सभा कलंक ॥ ७ ॥
तम गिर गुफा न पायदे, जेथ मणी जोगेस ।
कीजे आदर कुकवियां, दरसे तम जिण देश ॥ ८ ॥
सुकवि तजे सुदतारनूं, जिण मुख कुकवि प्रसंस ।
जलद अग्र वक देखजूं, है प्रछन्न कलहंस ॥ ९ ॥

---

(५) खिलवत = खानगी । हास = हँसी । सुरका दुरकी सांग = भयभीत होने का स्वाँग । किसब = पेशा, धंधा । ए = ये । कुकवियां = खोटे कवि । माहव = माधव । हूता = से ।

(६) सिर धूणे = सिर हिलावे, माथा हिलावे । बोले = बोलते समय । हास = हँसी । जिण = जिस । संचरे = जाते हैं । प्रभा-हत = निस्तेज ।

(७) खांखल = रेत-रज, आँधी । रतन = रत्न । सल = छेद । पोहमी = पृथ्वी । रिण = ऊसर भूमि । पंक = कीचड़ । इम = इसी प्रकार ।

(८) तम = अँधेरा । न पायदे = प्रवेश नहीं करता । जेथ = जहाँ । मणी जोगेश = योगीश्वर = योगियों में रत्न । दरसे = दिखलाई देता है = प्रगट होता है ।

(९) सुदतारनूं = अच्छे दातार (दानी) को । जिण = जिसके । जलद = मेघ । वक = बगुला । प्रछन्न = छिप जाते हैं ।

सुकवि कुकवि द्वेषी सुणै, हरषै कहिया जाब ।
करसी नह म्हारा कवित, खाल उतार खराब ॥१०॥
उत्तम मूसे एक झड़, मध्यम दूहा मूंस ।
अधमगीत मूंसे अडर, त्रिविध कुकवि विण तूस ॥११॥
कूड़े ऊतारे सुकवि, गाढो महनत गीत ।
खाल उतारे खांत सूं, इसड़ो कुकव अनीत ॥१२॥
नियम मंगलाचरण नह, काव्य समापत काज ।
काव्य उचारण कुकवि सं, करै महाकवराज ॥१३॥
कर में ले पुस्तक कुकवि, छपै छिपै छल छंड ।
किल दोहा दूहा करै, डंड कथा में मंड ॥१४॥

---

(१०) सुणै = सुनता है । हरषै = हर्ष करके । कहिया जाब = बात कही । करसी नह = नहीं करेगा । म्हारा = मेरे । खाल उतार खराब = मिट्टी नहीं बिगाड़ेगा । उतार = उतारकर, पाठां०—उचेड़ ।

(११) मूंसै = चोरी करता है । झड = पद । अडर = निर्भय । तूस = भय ।

(१२) कूड़े = कचरा या दोष । ऊतारे = मिटावे । गाढ़ी = पूर्ण, बहुत । खांत सूं = चाह से, उमंग से । इसड़ी = ऐसी । कुकव = खोटे कवि ।

(१३) नह = नहीं । समापत = समाप्ति । काज = वास्ते । महा-कवराज = यहाँ कुकवि से तात्पर्य है । उचारण = उबारण,उतारण(पाठा०)।

(१४) छपै = छप्पय । छल छंड = छल छंद । किल = निश्चय । छपै छिपै छल छंड = छिपे छिपे थल छंड (पाठा०) । डंड कथा में मंड = दंडक धामैं डंड (पाठा०) ।

ह्वै यूं कुकवी हाथ में, पोथो तणो प्रकास।
केल पत्र जाणे कियो, वानर रे कर वास ॥१५॥
पारेवी ज्यूं पुसतकां, कुकव बाज बस थाय।
पांखां ज्यूंही पानड़ा, जत्र तत्र ह्वै जाय ॥१६॥
रूपक कुकवी रसणसूं, बिगड़े यूं रसवंत।
ज्यूं बिसफोटक रोग बस, वप सोभा विगड़ंत ॥१७॥
किलनूं कलनूं कल कहै, रिष रुप रो रष रूप।
बिगड़े कुकवी रसणबस, सबदां तणा सरूप ॥१८॥
कली वसंत कदंब रै, सांवन वरणे सेस।
कहे फेर कविता करूं, वर सर सतरे वेस ॥१९॥
अरुच अलंकृत अरथ सूं, निरगुण मन निरवाह।
कुकवि ब्रह्मज्ञानी तणो, रात दिवस इकराह ॥२०॥

---

(१५) ह्वै = होता है। यूं = इस प्रकार। पोथी = पुस्तक। तणों = का। जाणे = माना। वानर = बंदर।

(१६) पारेवी = पारेवा कबूतरी पक्षी। पुसतकां = पुस्तकें। बाज = पक्षी। थाय = होय। पांखां = पंख। ज्यूहीं = जैसे। पानडा = पत्ते। ह्वै जाय = हो जाते हैं। (रूपक अलंकार)

(१७) रूपक = छंद, कविता। रसण सूं = रसना से। रसवंत = रसवाली। बिसफोटक = एक प्रकार की व्याधि जिससे शरीर में फोड़े ही फोड़े हो जाते हैं, चेचक। वप = शरीर।

(१८) रसण बस = रसना वश। तणों = का। सबदां = शब्द।

(१९) वरणे = वर्णन करता है। सेस = शेष। वरसर = बीज खेत। सतरे = अच्छे। वेस = वेश।

(२०) मन निरवाह = मन में ध्यान धरता है।

व्रतभंगी ह्वै अरथ खय, नांहां भय रस नास ।
कुकवी वैसक तुल्य कर, बरणै सुकवि विमास ॥२१॥
रंक कुकवि दोनूं रहै, कोस हूंत सो कोस ।
आयां सुपन अलंकृती, होण तणी नह होस ॥२२॥
कविराजा सूं मंद कवि, अकस करे अविचार ।
अब जगकरता सूं अकस, करसी घट करतार ॥२३॥
आदूं षटरस ऊपरां, मांडी नवरस मंड ।
कुकवि कहै विध सूं कियो, आचारजां अफंड ॥२४॥

---

(२१) व्रतभंगी = कुकवि के संबंध में तो छंदोभंग और वेश्या के संबंध में ब्रह्मचर्य्यादि व्रत का तोड़नेवाला। अरथ खय = कुकवि के संबंध में छंद के अर्थ (मतलब) का और वेश्या के संबंध में द्रव्य का नाश। रसनास = कुकवि के साथ काव्य की नीरसता और वेश्या के अर्थ में धातुक्षीणता। इस दोहे में श्लेषालंकार है। विमास = विचार करके।

(२२) कोस = कोष, द्रव्य। हूंत = से। अलंकृती = अलंकार जाननेवाला। सुपन = स्वप्न। होण तणी नह होस = होने की हविश नहीं होती।

(२३) अकस = द्वेष या बराबरी। घट करतार = कुम्हार। करसी = करेगा।

(२४) आदूं = मूल में। ऊपरां = ऊपर से। मंड = लेख। विध सूं = किस तरह से, ब्रह्मा से। आचारजां = आचार्य्यों ने। अफंड = अढंगा।

पिंगल पढ लीनो कहै, गण रो पायां ज्ञान ।
यूंही बणै अलंकृती, लख उपमे उपमान ॥२५॥
डिंगलियां मिलियां करै, पिंगल तणो प्रकास ।
संसकृती हूं कपट सज, पिगल पढ़ियां पास ॥२६॥
बातां बिसतारे बणै, सठ आगे सरवज्ञ ।
मून ग्रहे छांडे मछर, तीखो मिलियां तज्ञ ॥२७॥
शठ मंडल श्रोता हुवै, वक्ता कुकवि बणंत ।
भूंकण लागो भूंकवा, जाण जमा दीपंत ॥२८॥
हंसा बगला हाल सूं, जिम अंतरो जणाय ।
कवत सुकवियां कुकवियां, भेद प्रगट इण भाय ॥२६॥

---

(२५) पिंगल = छंदों का एक अंग । (डिंगल और पिंगल दो प्रकार के छंद हैं ।) गण = छंदों की मात्रा आदि ।

(२६) डिंगलियां = डिंगल पढ़े हुए । मिलियां = मिलते समय । तणो = का । पढ़ियां = पढ़े हुए ।

(२७) बिसतारे = विस्तार करै । बणै = बनते हैं । आगे = संमुख । मछर = मत्सर, अहंकार । तीखो = तेज । तज्ञ = तत्वज्ञ, विद्वान् ।

(२८) भूंकण = श्वान, कुत्ता । भूंकवा = भूँकना । जमा = यम । जांण = मानो । दीपंत (पाठां०) जापंत = बोलना ।

(२६) हाल = चाल । सूं = से । जिम = जैसे । अंतरो = भेद, फर्क । जणाय = जाना जाता है । कवत = कवित्त । इण भाय = इस भाँति ।

कुकव हूंत आछो कुतर, ऊगे चंदण पास ।
लहि चंदण सोरभ लहै, चंदणता गुणरास ॥३०॥

जीभकंठ हिय प्रकृत जुग, कहियो नांहि करंत ।
कहै दुआं कहियो करौ, कुकवि कुलच्छणवंत ॥३१॥

सब दिन हिया कठोर सम, कुकवी जीभ कठोर ।
काढे वयण कठोर किल, जीभ सरंभर जोर ॥३२॥

ओगण ईरानी कटक, कुकवी नादरसाह ।
कायब हिंदी दल कटे, रसण तेग बदराह ॥३३॥

---

(३०) कुकव = कुकवि । हूंत = से । कुतर = एक प्रकार की घास जो कपड़े में चिपक जाती है और जिसे 'कुत्ता' भी कहते हैं; खोटा वृक्ष, नीम । चंदण = चंदन । चंदणता = चंदनपना ।

(३१) प्रकृत = प्रकृति । जुग = दोनों । कहियो = कहा । कहै = कितने ही । कहियो करौ = कहा करो । कुलच्छणवंत = कुलक्षण वाला । दुआं = दूसरों को ।

(३२) सब दिन = सर्वदा । हिया = हृदय । कठोर सम = पत्थर के समान । काढे = निकालता है । वयण = वचन । किल = निश्चय । सरंभर = सराबोर । जोर = बहुत

(३३) ओगण = अवगुण । ईरानी कटक = फारस देश की सेना । नादरशाह = फारस का बादशाह जिसने सन् १७३९ ई० में हिंदुस्तान पर चढ़ाई की, दिल्ली को लूटा और वहाँ कत्लेआम किया । कायब = कायर, कविता । रसण = रसना । तेग = तलवार । कुकवि का नादिरशाह और उसकी सेना से रूपक बाँधा है ।

सुकव बदन तज सारदा, कुकव बदन नह जाय ।
जावे नह तज अंब ज्यूं, कोयल कैर कुछांय ॥३४॥
कुकविन हरषे कवित सूं, भल हरषे कवभूप ।
उदध उमंगै ससि उदै, किसूं उमंगे कूप ॥३५॥
कोई कुकवो जीभ सूं, बांछे रसमय बाण ।
कंचण बांछे काढणो, सो लोहारी खाण ॥३६॥
नहीं उगत अभ्यास नह, गुर सूं लियो न ज्ञान ।
इसा न लाजै ईछता, सुपहां सूं सनमान ॥३७॥
सुकवि हुए सुदतार रो, सुजस करै कर क्रोध ।
अटकलजे पायो अवस, कुकवो कने कुबोध ॥३८॥

---

(३४) वदन = मुख । सारदा = सरस्वती । नह जाय = नहीं जाती है । अंब = आम का पेड़ । ज्यूं = जैसे । कैर कुछाय = कैर के दरख्त की बुरी छाया में । (कैर के पेड़ में पत्ते नहीं होने से उसकी छाया नहीं होती ।)

(३५) हरषे = हर्षित होता है । भल = भले ही । हरषे = हँसे । कवभूप = कविराज । उदध = समुद्र । ससि उदै = चंद्रमा उगने से । किसूं = कैसे, क्या ।

(३६) बांछे = चाहता है । बाण = वाणी । कंचण = सुवर्ण । काढणो = निकालना । सो = वो । लोहारी खाण = लोहे की खान से ।

(३७) उगत = उक्ति । नह = नहीं । इसा = ऐसे । लाजै = शर्मावे । ईछता = इच्छा करते हुए । सुपहां = राजा ।

(३८) हुए = हो करके । सुदताररो = दानी का । अटकलजे = अनुमान कर लेना चाहिए । अवस = अवश्य । कने = पास ।

एकोतरे अठारसो, सांवण दसमी स्याम ।
बुध धुर रचो बतीसका, पोषण सुकव तमाम ॥३९॥

---

(३९) एकोतरे अठारसो = सं० १८७१ । सावण दसमी स्याम = श्रावण कृष्णा १० । बुध = बुधवार । धुर = निश्चय । बतीसका = बत्तीसी । पोषण, (पाठा०) तोषण = प्रसन्न करने को ।

(८) अथ विदुर-बत्तीसी लिख्यते

दोहा

विदर पिदर जाणै नहीं, मादर विदरां मूल ।
राखै अगणत रंग रा, दिलरी कुसी दुकूल ॥ १ ॥
हेक विदर पैदा हुवै, अगणत मिलियां अंस ।
विदरां री संगत बुरी, विदरां रे नंह वंस ॥ २ ॥
अस्या जो न करत विदर, जग मांहें जग जीत ।
असल नसल रो ऊघड़त, रूड़ापो किण रीत ॥ ३ ॥
वालमियो अलवेलियो, लाल केसियो भेद ।
विदरां रे ऐ व्याकरण, विदरां रे ऐ वेद ॥ ४ ॥
विदर बुराई बींटिया, विदर बड़ा वाचाल ।
विदर पटा लावै सुरत, छोगाला चिरताल ॥ ५ ॥

---

(१) विदर = दासीपुत्र। पिदर = पिता। मादर = माँ। अगणत = असंख्य। कुसी = इच्छा। दुकूल = वस्त्र। कुसी = (पाठां०) खुसी।

(२) हेक = एक।

(३) जो न करत = (पाठां०) जहँ करती। असल = असली। नसल = खान्दान। ऊघड़त = दिखलाई देता। रूड़ापो = अच्छापन।

(४) वालमिया, अलवेलिया और लाल केसिया ये मारवाड़ के अश्लील गीत हैं।

(५) बींटिया = भरे हुए। वाचाल = बक बक करनेवाले। पटा लावै सुरत = चेहरे पर केसों की पट्टियाँ बतलाती है। छोगाला =

बतलायो बिगड़े विदर, और दियां इलकाब ।
बाट चलावण विदर नूं, कुतको बड़ो किताब ॥ ६ ॥
कुतक खिदर धव काठरा, विदर पजावण वेस ।
तो पिण हाजर राखणा, घण मेखचा हमेस ॥ ७ ॥
विदर गपांरा बादला, विदर विवेक विहीण ।
विदर छांह निरखे बहै, अलबेला अकुलीण ॥ ८ ॥
काम सूंप नंह कीजिए, विदर तणां वेसास ।
राणै कीधो राजसी, हुओ जगत में हास ॥ ६ ॥
विदर मूंछ जांणै वृथा, इधक पटां रे आघ ।
हाकां वागां हिरणियां, विदर गलो रा बाघ ॥१०॥

छैल, साफे का पल्ला लटकता हुआ रखनेवाला। चिरताल = नखरे-बाज।

(६) बतलायो = बात करने से। बिगड़े = क्रोधित होता है। इलकाब = अल्काब, पदवी। बाट चलावण = सीधा रखने को, ठीक रास्ते चलाने को। कुतको = डंडा।

(७) कुतक = डंडा। खिदर = खैर का वृक्ष। धव = धावड़ा, धोक का वृक्ष। काठरा = लकड़ी के। पजावण वेस = ठीक करने को रस्ते अच्छे हैं। तो पिण = तो भी। घण = हथौड़ा। मेखचा = मेखों का।

(८) गपांरा = झूंठी बातों के। बादला = गोट।

(६) सूंप = सौंपकर, देकर। वेसास = विश्वास। राजसी = (मेवाड़ के) महाराणा राजसिंह। हास = हँसी। (कहते हैं कि हीरांढीकड़िया ने महाराणा राजसिंहजी को बहकाकर कुँवर सुरताणसिंह और सरदारसिंह को मरवाया।)

(१०) मूंछ = (पाठा०) ऊँच। इधक = अधिक। पटां रे = केसों

विदर बहादर बाजवा, कड़ बांधै केवांण।
कर जोड़न लटका करन, विदर न छोड़ै वाण ॥११॥
आवध कसता उमंग सूं, विदर लगावे बार।
नहीं लगावे नांखतां, जेज बड़ा जूझार ॥१२॥
अस नांखै गाहण असह, रिण माथे रजपूत।
आवध नांखै आंचसूं, दासी केरा पूत ॥१३॥
कूकर रखवाली करै, दूजां लोकां द्वार।
देसोतांरी डोढ़ियां, गोला करै गलार ॥१४॥
कर पारो काचै कलश, जल राखियो न जात।
नव नहचे ठहरे नहीं, विदर उदर में बात ॥१५॥

का। आघ = मोह, आदर। हाकां = बाण, लड़ाई आदि। हिरणियाँ = हरिण या गरीब। गली रा = गली के। बाघ = शेर। (व्यंग्य में गली के शेर से अभिप्राय कुत्ते का भी है।)

(११) बहादर = बहादुर। बाजवा = कहलाने के हेतु। कड़ = कमर में। केवाण = कृपाण, तलवार। वाण = आदत।

(१२) आवध = शस्त्र। कसता = बाँधते हुए। बार = देर। नाखता = डालते समय। जेज = देरी। जूझार = लड़नेवाले।

(१३) अस नांखै = घोड़े पटकते हैं। गाहण = गाने को। असह = शत्रु, लड़ाई। आंचसूं = हाथ से, या ताप से। माथै = (पाठा०) माते।

(१४) कूकर = कुत्ते। दूजां लोकां = दूसरे मनुष्यों के। देसोतांरी = जागीरदारों की। डोढिया = द्वार पर। गलार = झूठी गप्पें, आनंद, मौज, चैन।

(१५) कर पारो = हाथ में पारा। काचै कलश = कच्चे घड़े

कुल देवी थापन करै, जात गयारी जाय।
सरब ठिकाने विदर सै, कल में मूढ कहाय ॥१६॥
छोड़े जे निज छांह नूं, चाला बहु चाहंत।
पवनासूं बाथां पड़ै, विदर कुलच्छणवंत ॥ १७ ॥
गोलो कह बतलावियां, चिड़ ऊठै चंडाल।
जग में सोधी नंह जुड़ी, गोला माफक गाल ॥१८॥
फूल वेल रंगवेल रे, पेट तणी बस पोल।
निचला रहिया मासनव, गरवा अद्भुत गोल ॥१९॥
गोलां सूं न सरै गरज, गोला जात जबून।
ऊखाणो सायद भरे, सो गोला घर सून ॥२०॥

में। राखियो न जात=रखा नहीं जाता। नव=नई। नहचै=निश्चय।

(१६) कुल-देवी=कुल में पूजी जानेवाली देवी या माता। (प्रत्येक राजपूत जाति में जुदी जुदी कुल-देवियाँ अवश्य होती हैं।) थापन करै=स्थापन करते हैं। जात=यात्रा। सै=सब। कल=जगत्।

(१७) छोड़े=(पाठा०) छेड़े। छांह नू=छाया को भी छोड़ने के वास्ते बहुत चेष्टा करता है। पवनां=हवा से। बाथां पड़ै=भिड़ते हैं। चाला बहु चाहंत=(पाठा०) चलवो नह चाहंत।

(१८) बतलावियां=बोलने से। सोधी=ढूँढ़ी। नह जुड़ी=नहीं मिली। गाल=गाली। गोला=गुलाम, बाँदा।

(१९) बस पोल=पोल में (गर्भ में) रह के। निचला=निश्चल। गरवा=भारी।

(२०) सरै गरज=काम बनता है। जबून=बुरी। ऊखाणो=(यह) कहावत। सायद=साक्षी। घर सून=गृह शून्य रहता है।

गोल ढोल बांधै गले, लोक गमें कुल लाज।
काठा बांधै कूटियां, करै काज आवाज ॥२१॥
कूकर लाय जले नहीं, जुड़ै न कायर जंग।
विदर न ठहरै त्रिपत में, संपत में हिज संग ॥२२॥
गाल बजावै गोलणां, गोल सवांरे गात।
सदा नचीता संचरे, सदा सुहागण मात ॥२३॥
राव रंक हिंदू रवद, गोलां सगलां गेह।
सागे जात सुणामियां, छुद्र दिखावे छेह ॥२४॥

भावार्थ—गोले की और ढोल की एक ही प्रकृति है। गोले को सिर चढ़ाने से (प्यार करने से) संसार में निंदा होती है। इसी तरह ढोल को गले बाँधने से निंदा होती है। इन दोनों का तो यही इलाज है कि खूब खैंचकर और बाँधकर कूटने से यह तो आवाज करता है और वह काम करता है।

(२१) गोल = गुलाम। बांधै गले = गले में बाँधने से। गमें = जाती है। काठा = दृढ़। कूटियां = कूटने से। करै काज आवाज = (पाठां०) करवै काज आवाज।

(२२) कूकर = कुत्ता। लाय = अग्निकांड।

(२३) गाल बजावै = बातें मारते हैं। गोलणां = गुलाम। सवांरे = सुधारते हैं। गात = बदन। नचीता = निशि ंत। संचरे = फिरते हैं।

(२४) रवद = मुसलमान। सगलां = सबके। सागे = असली। सुणामियां = सुनाने से। छुद्र = क्षुद्र। दिखावे छेह = नीचता दिखलाते हैं।

गांवां सहरां गोलणां, रहै हुआ रजपूत ।
लखणां सूं लख लीजिए, मुकर घणां रा मूत ॥२५॥
कठण रीत रजपूत कुल, खाग कमाई खाय ।
और कमाई आदरै, गोलो भगड़ै गाय ॥२६॥
कुल खत्री बाराह कुल, पोरस वांकम पूर ।
मिलिया चाहै ज्यां मह्रीं, गोला नै गंड़सूर ॥२७॥
मन मैला चख मांजरा , भालै जे चख भांज ।
गोला अवगुण नू ग्रहै, गुण भलपण रा गांज ॥२८॥
कुवजा नारद विदर री, विवरां संजुत बात ।
हरि रा दासां ज्यूं हुए , दासां नूं सुख दात ॥२९॥

---

(२५) सहरां = शहरों में । गोलणां = गोले । लखण = लक्षण । लख लीजिए = जान लेना चाहिए । मुकर = अवश्य । घणां रा = बहुतों के । मूत = मूत्र, पैदाइश, पुत्र ।

(२६) कठण = कठिन । खाग = खड्ग । आदरै = स्वीकारता है । भगड़ै गाय = भगड़े में गौ बन जाता है ।

(२७) खत्री = क्षत्रिय । बाराह = वराह, बन-सूकर । पोरस = पुरुषार्थ । वांकम = बाँकापन । पूर = पूर्ण । मिलिया = मिलना । ज्यां मह्रीं = जिनमें । गंड़सूर = ग्रामसूकर, भंडसूर ।

(२८) चख = आँख । भालै = देखते हैं । चख भांज = आँख मरोड़कर । गांज = नाश करनेवाले ।

(२९) कुवजा = कुबड़ी दासी । नारद = चुगलखोर या नारद मुनि । विदर = विदुर या दासीपुत्र । विवरां संजुत = विवरण सहित । कुबजा, नारद और विदुर ये तीनों हरि के बड़े भक्त थे ।

सहज चाल संगत समझ, वाणो सिकल वणाव ।
इता प्रकारां अवस है, गोलां तणों जणाव ॥३०॥
नहीं हुवै पग नाग रै, हिरण न थिरता होत ।
ससिया रे नह सींग जूं, गोलां रे नह गोत ॥३१॥
दासीजादा दे दगा, पास रहंता पूर ।
रीझै खीजै राखणा, दासीजादा दूर ॥३२॥
बीछू वानर व्याल विष, गरदभ गंडक गोल ।
ऐ अलगाइज राखणा, ओ उपदेस अमोल ॥३३॥
लड़ो मती ल्यो लायकी, कथा सुणो दे कान ।
सो वेलां समझावियां, गोलां नायो ज्ञान ॥३४॥
ओगण सह कर एकठा, विदर वणाया वेह ।
ज्यां मझ कांदा छोंत जिम, छिदरां रो नहिं छेह ॥३५॥

---

(३०) सिकल वणाव = चेहरे की टीपटाप । अवस = अवश्य । जणाव = जानकारी, ज्ञान ।

(३१) नागरै = सर्प के । थिरता = स्थिरता । ससिया = शसा । गोत = गोत्र ।

(३२) दासीजादा = दासीपुत्र । रहंता = रहने से । पूर = पूर्ण । रीझै खीजै = रीझ खीज में, प्रसन्नता और क्रोध में । राखणा = रखना चाहिए ।

(३३) गंडक = कुत्ता । अलगाइज राखणा = दूर ही रखने चाहिए ।

(३४) मती = मत । ल्यो लायकी = योग्य बनो । सो वेलां = सौ बार । समझाविया = समझाए । नायो = नहीं आया ।

विदर बतीसी बींदणी, जती रास वर जास।
ब्याह थयो बैसाख में, पूरण प्रेम प्रकास ॥३६॥

---

(३५) सह = सब। एकठा = इकट्ठे। वेह = विधाता। ज्यां मझ = उनमें। कांदा छोंत = प्याज के छिलके। छेह = अंत। छिदरां = (पाठा०) विदरां। छिदरां = छिद्रों का, दोषों का।

(३६) बींदणी = दुल्हन। जती रास = "जती रासा" नाम की पुस्तक, एक पुस्तक का नाम। वर = दुल्हा। जास = जिसका। थयो = हुआ। संभवतः "जती रासा" नामक ग्रंथ बाँकीदासजी ने या अन्य किसी कवि ने इसी समय बनाया।

(६) अथ भुरजालभूषण लिख्यते

दोहा

साह तणा खूनी सबल, आय बचै इण ठोड़।
औ सातूं अकलीम में, चावो गढ़ चीतोड़ ॥ १ ॥
दिन दुलहां माणीगरां, इण गढ़ रा धणियांह।
आणी सींगल दीप सूं, पेखे पदमणियांह ॥ २ ॥
आगै इण गढ़ वासतै, समर हुआ जग साख।
सात लाख हिंदू मुंवा, असुर अठारे लाख ॥ ३ ॥

भुरजालभूषण = गढ़ों का सिरमौर। गहणां।

(१) साह तणा = बादशाह के। आय बचै = आकर रक्षा पाते हैं। इण ठोड़ = इस जगह। सातूं = सातों। अकलीम = देश वलायत। चावो = प्रसिद्ध।

(२) दिन दुलहां = बाँके वीर। माणीगरां = भोगी। धणियांह = स्वामियों ने। सींगल द्वीप सूं = सिंहल द्वीप (लंका) से। आणी = लाए। पेखे = देखकर। पदमणियांह = पद्मिनी नारियों को। यह पदमावत के आधार पर महाराणा रत्नसिंह की रानी पद्मिनी के विषय में लिखा है। गरां = (पाठा०) धरां।

(३) जग साख = जगत् साची है। मुवां = मरे। असुर = विधर्मी।

जठै प्रतपियै प्रगट जो, हर अवतार हमीर ।
नीसरतौ जूड़ा महीं, नित निरझर नद नीर ॥ ४ ॥
सिर मांडव गुजरात सिर, दल सझ कीधी दौड़ ।
उण सांगा रे बैसणो, चंगो गढ़ चीतोड़ ॥ ५ ॥
सब दिन गो मुख कुंडसिर, पाणी सूं भरपूर ।
अन भुरजालां भुरजसा, गढ़ चोतोड़ कंगूर ॥ ६ ॥
नीसरणी लागै नहीं, लागै नहीं सुरंग ।
लड़ नहिं लीधो जाय ओ, दीधो जाय दुरंग ॥ ७ ॥
पर गढ़ लेणा रोप पग, अरि सिर देणा तोड़ ।
धरा हूंत नहिं धापणो, खूंदालमां न खोड़ ॥ ८ ॥

---

(४) जठै = जहाँ । प्रतपियै = राज्य किया । हमीर = महाराणा हमीरसिंह । हर = महादेव । नीसरतौ = निकलता था । जूड़ा महीं = केशों के जटा-जूट में से । निरझर नद नीर = गंगाजल । जो = (पाठा०) जग । नद = (पाठा०) नै ।

(५) सिर मांडव = मांडू पर । गुजरात सिर = गुजरात पर । दल सज = दल साजकर । कीधी दौड़ = चढ़ाई की । उण = उस । बैसणो = निवास या राजस्थान । चंगा = अच्छा ।

(६) सब दिन = हमेशा । अन = अन्य । भुरजालां = गढ़ । भुरज सा = बुर्ज के से । कंगूर = कंगूरा ।

(७) नीसरणी = निसेनी । लड़ नहिं लीधो जायओ = यह लड़कर नहीं लिया जाता । दीधो = दिया हुआ । दुरंग = गढ़ ।

(८) पर = शत्रु का । लेणा = लेना । रोप पग = स्थिर होकर, पाँव जमाकर । देणा = देना । धरा हूँत = पृथ्वी से । धापणो = संतुष्ट होना । खूंदालमां = वीर पुरुषों में । खोड़ = रोब ।

की बांधव की दीकरा, हुकम दिए जो फेर।
पातशाह जानूं पकड़, चाढ़े गढ़ ग्वालेर ॥ ९ ॥
राखै राण बराबरी, आतपत्र उतबंग।
ते अकबर खड़ आवियो, गांजण चीत दुरंग ॥१०॥
के मुलतानी काबलो, पेसावरी प्रचंड।
नेसापुर रा नीपना, बगदादी बलबंड ॥११॥
सामी रूमी संजरी, गोरी कासगरीह।
ईरानी यमनी अडर, सीराजी रण सीह ॥१२॥
बलखी हिलबी बाबरी, रूसी तूसी रोद।
श्रै लै अकबर आवियो, सज ऊभा सीसोद ॥१३॥

---

(९) की = क्या। बांधव = बंधुवर्ग। दीकरा = बेटे। हुकम दिए जो फेर = जिन्होंने हुक्म नहीं माना। जानूं = उनको। चाढ़े = भेज दिए। दीकरा = (पाठा०) डीकरा।

(१०) राखै = रखता है। राण बराबरी = राणा बराबरी का दावा करता है। आतपत्र = छत्र। उतबंग = उत्तमांग, मस्तक। खड़ आवियो = चढ़ आया। गांजण = तोड़ने को। चीत दुरंग = चित्तौड़ गढ़। उतबंग = (पाठां०) तनवग्ग। दुरंग = (पाठां०) दुरग्ग।

(११) के = कितने ही। नीपना = उत्पन्न हुए।

(१२) संजरी = संजर के रहनेवाले। कासगरीह = काशगर के रहनेवाले। अडर = निर्भय। रणसीह = लड़ाई में सिंह के समान।

(१३) रोद = मुसलमान। सज ऊभा सीसोद = सिसोदिए भी लड़ाई को तैयार हो गए।

चकतो अकबर चक्कवै, पतसाहां पतसाह ।
चतुरंगी फोजां चढ़ै, दिए दुरंगां ढाह ॥१४॥
अकबर साह जलालदी, खितवा वली खुदाय ।
बाजदार कर बंदगी, ताजदार होय जाय ॥१५॥
जाफरान नेपत जठै, पग पग मीठा नीर ।
सदा बिराजे सारदा, सो लीधो कसमीर ॥१६॥
गुड़ पाखर पूरब गयो, नभ ओ घसते सीस ।
आटो करै उड़ाविया, जेण पठाणां पीस ॥१७॥

---

(१४) चकतो = चंगेज खाँ के वंश का । चक्कवै = चक्रवर्त्ती राजा । पतसाहां पतसाह = शाहंशाह । दुरंगां = गढ़ को । दिए ढाह = गिरा दिया ।

(१५) जलालदी = अकबर का नाम मोहम्मद जलालुद्दीन था । खितवा = खुतबे में । वलीखुदाय = खुदा की तरफ का महापुरुष । बाजदार = बाज रखनेवाले, या खिराज देनेवाले बाजगुजार । ताजदार = बादशाह ।

(१६) जाफरान = केसर । नेपत = पैदा होती है । जठै = जहाँ । लीधो = लिया । शारदा से पंडित और पांडित्य । अकबर ने कश्मीर को सन् १५८६ ई० में फतह किया था ।

(१७) गुड़ पाखर = जिरहपोश सवार व पाखरवाले घोड़े । (इस दोहे का संबंध पठानों के साथ की लड़ाई से है । पिछले चरण का अर्थ यह हो सकता है कि "जिसने पठानों को पीसकर आटे की तरह उड़ाया ।" ये लड़ाइयाँ बंगाल की तरफ सन् १५७५ ई० और १५८० में हुई थीं ।)

दल बल सूं घेरो दियो, प्रबल हुमाऊँपूत ।
गैलोतां चीतोड़ गढ़, मिल कीधो मजबूत ॥१८॥
अमिट भड़ां बल अंग में, कोठारां सामान ।
सामध्रमी ठाकुर सको, दिए रंग दुनियान ॥१९॥
पतो जगा रो विरद पत, वीरम रो जैमाल ।
केल पुरो कमधज दुहूँ, हुआ चीत गढ़ ढाल ॥२०॥
के दरवाजां कांगरा, ऊभा भड़ अरडींग ।
भला चीत भुरजालरा, आभ लगावा सींग ॥२१॥

---

(१८) हुमाऊंपूत = अकबर । गैलोतां = गहलोतों ने (राव गुह उदयपुर के राणाओं के पूर्वज थे इसी से ये गुहलपुत्र = गुहलोत कहाए ।)

(१९) अमिट = अटल । भड़ां = शूरवीरों के । कोठारां = कोठार में । सामान = खाने पीने आदि की वस्तु । सामध्रमी = स्वामि-भक्त । ठाकुर = सरदार । सको = सब कोई । दिए रंग दुनियान = संसार जिनकी प्रशंसा करता है ।

(२०) पतो जगा रो = जग्गा का पुत्र पत्ता । विरद पत = महायशस्वी । केलपुरो = सीसोदिए—केलवाड़े में रहने से केलपुरे कहलाए । कमधज = राठौड़ (पत्ता सीसोदिया था और जयमल राठौड़ ।) दुहूँ = दोनों । इस शब्द का सम्बन्ध आगे 'हुआ' क्रिया से है । चीतगढ़ = चित्तौड़गढ़ ।

(२१) के = कितने ही । सात दरवाजे हैं जिनके ये नाम हैं—१—पाडलपोल, २—भैरूंपोल, ३—हनुमानपोल, ४—गणेशपोल, ५—जोडलापोल, ६—लछमनपोल, ७—रामपोल । ऊभा = खड़े । भड़ = भट, शूरवीर । अरडींग = जबरदस्त । चीत = चित्तौड़ । भुरजाल =

उठै सोर झालां अनल, आभ धुआं अंधियार।
ओलां जिम गोला पड़ै, मेछां कटक मंझार ॥२२॥
भुरजमाल फण मंडलो, सोर झाल विष झाल।
जाण सेस बैठो जमी, मिस चीतोड़ कराल ॥२३॥
के गोलां के गोलियां, के तरवारां धार।
मरै गड़ै कबरां महीं, बीबा मंसबदार ॥२४॥
ढूकै नेह गढ़ ढूकड़ा, अकबर रा उमराव।
करै वीर गढ़ रा कवच, दोय टूक इक घाव ॥२५॥
भड़ां लिरीजे हाजरी, नित दीजै मोरांह।
जोध फिरै गढ़ जावतै, पै दर पै पोहरांह ॥२६॥

गढ़। आभ=आकाश। लगावा सींग=यश बढ़ाने को। लगावा=(पाठा०) लगाया।

(२२) सोर=बारूद। झालां=ज्वाला। ओलां=ओले। मेछां=म्लेछां=मुसलमानों के।

(२३) भुरजमाल=बुरजों की माला। फण मंडली=सर्प के फण का मंडल। जाण=मानो। सेस=शेष नाग। मिस चित्तौड़=चित्तौड़ के रूप में। इस दोहे में बहुत उत्तम उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(२४) के=कितने ही। बीबा मंसबदार=मुसलमान उमराव।

(२५) ढूकै=लगते, पहुँचते। ढूकड़ा=नजदीक। घाव=चोट। गढ रा कवच=गढ़ के रक्षक।

(२६) भड़ां=भटां=शूरवीरों की। लिरीजे=ली जाती है। मोरांह=अशरफियाँ। जोध=योद्धा। जावतै=रक्षा के लिये। पै दर पै=एक के बाद दूसरा शर्त रखकर। पोहराह=पहरे पर। पै दर पै=(पाठा०) पैज रूपै।

सूनी थाहर सिंघ री, जाय सके नहिं कोय।
सिंह खड़ां थह सिंहरी, क्यों न भयंकर होय ॥२७॥
किसूं सफीलां भुरज की, काहू बजर कपाट।
कोटां नूं निधड़क करै, रजपूतां रा थाट ॥२८॥
अमलां खोबा बाजियां, मचै भड़ां मनुवार।
जांगड़िया दूहा दियै, सिंधू राग मल्हार ॥२९॥
दल अकबर तोपां दगै, सूके नीर निवाण।
गोलां लागे चीतगढ़, मेंगल माछर जाण ॥३०॥
अई चीतगढ़ ओर सूं, तूं गांजियो न जाय।
भीतर ज्यां मन भावणों, बाहर जिकां बलाय ॥३१॥

---

(२७) थाहर = गुफा। थह = मांद, गुफा।

(२८) किसूं = क्या। काहू = क्या। कोटा नू = प्राकार को (कोट)। बजर = वज्र, मजबूत। (भावार्थ—किले की बुर्ज आदि और वज्र के किवाड़ होने से क्या ? उसकी रक्षा तो राजपूत करते हैं) थाट = थट्ट, समूह।

(२९) अमलां = अफीम। खोबा = चुल्लू भर, हथेलियां। बाजियां = भरके या बाहुयुद्ध। मचै = होने लगी। जांगड़िया = जांगड़ या टोली। सिंधूराग मल्हार = युद्ध के समय वीरों को उत्तेजित करने को सिंधू गाते हैं। मल्हार = (पाठा०) मलार।

(३०) नीर निवाण = जलाशय। मैंगल = हाथी। (चित्तौड़ गढ़ पर मुसलमानों के गोले ऐसे लगते थे जैसे हाथी के मच्छर की चोट लगती हो।)

(३१) अई = अय, हे। गांजियो = तोड़ा। ज्यां = जो। मन भावणो = मनोहर। बलाय = भयंकर।

अई चीतगढ़ ऊधरा, सकल गढ़ां सिरताज ।
तूं जूनो परणे नवी, असुरांरी अफवाज ॥३२॥
जां चीतोड़न तोड़ियो, तांकी कीधो कांम ।
अकबर हिये बिचार औ, जक नहीं आठूं जाम ॥३३॥
अकबर सूं ऊभो करै, आसिफखान अरज्ज ।
हजरत गढ़ कीजे हलो, करो जेज किण कज्ज ॥३४॥
आसिफखां अकबर कहै, भीतां भुरजां जोय ।
बांको गढ़ भड़ बांकड़ा, हलो कियां की होय ॥३५॥
भीतरलां फूंटा भड़ां, कै खूंटा सामान ।
इण गढ़ में होसी अमल, खम तूं आसिफ खान ॥३६॥
जयमल पतै जवाब जद, हजरत तणी हजूर ।
मंत्र करै लिख मेलियो, सांभल हरखै सूर ॥३७॥

---

(३२) ऊधरा = ऊँचा । असुरां री = मुसलमानों की । अफवाज = फौज का बहुवचन, वीरता । शत्रु-सेना को यहाँ स्त्री का रूपक दिया है ।

(३३) की = क्या । जक = आराम । जाम = पहर । आठूं — (पाठा०) वाकूं = उसको ।

(३४) अरज्ज = अर्ज़ । हलो = हल्ला । जेज = विलम्ब । किणकज्ज = किसलिए ।

(३५) भीतां = भीतों को । भुरजां = बुर्ज़ों को । जोय = देखकर । भड़ = शूरवीर । बांकड़ा = बांके, विकट । की = क्या ।

(३६) भीतरलां = भीतर के । फूटां भडां = वीरों में फूट पड़ने से । कै = या । खूटां = चुक जाने या निबट जाने से । खम = (क्षम) संतोष कर ।

(३७) मंत्र करै = सलाह करके । सांभल = सुनकर के ।

"गांजीजे नहं चोत गढ़, बींट दलां बलियांह।
गांजीजे नहं गंध गज, माछ घणां मिलियांह ॥३८॥
इंद्रानुज रो डंड जो, आवै हरतां आंच।
उणरी नीसरणी हुए, इण गढ़ लागे सांच"॥३६॥
काचा भड़ां कसूर पिण, किलां कसूरन तार।
प्राण बचावण पिसणनूं, सूंपै अहै न सार ॥४०॥
केवी नूं गढ कूंचियां, सूंपै छोड़ सरम्म।
मुख ज्यांरां दीठां मिटै, धर रजपूत धरम्म ॥४१॥
भेलाया भुरजाल ज्यां, पांणेची गम पैठ।
जिके कहाणां खोय जस, वसुधामंडल बैठ ॥४२॥

---

(३८) गांजीजे नहं = तोड़ा नहीं जायगा। बींट = घेरा। दलां = फौजों के। बलियांह = लगने से। गंधगज = मस्त हाथी। माछ = मच्छर और म्लेच्छ। घणां = बहुत। मिलियांह = मिलने से।

(३६) इंद्रानुज = इंद्र का छोटा भाई (या वामनावतार)। हरतां = दूर करते हुए। आंच = हाथ।

(४०) काचा भड़ां = कच्चे शूरवीर। पिण = परंतु। किलां = किलों का। कसूरन = कसूर नहीं है। तार = लेश मात्र। बचावण = बचाने को। पिसण नूं = शत्रु को। सूंपै = सौंपते हैं, समर्पण करते हैं। सार = तरवार।

(४१) केवी नूं = शत्रु को। दीठां = देखने से। धर = पृथ्वी या संसार में। सरम्म = शर्म। धरम्म = धर्म।

(४२) भेलायां = भिलवाया। ज्यां = जिन्होंने। पाणे ची = बल की। गम पैठ = पैठ उड़ाकर। जिके = वे। कहांणां = कहलाए। बैठ = बेढ़िए बेगारी। बैठ = (पाठा०) वेठ।

जुध भागां थांभै जिको, गढ़ तजिया नहिं गत्त।
गढ़ नूं म्हे बांध्यो गलै, आवो सौ असपत्त ॥४३॥

रतन दिल्ली सूं आणियो, सूरा है समरत्थ।
प्रहियो म्हे चीतोड़ गढ़, किसूं अछेरा कत्थ ॥४४॥

समर तजण सूं सौगुणो, दुरंग तजण रो दोष।
मरद दुरंग जातां मरै, मिलै जिकां नूं मोष ॥४५॥

बारा सुखनां खीजियो, अकबर साह जलाल।
उच्चरियो हूं जीवतां, सिंहां पांडूं खाल ॥४६॥

---

(४३) जुध भागां = लड़ाई से भागकर। थांभै = थामे। गत्त = गति, भलाई, उदार। म्हे = हमने। असपत = अश्वपति, बादशाह। जुध भागा—(पाठा०) जुधबांगा = युद्ध होने पर। सौ = शत, बहुत।

(४४) आणियो = लाए। सूरा है समरत्थ = वे सूर और सामर्थवान हैं। रतन = रत्न तथा राणा रत्नसिंह। (फिरिश्ता लिखता है कि "राणाजी को अलाउद्दीन कैदकर दिल्ली ले गया था तब उनकी राणी पद्मिनी राजपूतों को साथ ले उन्हें छुड़ा लाई"।) किसूं = क्या। अछेरा = आश्चर्य्य। कत्थ = बात।

(४५) दोष = दोष। जिका नूं = जिनको। मोष = मोक्ष। समर तजणसूं = (पाठा०) समरथ जणसूं।

(४६) बारा सुखनां = बारह ही बातों से, निश्चय रूप से। खीजियो = चिढ़ गया। उच्चरियो = कहने लगा। हूं = मैं। बारा सुखना—(पाठा०) खरा बचनां = कड़ुवे वचनों से। बारां बचना भी पाठ है। इसका अर्थ है—उनकी बातों से।

पग मांडो जैमल पता, हूँ अकबर जग जीत ।
चित्रकोट में जाणियो, चित्रकोट मझ चीत ॥४७॥
पग मांडो जैमल पता, गढ मोरं नहिं दूर ।
लीधा इसा हजार गढ़, मो दादे तहमूर ॥४८॥
कर सूं ऐन दियो किलो, ऊभा पगां अभंग ।
किलो लियां विणहूं कठै, सरकूं लसकर संग ॥४९॥
बाबर नूं जीत्यो नहीं, सांगो साहां साल ।
उणरे घररा ऊमरा, मो आगे की माल ॥५०॥
लीधो इण गढ़ नूं लड़ै, संग बहादर साह ।
धकै हमाऊँ साहरै, रण तज लागो राह ॥५१॥

---

(४७) पग मांडो = ठहरे रहो । चित्रकोट = चित्तोड़ । चित्रकोट मझचित = चितोड़ में ही मेरा मन है ।

(४८) मोसूं = मेरे से । इसा = ऐसे । मो = मेरे । तहमूर = तैमूर (लंग) ।

(४९) ऐ = ये । ऊभा पगां = खड़े दम, अब तक । अभंग = निश्चय । बिण = बिना । कठै = कहाँ, कब । सरकूं = हटता हूँ । करसूं ऐन दियो किलो = (पाठा०) करसू नादीयौ किलौ ।

(५०) साहां साल = बादशाहों का साल (कांटा) । उणरे = उसके । घररा = घर के । ऊमरा = उमराव । मो = मेरे । की = क्या ।

(५१) लीधो = लिया । लड़ै = लड़ाई करके । (राणा विक्रमादित्य के समय में बहादुरशाह ने वि० सं० १५९२ में चितौड़ फतह किया था ।) धकै = मुकाबले में । हमाऊं साहरै = हुमायूँ बादशाह के (बहादुर शाह हुमायूँ बादशाह से उक्त संवत् में लड़ाई हारकर भागा था) । धकै हमाऊँ साहरै = (पाठा०) तिको धकै मो तातरे ।

लागे मो इकबाल सूं, नीसरणी गयणांग।
इण गढ़ क्यूं नहिं लागसी, खिंविया मोकर खाग ॥५२॥
चंद्रावत तज सामध्रम, विणही पड़ियां ताव।
दुरगो भागो दुरगसूं, रामपुरा रो राव ॥५३॥
प्रगट कहै जैमालपतो, अचल अचल कर अंग।
कायर रेहण कढ गयां, दीपै कनक दुरंग ॥५४॥
तो में बीस हजार भड़, गयो दुरगो इक दूर।
ताव पड़ै तोनूं किसूं, पड़ियां इक कंगूर ॥५५॥
असकंदर जो आवही, सुलेमान दल साज।
तोपी नंह सूंपा तुनै, अकबर काहू आज ॥५६॥

---

(५२) मो = मेरे। गयणांग = आकाश में। खींविया = चमकने से। मोकर खाग = मेरे हाथ में तलवार।

(५३) चंद्रावत = चंद्रवंशज। विणही = बिना। दुरगा = रामपुरे का राव (दुर्गादास चंद्रावत महाराणा की सेवा छोड़कर बादशाह के पास जाकर रहा था)।

(५४) अचल = पर्वत। अचल = निश्चल। कढ़ गया = निकल गए। दीपै = प्रकाशित होता है। रेहण = सोने का मैल।

(५५) तो में = तेरे में। हे गढ़, तेरे में २० हजार भट हैं, यदि एक दुर्गा चला गया तो क्या हुआ। ताव पड़े = कष्ट हो सकता है। तोनू किसूं = तुझे क्या। पड़ियां इक कंगूर = एक कंगूरे के पड़ने से।

(५६) असकंदर = सिकंदर। पी = भी। नंह सूंपा तुनै = नह सौंपे। काहू = क्या।

खत्रियां रा खटतीसकुल, त्रदस क्रौड़ तेतीस ।
जिके खड़ा तै जावते, अकबर किसूं करीस ॥५७॥
दिल्ली गयो अलावदी, कैदी करै रतन्न ।
राजपूतां ही राखियो, जदतो करै जतन्न ॥५८॥
भीलन कूं न भलावियो, नहिं मेरां मींणाह ।
तोनूं राण भलावियो, सोहड़ां सुकलणियांह ॥५६॥
पण लीधौ जैमलपते, मरसा बांधे मोड़ ।
सिरसाजे सूंपां नहीं, चकता नूं चीतोड़ ॥६०॥
पतो माल गढ़ पुरुषरा, वणिया भुज वरियाम ।
दांतूसल गढ दुरदरा, नेक उबारण नाम ॥६१॥

---

(५७) खत्रियां = क्षत्रियों के । खटतीस = छत्तीस । त्रदस = देवता । किसूं = क्या । करीस = करेगा ।

(५८) अलावदी = अलाउद्दीन खिलजी । रतन्न = राणा रत्नसिंह । जदतो = जब भी ।

(५६) भलावियो = सौंपा है । मेरा = मीणों की जाति है । सोहड़ा = सुभटों को । सुकलणियांह = अच्छे लक्षण वा कुलवाले । सुकलणियांह = (पाठा०) सुकुलीणांह ।

(६०) पण = प्रण । मरसां = मरेंगे । सिरसाजे = सिर रहते हुए, जीते हुए । चकता नूं = मुगलों को । मोड = सेहरा, मुकुट ।

(६१) पत्ता और जयमल गढ़रूपी पुरुष के दोनों भुजदंड, गढ़ रूपी हस्ती के दोनों दांत बचाने को बन गए। माल = जैमल । वरियाम = उत्तम । दांतूसल = दांत । दुरद = (द्विरद) हाथी ।

मारू परधर मारका, ठहरे समहर ठौड़ ।
ऊखाणों उजवालियो, चढ़ जयमल चीतोड़ ॥६२॥
पाधर अकबर सूं पतो, बिढ़े इसो वरियाम ।
सो गाजै चीतोड़ सिर, की इचरज रो काम ॥६३॥
ओ पातल सीसोदियो, ओ जयमल कमधज्ज ।
एक सूर घर कज्ज है, एक सूर पर कज्ज ॥६४॥
तोड़ जोड़ ततबीर में, कसर न राखे काय ।
आप अकबर ओलियो, गढ़वो लियो न जाय ॥६५॥

बड़ा दोहा

रोपी अकबर राड़, कोट झड़ै नंह कांगरे ।
पटके हाथल सीह पण, बादल व्है नह विगाड ॥६६॥

---

(६२) मारु = मारवाड़ी । परधर = पराई धरती के । मारका = मारनेवाला । उजवालियो = प्रत्यक्ष कर दिखाया, उज्ज्वल कर दिया । समहर = समर, युद्ध । ठौड़ = स्थान । ऊखाणो = कहावत ।

मारवाड़ी पराई धरती में मारनेवाले हैं और संग्राम में ठहरते हैं, यह कहावत जयमळ ने चित्तौड़ पर लड़ाई करके प्रत्यक्ष कर दिखाई ।

(६३) पाधर = सीधा । विढ़े = लड़े । इसो = ऐसा । वरियाम = श्रेष्ठ । की = क्या । इचरज = आश्चर्य ।

(६४) ओ = वह । पातल = पत्ता चंडावत । कमधज्ज = राठौड़ । घरकज्ज = घर के काम । परकज्ज = पराए काम ।

(६५) ततबीर = तद्बीर । ओलियो = सिद्ध ।

(६६) रोपी = ठानी । राड़ = लड़ाई । हाथल = पंजा । सीह = सिंह । पण = परंतु । व्है = होते हैं । विगाड़ = नुकसान ।

राणारा धिन रावतां, गाढ़ां आदर गाढ़ ।
पायो अकबर पानड़ैं, चित्र कोट जल चाढ़ ॥६७॥
कोट विणायो मोरियाँ, साह हमाऊं नंद ।
तोड़ करे नहि टूटही, वीर मदत जग वंद ॥६८॥
जो होता रछपाल जग, यां सुहड़ां रा थाट ।
पांख गिरां गिरवाणपत, किण विध सकतो काट ॥६९॥
गुण भूषण भुरजाल रो, जस मै दुत जागंत ।
बांकीदास बणावियो, बांचे नर बुधवंत ॥७०॥

---

(६७) धिन = धन्य । आदर गाढ़ = बहुत आदर है । रावता = उमराव । पानड़ैं = पत्ते में । चित्तौड़ पर चढ़ाके अकबर को पत्ते में जल पिलाया अर्थात् खूब छकाया, तंग किया ।

(६८) कोट = गढ़ । विणायो = बनाया । मोरिया = मौर्य राजपूत (चित्रांगद) । साह हमाऊँ नंद = अकबर बादशाह । मदत = सहायता ।

(६९) रछपाल = (रक्षपाल) रक्षा करनेवाले । सुहड़ा = सुभटों । थाट = समूह । पांख गिरा = पर्वतों के पंख, पहाड़ों के पर (ऐसी कथा है) । गिरवाणपत = इंद्र । किण बिध = किस प्रकार ।

(७०) भुरजाल रे = गढ़ की । दुत = कांति । जस = यश ।

(१०) अथ गंगालहरी लिख्यते

दोहा

श्रीपत चरण सरोज रो, गंगाजल मकरंद ।
अलियल ज्यूंकर पान अब, अधिकांवण आणंद ॥ १ ॥
पतित न्हाय ह्वै पीतपट, दिपै निकट रिषदेव ।
नचे मुगत नटनार ज्यूं, श्रीगंगा तट सेव ॥ २ ॥
हंस मीन कूरम हुवो, श्रीभरतार समत्थ ।
सरित हुवो द्रव होय सो, किसू अछेरा कत्थ ॥ ३ ॥
उदर भरे पीधो उदक, मंदाकणी मझार ।
तिकां उदर त्रिभुअण तणों, भरणलियां भुजभार ॥ ४ ॥

---

(१) श्रीपत = लक्ष्मीपति अर्थात् विष्णु । चरण सरोज = चरण कमल । रो = का । मकरंद = फूलों का रस, पराग । अलियल = भ्रमर । अधिकांवण = बढ़ाने को ।

(२) पतित = पापी । न्हाय = स्नान करके । ह्वै = होता है । पीतपट = पवित्र, पीताम्बर । रिषदेव = शिव । नचे = नाचती है । मुगत = मुक्ति । नटनार = नट की स्त्री ।

(३) कूरम = कछवा । श्री-भरतार = विष्णु । समत्थ = समर्थवान् । सरित = नदी । द्रव = पतला । सो = वही । किसू = कैसा । अछेरा = आश्चर्य । कत्थ = कहावत, कथा ।

(४) पीधो = पिया । उदक = जल । मंदाकणी = (मंदाकिनी) गगा । तिकां = उन्होंने, उनके । त्रिभुअण = त्रिभुवन, तीनों भुवन । तणों = का ।

अत सीतल उतराद सूं, ऐथ बह्योड़ो आय ।
जल सुरसरि अघ जालतो, करे विलंबन काय ॥ ५ ॥
गंगा जिण थानक गई, सुंणियो तीरथ सोय ।
तीरथ होय न गंग बिण, गुल बिन चोथ न होय ॥ ६ ॥
अधम! न जा तीरथ•अवर, तु जा सुरसरी तीर ।
दीरघ लहसी तीन द्रग, सुजल पखाल सरीर ॥ ७ ॥
बनचर गण लीधां बहे, भागीरथ रे राह ।
ओसीता भरतार सम, भागीरथी प्रवाह ॥ ८ ॥

---

(५) उतराद्=उत्तर दिशा । ऐथ=इधर । बह्योड़ो=बहता हुआ । सुरसरि=गंगा । अघ=पाप । जालतो=जलाता । काय =कुछ भी ।

(६) थानक=स्थान । सोय=वही । बिण=बिना । गुल बिन चोथ न होय=यह लोकोक्ति है, (गुल [गुड़] के बिना चौथ नहीं होती है क्योंकि चौथ के अंत को स्त्रियाँ गुलगुले आदि करके चौथ का पूजन करती हैं)। अर्थात् मुख्य पदार्थ या मनुष्य के बिना कार्य्य नहीं चलता है ।

(७) अवर=दूसरे । तु जा=तू जा । दीरघ=चिर काल । लहसी=प्राप्त करेगा । तीन द्रग=त्रिनेत्र अर्थात् शिव (शिवलोक) । सुजल=अच्छे जल से । पखाल=प्रक्षालन कर ।

(८) लीधां=लिए हुए । बहे=चलते हैं । भागीरथ= वह राजा जो गंगा को मृत्युलोक में लाया, इसी से इसका नाम भागीरथी पड़ा । पुराण में कथा है कि स्वर्ग से उतरकर गंगा ने भगीरथ से कहा कि तू मेरे आगे आगे चलकर उस स्थान का मार्ग बता, जहाँ तेरे पुरुषा कपिल मुनि के कोप से जलकर भस्म हुए हैं । प्रवाह=वेग ।

जग में सयल समत्थ जल, प्रगट निवारण पंक ।
पातक हरण समत्थ ओ, श्रीगंगाजल बंक ॥ ९ ॥

प्राणी तूं डूबो पुरवत, मोहनदी रे मांहिं ।
देव नदी में डूबियो, नख पग हंदो नाहिं ॥१०॥

दूधां वरणां पांणियां, मंजन करसी देह ।
बांका उण दिन बरसही, दूधां हंदा मेह ॥११॥

बांको खिण नह वीसरे, तट निरमल ऊ तोय ।
आया चंगा दीहड़ा, गंगा दरसण होय ॥१२॥

सोरठा

नारायण पग नीर, मानूं किन मंदाकनी ।
सांपड़ जेथ सरीर, हरको नारायण हुए ॥१३॥

---

(९) सयल = सर्वत्र, सब । समत्थ = सामर्थ्यवान् । पंक = कीचड़ । ओ = यह । बंक = बाँकीदास ।

(१०) पुरवत = पूर्ण रूप से । मांहि = में । देव-नदी = गंगा । पग हंदो = पग का ।

(११) दूधा वरणां = दूध के समान, पवित्र । पांणियां = जल । बरस ही दूधा हंदा मेह = दूध का मेह बरसेगा—यह लोकोक्ति है—अर्थात् वह दिन आनंददायक होगा ।

(१२) खिण = क्षण । नह = नहीं । बीसरे = भूलता है । ऊ = वह । तोय = जल । चंगा = अच्छा । दीहड़ा = दिन ।

(१३) किन = क्यों नहीं । पगनीर = चरणामृत । जेथ = जिसमें । सांपड़ = स्नान ।

धर गंगाजल धार, आंणो तपकर ऊजलो ।
ओ मोटो उपगार; भागीरथ कीधो भुयण ॥१४॥

नग नायक चा नाह, विच जटजूट वसावियो ।
पावन गंग प्रवाह, पांणो तू कद परसही ॥१५॥

अत सीतल अवदात, संकर मन भावे सदा ।
बांका सांची बात, सुरसरि जल राकेस सम ॥१६॥

जल जेथे जगदीस, भाषे जग भागीरथी ।
सो ह्वै पहुमी सीस, तो जल सूं निरमल तुरत ॥१७॥

तरै न लागै ताव, ओट तुहाली आवियां ।
नदी हुई तू नाव, भव सागर भागीरथी ॥१८॥

---

(१४) धर = (धरा) पृथ्वी । धार = धारा । आंणी = लाया । ऊजलो = (उज्ज्वल) उग्र । भुयण = पृथ्वीलोक । मोटो = बड़ा ।

(१५) नग नायक = कैलाश पर्वत । चा = का । नाह = (नाथ) स्वामी अर्थात् शिव । वसावियो = धारण किया । कद = कब । परसही = स्पर्श करेगा ।

(१६) अवदात = उज्ज्वल । सुरसरि—(पाठा०) सर भर = समुद्र को भरनेवाला । राकेस = पूर्ण चंद्र ।

(१७) जेथे = जहाँ । ह्वै = होते हैं । पहुमी सीस = पृथ्वी पर । तो = तेरे ।

(१८) तरै = तिर जाते । न लागे ताव = (जम की) ताप नहीं लगती । ओट = शरण, आड़ । तुहाली = तेरी । आवियां = आने से ।

तो सुरसरी तरंग, कूंची सुरग कपाट री ।
ऐथ पखाले अंग, जग में धिन मानष जिके ॥१९॥
सुत विनता तन सोय, जास तजे जणणी जतन ।
तू राखे मझ तोय, भसम हाड़ भागीरथी ॥२०॥
ज्यां हंदा क्रत जोय, दोजग नह' बासो दियो ।
ते न्हावे तुय तोय, जोत समावे जहांनमी ॥२१॥
चाव घणों कर चेत, सांपड़ता थारे सु जल ।
सुरसुर पाप समेत, ताप मिटे जीवां तणां ॥२२॥
ज्यां थारे तट जाय, उदर भरे पीधो उदक ।
मिनष जिके फिर माय, आया नह जननी उदर ॥२३॥
धोली तो जलधार, नह न्हाया निरझर नदी ।
ग्यावे डूब गिवार, मानव कालीधार मझ ॥२४॥

---

(१९) सुरग = स्वर्ग । कपाट = द्वार । ऐथ = यहां । धिन = धन्य । मानुष = मनुष्य ।

(२०) विनता = (वनिता) स्त्री । तजे तन सोय = उस (मृतक) शरीर को छोड़ देते हैं । जणणी = (जननी) माता ।

(२१) ज्यां हंदा = जिनके । क्रत = कर्म । जोय = देखकर । दोजग = (दोजख) नरक । तुय = तेरा । तोय = जल । जोत समावे = मोक्ष हो जाता है । जहांनमी = (जाह्नवी) गंगा ।

(२२) चावघणो = अति उमंग । कर चेत = चित्त में करके । सांपड़तां = स्नान करते । सुरसुर पाप समेत = हे गंगा पापों सहित तणां = का ।

(२३) मिनख = मनुष्य । माय = अन्दर । नह = नहीं ।

(२४) धोली = सफेद । निरझर नदी = देवनदी, गंगा । ग्यावे =

मिनषा नू पयमाय, तूं पावै किण तरहरो ।
जणणी खोले जाय, पय फिर नहं पीणो पड़े ॥२५॥
भीतर धर दृढ़ भाव, तो मांझल डूबा तिके ।
दुस्तर भव दरियाव, नर तरिया निरझर नदी ॥२६॥
बहता रहै विमांण, ले तटसूं वैकुंठ लग ।
ते इम करड़ो तांण, अंतक लोक उजाड़ियो ॥२७॥
जग माझिल थारो जिते, पाणी गंग प्रवीत ।
अमरां मुख पाणी इते, गावे सह ऐ गीत ॥२८॥
तोय करमनासा तणे, नर सुभ करम नसाय ।
तोय तुम्हाले त्रिपथगा, माठा क्रम मिट जाय ॥२९॥

गए । गिंवार = बेवकूफ । कालीधार मझ = (यह लोकोक्ति है) अर्थात् उनका सर्वस्व नष्ट हो गया । मानव = मनुष्य ।

(२५) मिनषा = मनुष्य । नू = को । किंण तरहरो = किस प्रकार का । पय = दूध । खोले = गोद । (जननी का दूध फिर नहीं पीना पड़े, अर्थात् जन्म मरण के दुःख से छूट जावें ।)

(२६) भीतर = मन में । मांझल = बीच में । तिके = वे । दुस्तर = कठिन । दरियाव = समुद्र (संसार रूपी समुद्र) । तरिया = तर गए ।

(२७) बहता रहै = चलते रहैं । विमांण = विमान । लग = तक । इम = ऐसी । करड़ी तांण = दृढ़ संकल्प करके या बड़ा हठ करके । अंतक लोक = यमलोक ।

(२८) माझिल = में । थारो = तेरा । जिते = जब तक । पाणी = पानी । प्रवीत = पवित्र । अमरां = देवता । मुख पाणी = मुख पर नूर । सह = सब ।

(२९) तोय = जल । करमनासा = नदी का नाम है (पौराणिक)।

तीनों ही देवा तने, देवी आदर दीध ।
सरब सयाणां हेकमत, कहवत सांचो कीध ॥३०॥
नीर मिले तो नीर में, सायर मांहि समाय ।
नर न्हावे तो नीर में, जोत समावे जाय ॥३१॥
हंस मीन कूरम हरी, निरभर नदी निहार ।
काय व्यूह निज सगति कर, तो सेवे इकतार ॥३२॥
पाप जिता तू पलक में, सुरसरि हरण समत्थ ।
इता पाप ऊमर मही, सो कुण करण समत्थ ॥३३॥
गल मुँडमाल मसाण ग्रह, संग पिसाच समाज ।
पावन तूझ प्रभाव सूं, संभु अपावन साज ॥३४॥

तणे = का । तुआले = तेरे । त्रिपथगा = गंगा, तीनों लोकों में बहनेवाली । माठा = खोटे, बुरे ।

(३०) दीध = दिया । सरब सयांणा हेकमत = सौ सयाने एक मतवाली कहावत ।

(३१) तो = तेरे । सायर = समुद्र । जोत = मुक्ति (ज्योति) ।

(३२) कूरम = कच्छपावतार । काय व्यूह = शरीर-समूह । इकतार = अखतियार ।

भावार्थ—गंगा के दर्शनों को ही अपनी शक्ति से शरीरों को कच्छपावतार आदि कर देने का पूर्ण अखतियार है ।

(३३) जिता = जितने । पलक में = क्षण में । कुण = कौन । समत्थ = सामर्थ्यवान ।

(३४) तुझ = तेरे । अपावन साज = अपवित्र साथी ।

सिव कहाय जग सिंघरे, अंग पुजावे ओर ।
तो राखे सिर पर तिको, तज जबरो रा तोर ॥३५॥
ताप त्रषा अघहर तुरत, सुखदै है सतसंग ।
की भीसम जणणी कहां, तू जग जणणी गंग ॥३६॥
गंगा ब्रम्म कमंडली, पावनता विणपार ।
तू मोनूं तिरसावही, कै देसी दीदार ॥३७॥
जल अवगाहन जोवणों, दूर हुआ अति दीन ।
तू गंगा तो जल तणों, मो कद करसी मीन ॥३८॥
छटा अलोकिक छाय, ऊंचो लहरां ऊपड़े ।
मुगत निसेणी माय, सुखदेणी असुरां सुरां ॥३९॥
परमहंस कलहंस व्हे, लहरां माझल लीण ।
ऐसे हंस उडावही, पंजर हूंत प्रवीण ॥४०॥

---

(३५) सिव = कल्याणकारी । कहाय = कहलाते हैं । सिंघरे = संहार करते । तिको = वे भी । जबरी = जबरदस्ती । तोर = तेवर, क्रोध (चेष्टा) । जबरी रा तोर = महारुद्रता के भाव को ।

(३६) भीसम = भीष्म । जणणी = माता । की = क्या ।

(३७) ब्रम्म = ब्रह्मा । कमंडली = कमंडलु । पावनता = पवित्रता । विणपार = अपार । तिरसावही = तरसावेगी । कै = या । दीदार = दर्शन ।

(३८) अवगाहन = डुबकी लगाने से या डूबे रहने से । जीवणों = जीवन । तणो = का । मो = मुझ । कद = कब । यहाँ 'मीन' शब्द के अर्थ में संपूर्ण दोहे का अभिप्राय है ।

(३९) छटा = शोभा । ऊपड़े = उठती हैं । मुगत = मुक्ति । निसेणी = सीढ़ी ।

(४०) परमहंस = योगी । कलहंस = पक्षी विशेष । मांझल =

मंदायण तो माग, पग देतां पुरषां तणां ।
भूतल जागे भाग, अघ भागे खिण एक में ॥४१॥
देखे भव दरियाव, रची पगां सूं श्रीरमण ।
नरां अपूरब नाव, नाविक विण निरभ्भर नदी ॥४२
नदियां हंसों संग नित, हंस नहीं इण हेत ।
अधम न्हाय विध होय ए, देवी ज्यां नूं देत ॥४३॥
पावन तू हरि पाय करि, कै तो करि हरिपाय ।
है पावन श्रोमूझ हिय, मात संदेह मिटाय ॥४४॥

में। लीहा = लीन। हंस = जीवात्मा। पंजर = शरीर। हंत = से। हंस पक्षी गंगा की लहरों में मिलकर परमहंस गति को प्राप्त होते हैं और मनुष्यादि जीवों के जीव गंगास्नान कर शरीर रूपी पिंजरों से आकाश (स्वर्ग) में उड़ जाते हैं।

(४१) मंदायण = (मंदाकिनी) गंगा। माग = मार्ग। पुरखा = पितृ। भूतल = पृथ्वी। भाग = भाग्य। अघ = पाप। खिण = क्षण।

(४२) भव दरियाव = भव-सागर। श्रीरमण = विष्णु। रची = उत्पन्न की। नरां = मनुष्यों के लिये। अपूरब = (अपूर्व) अनोखी। नाविक = नाव चलानेवाला। निरभ्भर नदी = देवनदी या गंगा।

(४३) न्हाय = स्नान कर। विध = ब्रह्मा। ए = ये। देवी = गंगा माता। ज्यानूं = जिनको।

(४४) पावन = पवित्र। हरि = विष्णु। पाय = पग। करि = करके। कै = या। तो = तू। मुझ = मेरे। हिय = हृदय।

भावार्थ—हे माता ! मेरे हृदय में यह संदेह है उसे तू मिटा कि तू विष्णु के चरण से पवित्र करनेवाली हुई है अथवा तुझसे हरि के चरण पवित्र करनेवाले हैं।